असली पुराना

इन्द्रजाल

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

तान्त्रिक सिद्धियों का

भगवान शंकर जी तथा दस महाविद्याओं के
मन्त्रों से प्राप्त ज्ञान के अनुसार सच्चे प्रयोगों वाला,
प्रबल वशीकरण प्रयोगों सहित

प्रस्तुतकर्ता :
बाबा औढरनाथ तपस्वी

मूल्य : ₹ 150.00

रणधीर बुक सेल्स, हरिद्वार

समर्पण

तन्त्र के उन सच्चे प्रेमियों को
जो प्राचीन और असली खोजपूर्ण
तान्त्रिक सिद्धियों का इन्द्रजाल
सरल हिन्दी में पढ़ना चाहते हैं।

पुस्तक में दिए गए सभी प्रयोग
समाज की भलाई तथा लाभ के लिए हैं
यदि कोई दुष्ट दुष्प्रयोग करके हानि उठाता है
या बुरा करना चाहता है तो इसके लिए
वह स्वयं उत्तरदायी होगा।

-लेखक व प्रकाशक

मन्त्र-तन्त्र के उद्घोषक
एवं सर्वइच्छा फलदायी
भगवान् शंकर जी
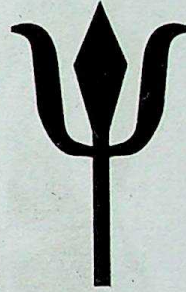
सर्वफलदायी सर्वकामना
प्रदायक सर्वतन्त्रमयी
सर्वशक्ति सम्पन्न महान्
श्री यन्त्रम्

महाकाली यन्त्र

१. श्री महाकाली

३. श्री
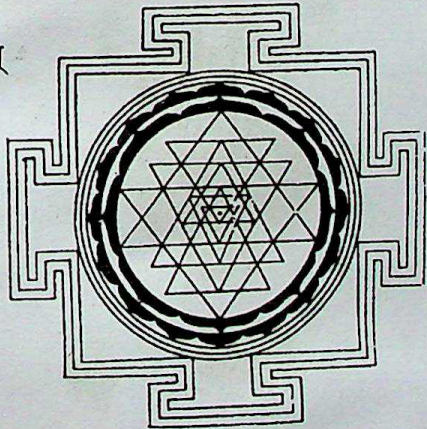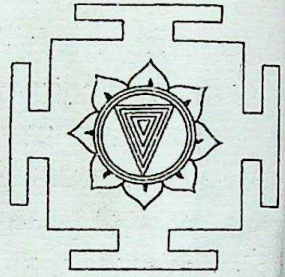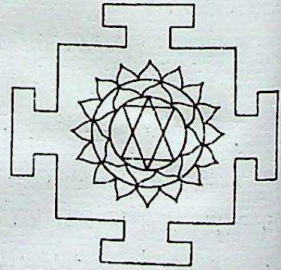
तारा यन्त्र

२ श्री तारा
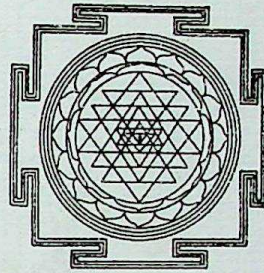
षोडशी यन्त्र

३. श्री षोडशी (ललिताम्बिका)
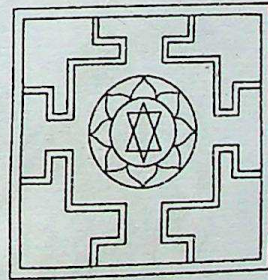
भुवनेश्वरी यन्त्र

४. श्री भुवनेश्वरी
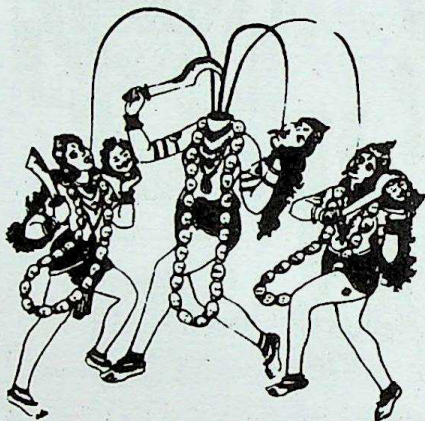
छिन्न मस्तिका यन्त्र

५. श्री छिन्न मस्तिका
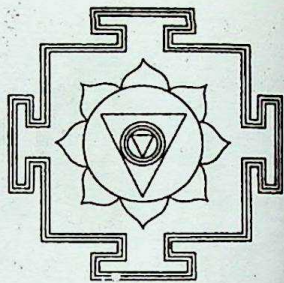
त्रिपुर भैरवी यन्त्र

६. श्री त्रिपुर भैरवी
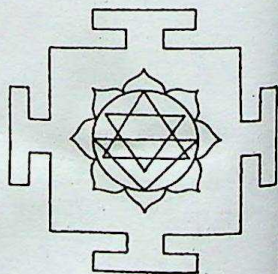
यन्त्र

७. श्री धूमावती
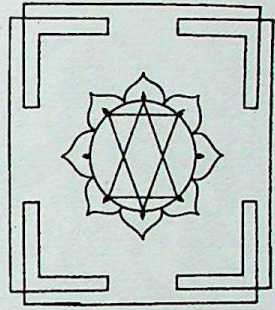
धूमावती यन्त्र

यन्त्र
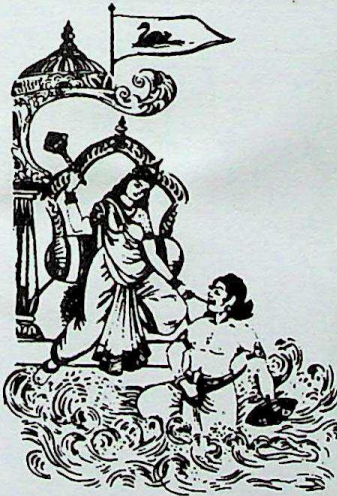
८. श्री बगलामुखी
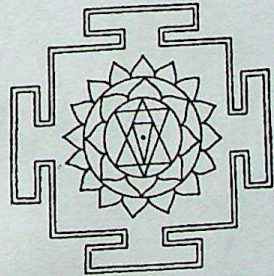
बगलामुखी यन्त्र

९. श्री मातंगी

मातंगी यन्त्र

कमला यन्त्र

१०. श्री कमला

विषय-सूची

तान्त्रिक सिद्धियों का

इन्द्रजाल

अपराजिता

भारत को केवल एक देश या देश की धरती के रूप में ही नहीं, बल्कि स्वर्ग भूमि के रूप में भी जाना-माना जाता है। भारत की भूमि को ही केवल यह विशेपता प्राप्त हुई कि आध्यात्म का जन्म, पालन तथा पूर्णता केवल यहीं पर हुई है और आप जानते हैं कि आध्यात्म का तथा स्वर्ग का परस्पर कितना अटूट सम्बंध है।

भारत की धरती में ही केवल स्वर्ग भूमि वाली विशेषताएं प्रबलता से पाई जाती हैं इसी कारण भारत की स्वर्गीय भूमि पर विभिन्न भाँति की चमत्कारिक जड़ी-बूटियाँ भी पाई जाती हैं।

यह एक लता जातीय बूटी है जो कि वन-उपवनों में विभिन्न वृक्षों या तारों के सहारे ऊर्ध्वगामी होकर सदा हरी-भरी रहती है। यह लता भारत के समस्त भागों में बहुलता से पाई जाती है और इसकी विशेष उपयोगिता बंगाल में दुर्गा देवी तथा काली देवी की पूजा के अवसर पर स्पष्ट दर्शित होती है।

भारत के विशेष पर्व नवरात्र के शुभ अवसर पर गोपनीय पूजा में नौ वृक्षों की टहनियों की पूजा की जाती है। इन नौ वृक्षों में एक अपराजिता भी है।

अपराजिता के ऊपर बहुत ही सौन्दर्यमयी पुष्प अधिकांश खिले रहते हैं, अतः इसे पुष्प प्रेमी अपने घरों के आँगन या दरवाजों पर चढ़ा लेते हैं। गर्मी के केवल कुछ दिवस व्यय करके शेष पूरे वर्ष भर यह लता पुष्पों से शृंगार किए रहती है।

अपराजिता पुष्प भेद के कारण दो प्रकार की होती है, (१) नीले पुष्प वाली तथा (२) श्वेत पुष्प वाली।

नीले पुष्प वाली लता को 'कृष्ण कान्ता' और श्वेत पुष्प वाली लता को 'विष्णु कान्ता' कहते हैं। मुख्यतया दोनों को ही अपराजिता कहा जाता है।

इसके पत्ते बनमूँग की भाँति आकार में कुछ बड़े होते हैं। प्रत्येक शाखा से निकलने वाली प्रत्येक सींक पर पाँच या सात पत्ते दिखाई देते हैं।

अपराजिता का पुष्प सीप की भाँति आगे की तरफ गोलाकार होते हुए पीछे की तरफ संकुचित होता चला जाता है। पुष्प के मध्य में एक और पुष्प होता है जो कि स्त्री की योनि की भाँति होता है। सम्भवतः इसी कारण शास्त्रों इसे भग पुष्पी तथा योनि पुष्पा का नाम दिया गया है। नीले फूल वाली भग पुष्पा के भी दो भेद हैं जो कि ऊपर वर्णित के अलावा केवल इकहरा पुष्प ही होता है।

इसकी जड़ धारण करने से भूत-प्रेतादि की समस्या का निवारण होकर समस्त ग्रह दोष समाप्त हो जाते हैं।

इसके प्रयोग निम्नलिखित हैं :—

सुगम प्रसव

प्रसव के समय कष्ट से तड़पती या मरणासन्न हुई गर्भवती स्त्री की कटि में श्वेत अपराजिता की लता लाकर लपेट देने से कष्ट का समापन हो जाता है और प्रसव में सुगमता हो जाती है।

बृश्चिक दंश

जब बिच्छू काट ले तो दंशित स्थल पर ऊपर से नीचे की तरफ श्वेत अपराजिता की जड़ को रगड़ें और उसी तरफ वाले

हाथ में इसकी जड़ दबवा द तो पाँच मिनट में ही विष उतर जाता है।

भूत बाधा

कृष्ण कान्ता की जड़ को नीले कपड़े में लपेट कर शनीवार वाले दिन रोगी के कण्ठ में पहना दें तो लाभ होता है। इसके साथ ही इसके पत्ते और नीम के पत्तों की धूप दी जाये या इनका रस निकाल कर एकसार करके नाक में टपका देने से आश्चर्य-मयी लाभ प्राप्त होता है।

गर्भ धारण

प्राय: किसी न किसी कारण से यौवनमयी कामनियाँ चाहते हुए भी गर्भ धारण नहीं कर पातीं जिस कारण उनकी मानहानि अत्यधिक होती है। कभी-कभी तो इन्हें बाँझ मान कर श्रीमान जी की दूसरी शादी कर दी जाती है। ऐसी स्त्रीयाँ नीली अपराजिता की जड़ को काली बकरी के शुद्ध दुग्ध में पीस कर के मासिक रजोस्राव की समाप्ति पर स्नान के पश्चात् पी लें और सारे दिन भगवान कृष्ण को बाल रूप में पूजा करते [illegible] व्रत रखें और रात्रि को गर्भ धारण के हेतु पति के साथ सह [illegible] तो गर्भ की स्थिति हो जाती है!

यदि ऐसा करने से लाभ न हो तो अगले मासिक [illegible] स्नान पर लगातार तीन दिन तक यह प्रयोग करती रहे तो अवश्य ही गर्भ धारण हो जाता है।

चोरों-बाघों से रक्षा

श्वेत अपराजिता को श्वेत बकरी के मूत्र के साथ घिस कर एक गोली बना लें और अपने पास रख लें। यह गोली जब तक

आपके पास रहेगी तब तक 'चोर व्याघ्रादिरक्षणम्' अर्थात् चोरों और बाघों से रक्षा होती रहेगी।

प्रबल वशीकरण

रविवार वाले दिन जब पुष्प या हस्त नक्षत्र पड़े तब इस लता पर खिले हुए समस्त पुष्पों को तोड़ कर रख लें।

यदि सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण का अवसर हो तो इसकी मूल का संग्रह कर लें।

अब कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली अष्टमी या चतुर्दशी को जब शनिवार पड़े या बुधवार पड़े तो किसी शिवालय में जाकर संग्रह की गई सामग्री को पीस कर गोली बना लें। इस गोली को छाया में ही सुखाएँ। इस प्रयोग को करते समय श्वेत वस्त्र धारण किये रहें।

इस गीली के सूखने पर सम्भाल कर रख लें और जब भी किसी से दास की भाँति कार्य करवाना हो तब इस वटी को घिस कर माथे में तिलक लगा लें तो साधारण पुरुष या स्त्री की बात ही क्या, जब प्रबल शत्रु भी हाँ जी, हाँ जो करने लगेंगे।

जब बहुत बड़ी भीड़ को मोहित करना हो तब इस वटी को ही मुख में जिह्वा के नीचे रख लेने से युद्ध भी समाप्त हो जाता है, फिर साधारण भीड़ की तो बात ही क्या कहें? □

सफेद रत्ती (गुंजा)

कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो रत्ती से परिचित न हो। यह लता जाति का वृक्ष होता है। प्रायः छोटे-छोटे पेड़ों के तनों से लिपट कर के ऊध्वमुखी होता है। यह सफेद तथा लाल दो रङ्गों में प्राप्त होता है। अनादिकाल से जोहरी लोग सोना

तथा रत्न को इससे वजन करते हैं। इसी करण इसका नाम रत्ती, पड़ा जबकि यह गुंजा के नाम से सर्व विख्यात है। वर्षा के प्रथम वारिपात के साथ ही जमीन में पड़ी हुई जड़ से अंकुर निकल पड़ते हैं! शनैः शनैः बढ़ते हुए यह अपने पूर्ण रूप को प्राप्त होती है। इसमें गुलाबी रंग के साथ सेम के पुष्पों से कुछ बड़े सेम के ही पुष्पों की भाँति पुष्प लगते हैं। इस लता की पत्तियाँ इमली के पत्तों की भाँति होती हैं। इसके ऊपर शरद-काल में पुष्प आते हैं। होली से कुछ पहले ही यह लता सूख जाती है। इसके सूख करके फटे हुए फलों से रंगीन छोटे-छोटे मोतियों की भाँति लाल रंग की तथा सफेद रंग की रत्तियाँ दृष्टि-गोचर होती हैं। बरबस ही मन करता है कि इन्हें तोड़ लिया जाय। इन दोनों में से लाल रंग की लता सर्वत्र उपलब्ध है। सफेद रंग की लता कहीं-कहीं भाग्यवश ही पाई जाती है। इसी कारण लाल रत्ती का ही प्रयोग बहुधा किया जाता है। माना जाता है कि यदि यह लाल रत्ती किसी के घर में फेंक दी जाय तो उस घर के प्राणी लड़-लड़ कर बेहाल हो जाते हैं। आपको यदि सफेद रंग की रत्ती की लता मिले तो सावधानी से कही विधियों से उसकी जड़ (मूल) प्राप्त करें। यदि सफेद रंग की न मिले तो लाल रंग से कार्य चलाएँ।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब इसकी मूल प्राप्त करें।

शुक्रवार के दिन यदि रोहिणी नक्षत्र पर ग्रहण पड़े तो भी उत्तम होगा। इस संयोग में भी इसकी मूल ले सकते हैं।

कृष्ण पक्ष अर्थात् अंधेरी रातों को जिस दिन अष्टमी तिथि पड़े और हस्त नक्षत्र का संयोग बने तो भी मूल ली जा सकती है।

कृष्ण पल की ही चौदस तिथि को स्वाति नक्षत्र हो या शतभिषा नक्षत्र हो तो आप इसकी जड का संग्रह कर सकते हैं।

उपरोक्त योगों की प्रथम रात्रि को आधी रात के समय अपने मन को भय रहित करके परिशिष्ट खण्ड में कहे तरीकों के अनुसार धूप दीप करके लता को आमन्त्रित कर आइए। इसके बाद मुँह अंधेरे ही पुनः जाकर धूप दीप करके कही गई विधि के अनुसार इसकी जड़ प्राप्त कर लें। रास्ते में किसी से न बोलें मूल को प्राप्त करते समय निर्वस्त्र रहने से अधिक लाभ होगा घर जा कर इस मूल को दूध से स्नान करावें और फिर इसके चमत्कार स्पष्ट देखें।

रत्ती के प्रयोग

१. यदि किसी को विष चढ़ गया हो तो इस जड़ को धोकर वह पानी रोगी को पिलाने से विष समाप्त हो जाता है।

२. यदि इस जड़ को चन्दन की भाँति घिस करके माथे पर लगाया जाए तो लोग आकर्षित होकर गुणगान करने लगते हैं अतः किसी भी सभा में यह विधि प्रयोजनीय है।

३. यदि इस जड़ को ताँबे के ताबीज में भर करके किसी औरत की कमर में बाँधा जाए तो वह अपने कन्त से विषय भोग करके नवें मास में पुत्र रत्न को जन्म देती है। अतः पुत्र की कामना वाले लोग इसको प्रयोग करें।

४. यदि किसी औरत के मासिक का खून लेकर चन्दन की भांति इस जड़ को उसमें रगड़ा जाए। इसके बाद इसको नेत्रों में काजल की भांति डाला जाए और शत्रु से लड़ने के लिए जाया जाए तो शत्रु और उसकी सेना आपको विकराल रूप में देखेगी और डर करके भाग जाएगी।

५. यदि इस जड़ को शुद्ध शहद के साथ रगड़ करके काजल की भांति अंजन किया जाए तो गुप्त शक्तियों के दर्शन होते हैं। (सावधान—कमजोर दिल वाले यह प्रयोग न करें।)

६. बकरी के मूत्र के साथ इसे रगड़ करके अपने हाथों पर लप कर लें तो दूर-दूर की सूझती है अर्थात् तीनों काल का ज्ञान प्राप्त होता है।

७. शुद्ध देशी घी के साथ इसे रगड़ करके पुरुष अपनी इन्द्री पर इसका लेप करे तो वीर्य स्तम्भन होता है। काम शक्ति बढ़ती है, जिस कारण मन में उत्साह पैदा होता है।

८. शुद्ध गोरोचन की स्याही बनाकर जिसका भी नाम लिया जाएगा वह तुरन्त मर जाएगा।

९. इस जड़ को गुलाब के रस के साथ घिस करके किसी शव की नाड़ी पर लेप कर दिया जाए तो वह मरा हुआ व्यक्ति चार घड़ी के लिए जीवित हो जाता है।

१०. इसी जड़ को अंकोल के तेल में घिस करके नेत्रों में लगाने से पृथ्वी में दबा हुआ धन दिखाई देता है।

११. बाघिन का दूध लाकर इस जड़ को उसमें चन्दन को तरह रगड़ करके निर्वस्त्र होकर सारे शरीर पर इसका लेप कर लें। इसके बाद वस्त्र ग्रहण करके युद्ध में जाइए। आपका बाल भी बाँका न होगा।

१२. इसी जड़ को तिल के तेल मैं घिस करके सारे शरीर पर मल लिया जाय तो देखने वाले को आप प्रबल शक्तिशाली दृष्टिगोचर होंगे अर्थात् आपको देखते ही लोग आपसे भय मान जायेंगे।

१३. इस जड़ को अलसी के तेल में घिस करके कोढ़ी के लगाया जाय तो कोढ़ ठीक हो जाता है।

१४. इसी जड़ को काजल की भाँति आंखों में डालने से केवल सात दिन के प्रयोग से ही अंधा देखने लगता है।

१५. इस जड़ को यदि गंगाजल से रगड़ करके नेत्रों में लगाया जाय तो बिन मौसम, बिन बादल बरसात होती है।

१६. लाल रत्ती की लता को किसी क्रूर दिवस वाले दिन जिसके आँगन में लगा या लगवा दिया जाए तो शीघ्र ही उस घर के निवासियों का उच्चाटन हो जाता है।

उल्लू

यह रात्रिचर पक्षी है और प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। कोई बिरला ही होगा जो इसे न जानता हो। तन्त्रों में इसके अनेकों प्रयोग होते हैं जो कि आगामी पृष्ठों पर कहे गए हैं। यहाँ पर उल्लू साधन की एक अत्यन्त गुप्त क्रिया प्रस्तुत कर रहा हूँ और निवेदन यही करता हूँ कि इस प्रयोग को स्वयं तक ही सीमित रखें।

उल्लू साधन (वशीकरण के लिए)

सबसे पहले किसी शुभ समय, अच्छा होगा यदि ग्रहण काल हो तो नीचे दिया मन्त्र सावधानी के साथ एक सौ आठ बार जप लें। इस भाँति यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

मन्त्र—'ॐ नमो भगवते रुद्राय।'

इस मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद कहीं पर किसी वृक्ष से उल्लू पकड़ें। उल्लू को पकड़ते समय उपरोक्त मन्त्र जपते रहें। इसी मन्त्र को जपते हुए उल्लू को अपने घर ले जाएँ। एकान्त स्थान पर बैठ करके इस उल्लू का पंचोपचार से पूजन करें। इस पूजन के पश्चात् उल्लू के पंखों पर हाथ रख करके उपरोक्त मन्त्र का २१ बार जप करें। इसके बाद उल्लू के माथे पर हाथ रख करके पुनः इक्कीस बार उपरोक्त मन्त्र का जप करें। यदि

आपको उल्लू पर हाथ रखने में असुविधा हो तो बार-बार मन्त्र पढ़ करके कहे गए अंगों पर फूँक मारते रहें। स्मरण यही रखना है कि हाथ रखें या फूँक मारें; मन्त्र का जाप एक अंग के लिए केवल इक्कीस बार ही किया जायेगा।

अब उल्लू के सामने ही नीचे दिया गया मन्त्र इक्कीस बार पढ़ें।

मन्त्र—ॐ कुरु कुरु महेश्वरी अन्नवर्द्धिनी प्रियेश्वरी नमः ॥

इसके बाद अक्षत लेकर इन्हें भी इसी मन्त्र के द्वारा इक्कीस बार ताड़न करें। इसके वाद उल्लू को भोजन देना होगा। यह भोजन भी विशेष ही होगा। अतः नीचे लिखी सामग्री एकत्र करके उल्लू को खिला दें।

भोज्य सामग्री—नरास्थि का चूर्ण, प्रेत मस्तक का तन्तु, मृतक पुरुष का ताम्बूल लेकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को तण्डुल, पेय तथा माँस में मिला करके उल्लू को खिला दें।

शराब में जल मिला करके उल्लू के बाएँ पंख को तोड़ करके अपने हाथ में लें तथा नीचे दिया मंत्र जपते हुए उस पंख की पूजा करें और उल्लू को छोड़ दें।

मन्त्र—ॐ उल्लूकाये नमः ॥

अब आप वशीकरण प्रयोग कर सकते हैं।

इस पंख को चूर-चूर करके रख लें। यह वशीकरण के लिए उत्तम सामग्री है और इसकी काट कोई भी नहीं है। इस पंख के चूरे को किसी भी खाने-पीने वाली वस्तु में मिला करके जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिला दें।

उल्लू सिद्धि

अब आप अपनी आवश्यकता के अनुसार पुनः पहले वाला सिद्ध मन्त्र जपते हुए कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पुनः कोई उल्लू

पकड़ कर ले आवें। इसे पकड़ कर एकान्त स्थान में बैठें। कांसे के पात्र में उल्लू को रख दें। पहले वाले मन्त्र का जप करते हुए इस उल्लू की चार परिक्रमाएं लगाएं अर्थात् इस उल्लू के चारों तरफ गोलाई से चार चक्कर लगाएं। इसके बाद दाहिने हाथ से सावधान होकर उल्लू को पुनः उठा लें। इस प्रकार करने से उल्लू सिद्ध हो जाता है। पुनः इसे कांसे के पात्र में रख दें तथा इसकी पूजा करें।

आप जब कांसे के पात्र में उल्लू को स्थापित करके पूजन करेंगे तो उसके नैनों से आँसू गिरेंगे। इन आँसुओं को एकत्र कर लें।

अब गोरोचन लाएं। इसे गाय के घी में मिला करके आँसुओं में डाल दें। इसे अच्छी तरह मिलाने के लिए अंगुली से मथें। इस भाँति एक नायाब तांत्रिक वस्तु का निर्माण हो जाता है। इसका प्रयोग अदृश्य होने के लिए किया जा सकता है। आप जब भी अदृश्य होना चाहते हों तो इस सामग्री को आँखों में काजल की भाँति लगाएं। ऐसा करते ही आप अदृश्य हो जाएंगे। आप सभी को देख सकते हैं परन्तु आपको कोई भी नहीं देख पायेगा। जब आप अदृश्य शक्ति से बाहर आना चाहें अर्थात् जब आप चाहें कि लोग आपको देख सकें तो गाय का ताजा मूत्र ले करके अपनी आँखें धो लेवें। इस भाँति पुनः आप दिखाई देने लग जाएंगे।

उल्लू साधन के अन्य लाभ

जिस उल्लू को सिद्ध किया गया था उसी का खून ले करके अपनी अनामिका अंगुली से भी रक्त निकाल करके दोनों रक्तों को एकत्र कर लें। यह एक सर्वश्रेष्ठ वशीकरण सामग्री बन जाती है।

१—जब भी आपको किसी राजा या अधिकारी से मनचाहा कार्य कराना हो तो इस रक्त का टीका अपने माथे में लगाकर के उनके पास जाइए। निश्चित सफलता मिलेगी।

२—इसी खून को शुद्ध शहद के साथ मिला करके आँखों में काजल की भाँति लगा लें। ऐसा करने से आकाश मण्डल में देवताओं को विचरण करते हुए तथा देवताओं के यानों को उड़ते हुए स्पष्ट ही देख सकेंगे।

३—इसी उल्लू के कपाल को सुखा लें। जब यह अच्छी भांति सूख जाए तो इसका सूक्ष्म चूर्ण कर लें। यह चूर्ण मारण तथा उच्चाटन के लिए सर्वदा सिद्ध रहा है। आप जिस शत्रु से परेशान हैं। शत्रु मानता ही न हो तो इस चूर्ण को शत्रु के घर में फेंक दें। इस क्रिया के प्रभाव से एक हफ्ते के भीतर आपका शत्रु दुःखी हो करके कहीं भाग जायेगा या अपने कुटुम्ब के साथ ही सदा सर्वदा के लिए नष्ट हो जाएगा।

४—उल्लू का सिर मैनसिल तथा हरताल को एकत्र करके कूट-कूट करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की चुटकी जिस पर भी मारी जाएगी, वह नष्ट हो जाएगा। ध्यान यह रखना है कि उपरोक्त तीनों वस्तुएँ वजन में समान मात्रा की हों।

५—उल्लू का सिर, मनुष्य का रक्त, श्रोतांजन, अन्तर धूम को संग्रह करके मिला लें, यह सब चूर्ण करना होगा। इस चूर्ण को आँखों में काजल की भाँति लगाने से धरती के भीतर छुपे खजाने दिखाई देते हैं।

६—उल्लू की जीभ को धतूरे के रस में पीस करके जिसे भी खिला दी जाएगी, उसका विद्वेषण हो जाएगा। कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही उच्चाटित हो करके कहीं भाग जाएगा।

७—उल्लू की जीभ वराङ्ग का चूर्ण, मालती के फूल मिला

करके चूर्ण कर ल। इस चूर्ण में गोरोचन मिला करके एक गोली सी बना लें। त्रिलोह का ताबीज बना करके गोली को इसमें भर के सम्भाल कर रख लें। जब आपकी इच्छा अदृश्य होनें की हो तब इस ताबीज को मुख में धारण कर लें। ऐसा करने से आप लोगों को दिखना बन्द हो जायेंगे। जब आप इस ताबीज को मुख से निकालेंगे, तब फिर दिखने लगेंगे।

८—उल्लू की नाभि, हृदय, फेफड़ा को एकत्र करके सुखा ल और फिर सूक्ष्म चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में गोरोचन मिला करके गोली बना लें। जब आप अदृश्य होना चाहें तब इस गोली को काजल की भाँति आँखों में लगा लें। इसके प्रभाव से आप अदृश्य हो जाएंगे।

अदृश्य होने के सभी प्रयोगों के साथ यदि नीचे दिया गया मन्त्र जप लिया जाए तो अदृश्य होने में कोई संशय नहीं रहता। सबसे पहले इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करके सिद्ध कर लें।

मन्त्र— ॐ नमो कालरात्रि त्रिशूल हस्त धारिणी
महिष वाहिनी नर कपाल माल शिरे
आगच्छ आगच्छ भगवति अन्तरिक्ष
करिणी मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।।

इससे पहले कि उल्लू साधन पर आगे विवरण प्रस्तुत करू, मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि उल्लू तांत्रिक प्रयोगों में एक विशेष महत्व रखता है। इसके प्रयोग बहुत ही सरल किन्तु खतरनाक होते हैं। मन को मजबूती से पकड़ रखने वाले के लिए तो उल्लू साधन बच्चों के खेल की भाँति है। इसके प्रयोगों के मन्त्र भी एक सौ आठ बार जप करने से सिद्ध हो जाते हैं। यह विषय स्वतन्त्र है अर्थात कीलित नहीं है। अतः इन खतर

नाक प्रयोगों को करने से पहले कई बार सोच विचार कर लें। यदि यह प्रयोग आवश्यक ही लगे तो किसी की देख रेख में करें। नीचे अन्य प्रयोग बता रहा हूँ।

पाताल दर्शन

किसी सोमवार अर्थात् मंगलवार के दिन उल्लू की जीभ को गाय के घी में पका लें। जब यह जीभ अच्छी भाँति पक जाए तो एक ताँबे की ताबीज में भर करके सुरक्षित कर लें। जब आपको पाताल के दर्शन करने हों तब इस ताबीज को कण्ठ में धारण कर लें। जब तक यह ताबीज कण्ठ में रहेगा तभी तक पाताल के रहस्य दिखते रहेंगे। अतः आवश्यकता के अनुरूप ही इसका प्रयोग करें।

सर्व ज्वर नाशक

उल्लू के नेत्रों को निकाल करके उसी उल्लू के रक्त को भी निकाल लें। इस रक्त में नेत्रों को घिस लें। इससे भोज पत्र के ऊपर रोगी का नाम लिख दें। इसी भोज पत्र को काले धागे में लपेट करके रोगी के कण्ठ में धारण करवा दें। इसके प्रभाव से रोगी का सभी भाँति का ज्वर नष्ट हो जाता है।

वीर्य स्तम्भन

काम की अधिकता तथा शुक्र की क्षीणता आज अधिकता से पाई जा रही है, जिसके कारण युवती का शरीर शीघ्र टूट जाता है वह बुझी-बुझी रहती है रोग बढ़ जाने पर हिस्टीरिया आदि हो जाता है। इन रोगों से बचने के लिए पुरुष को अपने शुक्र को शक्तिकृत करना चाहिए। इस विषय में यह प्रयोग प्रभावशाली है। इसके प्रयोग से वीर्य स्तम्भित रहेगा। जिसके कारण अधिक समय तक भोग होने पर स्त्री संतुष्ट होगी।

पाताल दर्शन की भाँति ही यह प्रयोग कर। जब जीभ घी में अच्छी भाँति भुन जाए तो त्रिलोह के ताबीज में इस जीभ को भर करके रख लें। मंगलवार के दिन इस ताबीज को आदमी अपनी कमर में बाँध लें। इसके प्रभाव से मैथुन में तेजी आती है। वीर्य शीघ्र नहीं गिरता। यदि यह ताबीज बँधा ही रहे तो एक की क्या दस-दस स्त्रियाँ भी संतुष्ट हो जाती हैं।

पूर्वजन्म का परिचय

तन्त्र में उल्लू साधन एक विस्तृत तथा गोपनीय साधन है। जिसे कि प्रथम बार ही खुल कर स्पष्ट कहा जा रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति का पूर्व जन्म होता है। इसे जान करके कोई लाभ नहीं होता, परन्तु मेरी समझ से यदि पूर्व जन्म का पता चल जाए तो एक लाभ अवश्य ही होता है। यदि आपको पूर्व जन्म की साधना तथा इष्ट का पता चल जाए तो आप इस जन्म में उसके द्वारा शीघ्र ही लाभ उठा सकते हैं। आगे जैसी आपकी इच्छा हो, कर सकते हैं।

पूर्व जन्म का विवरण जानने के लिए रविवार या गुरुवार के दिन पुण्य नक्षत्र हो तब उल्लू के नेत्र ले करके श्रोतांजन में मिला करके नीचे दिए गए मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके अपनी आँखों में काजल की भाँति लगाएँगे तो ये पूर्व जन्म का पूर्ण विवरण स्मरण हो जाएगा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय, ॐ लमहे हुलु
हुलु बिहुलं बिहुलं हर हरं पलरक्ष
पूजतेयं कुमार्यो तु लोचने स्वाहा॥

मोहिनी प्रयोग

१—चार मासे उल्लू का रक्त लेकर काली गाय के पाँच सेर

दूध में अच्छी भाँति मिला करके दूध से घी बनावें। चौदस वाले दिन यह घी जिस पुरुष या स्त्री को लगा दिया जाएगा वही पीछे-पीछे घर आकर आज्ञा का गुलाम बनता है।

२—उल्लू की आँख निकाल करके गाय का दूध ल और चन्दन की भाँति दूध में आँख को घिसें। इसके बाद आँख का मलीदा बनने पर गोली सी बना करके सुखा लें। यह गोली मुख में धारण करने से राजा का भी वशीकरण होता है।

३—उल्लू का पंजा पानी में घिस करके जिसे भी पिला देंगे वह जिन्दगी भर जी हजूरी करता रहता है।

४—मीठा तेल लेकर उसमें उल्लू की हड्डी डालकर पीसें। पीसने के बाद एक हंडिया में डाल करके पृथ्वी में दबा दें। यह चालीस दिन तक दबी रहेगी। इस हंडिया को दबा कर प्रति दिवस आधी रात को इसके ऊपर काला आसन बिछा करके एक सौ आठ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ा करें।

मन्त्र—ॐ ह्लौं ह्लौं ह्लँ ह्लँ ह्लृ फट् आग्रशिनीं क्लीं स्वाहा।

इन्हीं चालीस दिनों के मध्य किसी काले रंग की वेश्या के यहाँ आग लगने पर उसके मुख्य द्वार का कोयला या उसका कोई भी वस्त्र लाकर काजल बनावें। यह काजल लगाकर जिसे देखोगे वही वशीभूत हो जाएगा। □

चितावर

प्राचीन समय से ही ऋषि गणों ने अपने अनथक प्रयास से प्रायः सभी वृक्षों के विज्ञान को समझा तथा उनका प्रयोग करते चले आ रहे हैं लेकिन यह दुर्भाग्य की ही बात है कि चितावर के विषय में कोई भी विशेष परिचय प्राप्त नहीं होता। अतः कहा जाता है कि चितावर विषय पर विवरण न प्राप्त होने से प्रायः

कोई भी मनुष्य इससे परिचित नहीं है। जबकि तांत्रिक प्रयो
में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

यह मान लेने में कोई भी शर्म की बात नहीं है कि इस वृक्ष
या इसके विषय में प्राय: कोई भी विशेष नहीं जानता, हो सकता
है कि प्राचीन समय में इसका परिचय मिला हो और इसकी
भयानकता को देखते हुए इसे अंधेरे में रहने को छोड़ दिया गया
हो। वास्तव में यह वृक्ष बहुत खतरनाक है। तांत्रिकों को तथा
तन्त्र में रुचि लेने वालों को इसकी प्राप्ति के लिए इच्छा जागती
ही रहती है। इसे प्राप्त करने का सबसे सरल तथा सीधा सा
एक ही तरीका है जो कि नीचे दिया गया है।

आप एक घोंसला तलाश करें जो कि पहाड़ी कौवे का हो।
इसमें ध्यान यही रखना है कि पहाड़ी कौवे के अलावा दूसरा
कौवा लाभप्रद नहीं रहता। इस घोंसले में कौवे के कम से कम
दो बच्चे तो होने ही चाहिएँ। जब आप इस अभियान को पूर्ण
कर लें, तब आप दूसरा अभियान प्रारम्भ करें।

साइकिल के पहिए में जो तारें (स्पोक) लगी होती हैं उन्हें
प्राप्त करें। प्लास कटर की सहायता से एक-एक इंच के टुकड़े
कर लें। अब आप नोज प्लायर की सहायता से प्रत्येक टुकड़े को
जंजीर की भाँति गोल करके एक दूसरे के बीच फँसाते हुए एक
फुट के लगभग लम्बी चेन बना लें। इस भाँति आपका दूसरा
अभियान पूर्ण हो जाता है।

अब तीसरे अभियान के लिए कोयले दहका कर लाल कर
ल। जब यह कोयले अच्छी भाँति दहकने लगें तो आप बनाई
गई जंजीर को इन पर डाल दें। कुछ ही क्षणों में जंजीर लाल
हो जाएगी। जब आपकी जंजीर लाल हो जाए तब किसी
सडांसी या प्लास की सहायता से जंजीर को उठा करके मोबिल

आयल में डुबा दें। ठंडी होने पर जंजीर निकाल करके सम्भाल लें।

अब आपका चौथा अभियान प्रारम्भ होता है। इस जंजीर को तथा थोड़ी सी मोटी तार लेकर मुख्य कार्य के लिए प्रस्थान करें। आपको उसी घोंसले तक आना है। यदि आप वृक्ष पर चढ़ना जानते हों तो स्वयं चढ़ें अन्यथा किसी के द्वारा यह प्रयोग करावें, परन्तु स्मरण रखें कि गोपनीयता अनिवार्य है।

कौवे के घोंसले में दोनों बच्चों को एकत्र करके जंजीर से इस भाँति बाँधें कि बच्चे स्वयं मुक्त न हो सकें। यदि आप चाहें तो जंजीर बड़ी भी बना सकते हैं। बच्चों को बाँधने के बाद जंजीर से तार लपेट करके वृक्ष के तने में लपेट दें। आपके इस कार्य से बच्चे चिल्लाना शुरू कर देगे। इस भाँति आपका यह अभियान भी पूर्ण हो जाता है और इसके साथ ही अगला अभियान कौवे के द्वारा पूर्ण होता है।

बच्चों की चिल्लाहट सुन करके या अपने समय पर बच्चों को भोजन देने के लिए कौवा वापस आता है तो अपने बच्चों की दयनीय स्थिति को देखकर जंजीर तोड़ने का, खोलने का प्रयास करता है, जब वह जंजीर को तोड़ या खोल नहीं पाता तब वह वायु मण्डल में उड़ जाता है। आपको इन्तजार करना होगा। यह कह पाना असम्भव है कि कौवा दस मिनट में आएगा या दस घण्टे में परन्तु आएगा तो अवश्य ही। यही कहा जा सकता है।

जब कौवा आवेगा तब उसकी चोंच में एक डण्डी दबी हुई होगी। सावधान हो जाइए क्योंकि यही चितावर की लकड़ी है। यह डण्डी यदि घोंसले तक चली गई तो आपको थोड़ी मुश्किल हो जाएगी अतः प्रयास करें कि पत्थर आदि मार करके कौवे

को गिरा ल या कौवे के मुख से वह डण्डी गिरा लें। यह सभी कार्य सावधानी तथा तीव्रता के हैं। क्योंकि कौवे के गिरते ही या डण्डी के गिरते ही, जमीन पर गिरी पड़ी अनगिनत लकड़ियों में यह चितावर मिल जाने का खतरा है अतः यदि आप में सावधानी तथा तीव्रता न हो तब कौवे को घोंसले पर जाने दीजिए।

कौवा घोंसले पर जाकर वह डण्डी जगह-जगह जंजीर के ऊपर रखेगा और जंजीर टूटती जाएगी। यह क्रिया तब तक कौवा करता ही रहेगा, तब तक कि बच्चे आजाद न हो जाएं। बच्चों के आजाद होने पर यदि बच्चे उड़ सकते होंगे तो कौवा बच्चों को लेकर उड़ जाएगा। यदि बच्चों के पंख छोटे होंगे या पंख होंगे ही नहीं तो बच्चे वहीं रहेंगे। आप अब सावधान हो जाएँ। शीघ्रता आपको हानि दे सकती है क्योंकि कौवा आस-पास ही रहेगा। आप घोंसले को दृष्टि से ओझल न होने दें। कुछ समय के बाद आप आखिरी अभियान पूर्ण करके चितावर की लकड़ी प्राप्त कर सकते हैं।

आप वृक्ष पर चढ़ें। आपको जंजीर के टुकड़े-टुकड़े हुए मिलेंगे जबकि आपने जंजीर को टैम्पर कर दिया था। अब आप घोंसले के भीतर बिखरी हुई डण्डियों को बटोर लें। घोंसले में एक-दूसरे से उलझी हुई डण्डियां तो घोंसले का ही हिस्सा हैं। घोंसले के भीतर आपको बिखरी हुई डण्डियाँ नहीं मिलेंगी बल्कि एक-दो डण्डियाँ मिलेंगी वह उठा लें। यदि आपकी समझ में न आए तो घोंसला ही उठा लें।

यदि घोंसले में एक ही डण्डी मिलती है तो वह उठा लें आपका कार्य आसान हो जाएगा। यदि ऐसा नहीं होता तो आप घोंसले को लेकर किसी तालाब के पास जाएँ। किसी नदी

के पास नहीं । क्योंकि नदी के बहाव के साथ यह लकड़ी भी बह जाएगी । तालाब के पास जाकर घोंसले की एक-एक डण्डी को धैर्य के साथ पानी में डालते जाएँ । सारे घोंसले में से कोई एक डण्डी पानी में तेजी के साथ साँप की भाँति तैरती हुई आगे बढ़ेगी । सावधानी से इसे उठा लें । यह चितावर की लकड़ी है। यह लकड़ी पानी में साँप की गति की भाँति दौड़ती है किन्तु साँप नहीं बनती । क्योंकि यह लकड़ी मायावी नहीं है । अभी तक इसे साँप बनते देखा ही नहीं गया । यदि कोई कहता है तो उसके ज्ञान को आप स्वयं परख सकते हैं । स्मरण रहे कि अपने को विद्वान प्रमाणित करने के लिए भाषणकर्ता तो अनेकों मिल जायेंगे परन्तु प्रयोगकर्ता यदा कदा ही मिल पाते हैं । यही हमारे तन्त्र शास्त्र की विडम्बना रही है । कहा बहुत, लिखा बहुत परन्तु किया कितना ? इसे भाषण कर्ता स्वयं ही जानता है ।

चितावर की लकड़ी स्वयं में ही सिद्धि समेटे हुए हैं अतः इसे कभी भी प्राप्त किया जा सकता है । इसे प्राप्त करने की विधि उपरोक्त ही रहेगी ।

यह भी देखा गया है कि यह लकड़ी लोहे को काट देती है अतः आप तालाब वाले कार्यक्रम के स्थान पर यह भी कर सकते हैं ।

किसी लोहे की प्लेट पर घोंसले की एक-एक डण्डी डाल करके तीन मिनट तक प्लेट पर रखें, फिर हटाते रहें । जिस डण्डी के डालने के तीन मिनट में ही लोहे की प्लेट कट जाए तो उसी डण्डी को चितावर की लकड़ी समझ कर संग्रह कर लें । इस भाँति आपके हाथ तन्त्र जगत की एक अनमोल वस्तु आ जाएगी ।

चितावर की लकड़ी का तांत्रिक प्रयोग केवल मारण तथा विद्वेषण कार्य के लिए सफलता से किया जाता है।

किसी शनिवार के दिन लोहे की प्लेट पर बबूल के कांटे से कौवे के रक्त की स्याही बना करके दो मित्रों का नाम लिख लें। इसके बाद उसके ऊपर खून के कुछ छींटें मारें। धूप, दीप से उस प्लेट की पूजा करें, चितावर की लकड़ी की भी पूजा करें। इसके बाद वह चितावर की लकड़ी उन दोनों लिखे नामों के मध्य में रख दें। एक लोटे में पानी लेकर उसमें बकरे का थोड़ा सा रक्त मिला दें। लगभग तीन मिनट के बाद वह लोहे की प्लेट कट जाएगी अर्थात् वह लिखे हुए नाम अलग-अलग प्लेटों पर अलग-अलग हो जायेंगे। यह होते ही चितावर की लकड़ी को उठा करके उन प्लेटों के मध्य लोटे में भरा खूनी जल धीरे-धीरे गिराते हुए अर्घ्य दे दें। अब आप देखेंगे कि उस नाम वाले दोनों मित्र एक-दूसरे को खा जाना चाहते हैं। यह प्रयोग शीघ्र फलदायी तथा स्थायी है अतः जरा से क्रोध में आकर यह कर्म नहीं करना चाहिए। इसे खतरनाक विद्वेषण कर्म कहते हैं। संभवतः यह प्रयोग इससे पहले आपने कभी नहीं देखा होगा।

चितावर की लकड़ी से मारण कर्म भी किया जाता है। इसे काला जादू भी कह सकते हैं और इस प्रयोग को भी आप पहली बार ही देख रहे होंगे।

एक लोहे की प्लेट को पुरुषाकृति में कटवा लें। किसी सुनार से पुरुष के सभी अंग यथास्थान अंकित करवा लें। मेरी पुस्तक मन्त्र रहस्य में दिए गए प्राण प्रतिष्ठा के मन्त्र को पढ़ करके उस तस्वीर में अपने शत्रु की प्राण प्रतिष्टा कर लें। काले धड़द लेकर बकरे के रक्त से रंग लें और उस प्रतिमा के ऊपर

फला दे। अब चितादर की लकड़ी को जिस अंग पर तीन मिनट के लिए खड़ा करेंगे, वहीं छेद हो जाएगा ; इसके प्रभाव से शत्रु के उस अंग में पीड़ा होगी और धीरे-धीरे वह अंग संज्ञा शून्य होकर मृत हो जाएगा। आप जानते हैं कि हृदय जीवन का मुख्य स्थान है अतः हृदय का छेदन करने से शत्रु मर जाएगा। मेरी राय है कि यह प्रयोग आप न करें।

कुल मिला करके आप समझ गए होंगे कि इस लकड़ी के प्रयोग केवल अशोभनीय कार्यों के लिए हैं। पर हाँ ! एक बात और ! यह लकड़ी अपने मालिक की सदा रक्षा करती है। मेरा विचार है कि यह एक ऐसा पेड़ है जिस पर मृत आत्माएँ निवास करती हैं। □

हत्था जोड़ी

हमारे तन्त्र शास्त्र तथा तन्त्र का प्रयोग करने वालों के लिए एक महत्वपूर्ण वनोषधि है। यह प्रायः पंसारियों के पास, राशि के पत्थर बेचने वालों के पास तथा तांत्रिक सामान बेचने वालों के पास मिल ही जाती है। इस महत्वपूर्ण वस्तु के विषय में अभी तक सही प्रयोग शायद प्रकाश में ही नहीं आया।

हत्था जोड़ी को कर जोड़ी, हस्तजोड़ी और हस्ताजूड़ी के नाम से जाना जाता है। उर्दू में इसे 'बखूर-इ-मरियम' कहते हैं। ईरान में इसे चुबक उशनान कहते हैं तथा लेटिन में साय-क्लेमेन परसीकम कहा जाता है।

इस वनोषधि की उत्पत्ति ईरान में होती है। पिछले कुछ वर्षों से भारत में भी इसके पर्याय मिले हैं। इस वनोषधि के पत्ते हरे रंग के होते हैं तो दूसरी तरफ अर्थात् पत्ते के नीचे का हिस्सा सफेद होता है। इस सफेद हिस्से पर रोम होते हैं। इसके

ऊपर गुलाब की भाँति पुष्प आता है। कहीं-कहीं पर पुष्प नीलाहट भी पाई जाती है। इस वनोषधि की उत्पत्ति झाड़ की छाया में तथा आद्र जमीन पर होती है। इसकी जड़ गोल होती है और रंग काला होता है। इसी जड़ में हत्था जोड़ी बनती है यह निर्माण कार्य कुदरती होता है। धूर्त तांत्रिक लोग इसे पीस करके चूर्ण बना लेते हैं और अपनी दुकानदारी चलाने के लिए किसी व्यक्ति विशेष को किसी भी भांति यह चूर्ण खिला देते हैं इस चूर्ण के प्रभाव से व्यक्ति को चक्कर आने लगते हैं। ठंडा पसीना छूटता है। दौरे पड़ने लगते हैं तथा बरबस ही जंभाइयाँ आने लगती हैं। इस स्थिति को भूत लग गया कह करके ढोंगी तांत्रिक अपनी दुकानदारी चलाते हुए तन्त्र को तथा तांत्रिकों को बदनाम करते हैं।

प्रसव को सुगमता से करने के लिए हत्था जोड़ी को चन्दन की भाँति पीस करके प्रसवा की नाभि पर या पूरे पेट पर लेप दें। इसके प्रभाव से बच्चा आराम से पैदा हो जाता है।

गर्भपात करने के लिए इसे पीस कर खाने से गर्भ का बच्चा गिर जाता है परन्तु आगे की सावधानी आप देखें कि इस दवा का बाकी लक्षण आपको हिस्टीरिया की रोगणी न बना दे वैसे इस भांति के लक्षण कुछ ही दिन तक ठहर पाते हैं।

पेशाब का बन्द लग जाने पर इसे जल के साथ घिस करके बस्ति के ऊपर लगावें। पेशाब शीघ्र निष्कासित होगा।

कब्ज को दूर करने के लिए पेट के ऊपर इसका प्रलेप करना लाभदायक रहता है।

मासिक धर्म के लिए इसके चूर्ण की पोटली बना करके योनि छिद्र में रखें। इसके प्रभाव से शीघ्र ही साफ तथा शुद्ध मासिक स्राव हो जाता है।

पीलिया रोग को दूर करना विकट रहता है। इस रोग को समूल नष्ट करने के लिए हत्था जोड़ी का चूर्ण करके शहद के साथ खिला देवें। इसके बाद गर्म कपड़े औढ़ा देवें। शीघ्र ही उसे पसीना आएगा। यह पसीना अत्यधिक होगा तथा इसका रंग भी पीला होगा। इसके बाद तौलिए से बदन साफ कर दें। इस भाँति यह जटिल रोग समूल नष्ट हो जाता है।

इस सबके अलावा तन्त्र में भी इसके बेहतरीन प्रयोग होते हैं।

पारे के शिवलिंग की बड़ी महिमा है। इसे बनाने के लिए हत्था जोड़ी प्रथम आवश्यक वस्तु है। आप शुद्ध पारा लाकर खरल में डालें तथा हत्था जोड़ी का चूर्ण भी खरल में डालें। अब इन्हें एक साथ खरल करें। इस भाँति करने से पारा मर जाता है परन्तु गीला रहता है। इस गीले पारे को मनचाही शक्ल दे दें। इसके बाद इसे गलगल में रख दें। थोड़े अन्तराल से यह पारा सूख जाएगा।

हत्था जोड़ी से वशीकरण भी किया जाता है। इसे ताबीज में भर करके दाहिनी भुजा पर धारण करें। इससे प्रबल वशी-करण होता है।

हत्था जोड़ी कहने से ही यह प्रायः प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध हो जाती है। यह सस्ती ही होती है। संभवतः इसी कारण इसकी नकल नहीं बनाई गई। □

जल स्तम्भन

यदि आपका दिल करे कि जल पर चला जाय या जल में डूबने के खतरे से मुक्ति मिले तो साँप का रक्त लें, साँप का नेत्र तथा मुख लें। इन्हें एकत्र करके सुखा लें और ताबीज में धारण

कर लें। जब-जब नदी में स्नान करने जाएँ तब-तब इस ताबीज को धारण कर लें। इस ताबीज के प्रभाव के कारण आप जल में नहीं डूबेंगे।

अंगारा स्तम्भन

मैं किसी के ऊपर आक्षेप नहीं करता फिर भी आपने जलते हुए अंगारों पर चलना हो या लोट लगानी हो तो इस क्रिया से पूर्व आप उटंगण का रस निकाल कर अपने सारे बदन पर तेल की भाँति लगा लें। जब यह रस सूख जाए तो कहीं पर भी जाकर जलते हुए लाल अंगारों पर कुछ भी करिए, कैसे भी करिए। आपको अंगारों से कोई भी हानि नहीं होगी। यह क्रिया वस्त्र-विहीन होकर करें क्योंकि वस्त्रों के लिए अंगारा स्तम्भन नहीं किया गया।

सम्हालू

सम्हालू नामक यह भी एक वनस्पति ही है और प्रायः वनों में सर्वत्र पाई जाती है। इसे सिन्दुवार, निर्गुण्डी, सिद्धक, अर्थ सिद्धक, भूत केशी, इन्द्राणी आदि कहा जाता है। इसका वृक्ष झाड़ीदार होता है। इस पर तीन या पाँच पत्ते आते हैं। मुख्यतः पाँच ही पत्ते होते हैं। इसके पत्ते अरहर की भाँति सफेद रंग के रोमश होते हैं। जाड़े के अन्तिम काल में तथा बसन्त में यह वृक्ष सभी पत्ते छोड़ देता है।

इस वृक्ष के अनेकों प्रयोग किए जाते हैं।

मधुर स्वर करने के लिए इस वृक्ष की जड़ का चूर्ण करके गर्म पानी से कुछ दिन तक खाने पर स्वर किन्नरों की भाँति हो जाता है।

यदि दुबला पतला तथा कमजोर व्यक्ति इस वृक्ष की जड़ को पीस करके चूर्ण करे। इसके बाद शुद्ध घी के साथ प्रतिदिन ग्रहण करे तो शीघ्र ही व्यक्ति मोटा हो जाता है।

यदि रक्त दूषित हो गया हो तो इसकी जड़ के चूर्ण को शहद के साथ खाएँ। इसके प्रभाव से रक्त शुद्ध होकर खाज-खुजली आदि रोग समाप्त हो जाते हैं।

इस वृक्ष की जड़ के अनेकों प्रयोग हैं। इसकी जड़ का चूर्ण करके यदि बकरी के मूत्र के साथ प्रतिदिन खाया जाए तो निम्नलिखित चमत्कारी प्रभाव देखने को मिलते हैं।

सात दिन खाने से नाखून, बाल तथा दाँत सभी के सभी गिर जाते हैं और पुनः नवीन उग आते हैं।

इक्कीस दिन तक खाते रहने और ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करने पर चमत्कारी योग साधना की सिद्धि स्वयं ही प्राप्त हो जाती है। इस सिद्धि के प्रभाव से जल का तथा शस्त्र का स्तम्भन होता है अर्थात युद्ध में उसे कोई हथियार चोट नहीं पहुँचाता तथा जल में उतरने पर जल में डूबता भी नहीं है।

चालीस दिन तक निरन्तर इसका सेवन करने तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने मात्र से ही आकाश मार्ग में उड़ने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।

इस वनोषधि की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इस वृक्ष की जड़ को धारण करने मात्र से तथा घर में रखने मात्र से ही सभी भाँति से सुख शान्ति बनी रहती है। तन्त्र के लिए सम्हालू की जड़ का यह एक विशेष योगदान है। मेरी समझ के अनुसार इसका प्रयोग हानि रहित है अतः इसे प्रयोग करके लाभ उठाना ही चाहिए। □

नागदौन

यह एक सजावटी पौधा है। इसे प्रायः घरों में, सजावट के हेतु लगाया जाता है। इसके गुणों से अन्जान व्यक्ति इसके लाभ से वंचित ही रह जाता है।

नागदौन को नागदमनी, नागपुष्पी, महायोगेश्वरी, वन-कुमारी तथा नागदमन भी कहते हैं। यह तलवार की भाँति हरे रंग का सीधा चलता है। इसके पत्ते पर एक इंच की दूरी पर सफेद रेखाएँ होती हैं। यह एक फुट से तीन फुट तक लम्बा हो जाता है। इसकी जड़ का ही प्रयोग किया जाता है।

नागदौन की जड़ को ताबीज की भाँति कण्ठ में धारण करने से बुद्धि बढ़ती है, सभी स्थानों पर मान-सम्मान मिलता है, युद्ध में विजय मिलती है, कोई भी ग्रह हानि नहीं पहुंचाता, भूत-प्रेत की बाधा नष्ट हो जाती है, धन का लाभ होता है आदि-आदि अनेकों लाभ होते हैं।

इस बूटी के अन्य प्रयोग—

दरिद्रता नाशक

नागदौन की जड़ को विधिवत् प्राप्त करके स्वर्ण के ताबीज में भरें और धन स्थान में धरें। लेन देन का कार्य करने वाले इसकी जड़ की कलम बना कर कागजों पर इससे हस्ताक्षर किया करें। लक्ष्मी प्राप्ति का यन्त्र भी इसी कलम से लिखा जाए तो सभी भाँति की दरिद्रता का अन्त हो जाता है।

वशीकरण

नागदौन की जड़ के कुछ मनके बना करके एक-एक दाना रक्त धागे के द्वारा दोनों बाहों पर, अंगूठी की जगह पर; दोनों कानों में धारण करने पर प्रबल वशीकरण होता है। ऐसे व्यक्ति

की देह से दुर्बलता उसी भाँति भाग जाती, जिस भाँति वन में सिंह को देखकर अन्य जन्तु भाग जाते हैं।

अकाल मृत्यु

नागदौन की जड़ को चन्द्र ग्रहण क शुभ अवसर पर प्राप्त करके चाँदी के तावीज में नीले सूत्र के द्वारा कण्ठ में पहननें से असमय में होने वाली मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। इस तावीज के प्रभाव से कोई भी संकट उत्पन्न नहीं हो पाता।

रोग नाश

नागदौन की जड़ को गाय के दूध के साथ सेवन करने से रोगों का अन्त होकर आयु की वृद्धि होती है। □

तगर

यह एक वृक्ष जातीय पौधा है तथा इसका प्रयोग यन्त्र लिखने की सामग्री में अष्टगंध बनाने के हेतु किया जाता है। यह प्रायः प्रत्येक स्थान पर तगर नाम से ही पंसारियों से मिल जाता है। यह काले रंग का होता है। इसे चूर्ण करके खाया भी जाता है।

तगर को चौकोर काट करके ताबीज की भाँति गले में पहनने से मस्तक रोग, मृगी, उन्माद, भूत-प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि के दोष दूर हो जाते हैं। □

मेंहदी

इसका प्रयोग प्रायः सभी मंगलमय कार्यों के समय स्त्रियों क हाथ रंगने के लिए किया जाता है। यह प्रायः प्रत्येक स्थानों पर उपलब्ध है। इसमें भीनी-भीनी खुशबू होने के कारण इसको शौकीन लोग अपनी क्यारियों में भी लगाते हैं।

इसका प्रभाव ठंडा होने के कारण जले में करते हैं। इसके पत्तों से बना हुआ तेल सिर को ठंडा रखता है, सिर दर्द दूर करता तथा बालों को काले करते हुए गिरने से बचाता है। इसकी टहनी की छाल का चूर्ण रक्त का शोधन करता है तथा पथरी को समाप्त करता है।

मेंहदी की जड़ तथा बीजों का ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से दिमाग में आनें वाला क्रोध समाप्त हो जाता है। सदा तवियत प्रसन्न रहती है। इसके धारण करने से ज्वर का नाश हो जाता है। समस्त ग्रहों के दोष समाप्त हो जाते हैं। भूत-प्रेतादि के दोष होते ही नहीं, यदि हो गए हों तो समाप्त होकर शरीर सुख मिलता है। □

कौड़ी

इससे प्राय: सभी लोग परिचित हैं। यह भारत में सभी जगह पाई जाती है। इसे कपर्दक, कबड़ी तथा अंग्रेजी में कोब-रीज कहते हैं। यह सफेद, लाल तथा पीली अर्थात् तीन रंगों में पाई जाती है जबकि इसका मुख्य रंग सफेद ही रहता है। यह भी अपने आप में अनेकों गुण रखती है।

नेत्रों में जाला पड़ गया हो या नेत्रों की कार्य क्षमता कम हो गई हो तो कौड़ी को गुलाब जल से घिस करके नेत्रों पर लगावें।

चर्म रोग हो गए हों तो कौड़ी को नौसादर के साथ पीस करके चर्म रोग पर लगावें।

सफेद और लाल कौड़ी का प्रभाव शीतल होने के साथ-साथ जख्म भी भरने का है अत: इसे पीस करके जख्म आदि पर भी प्रयोग करते हैं।

पीली कौड़ी का प्रयोग रसकर्म में सफलता के साथ करते हैं।

तांत्रिक प्रयोगों में वह कौड़ी लेते हैं जिस पर काले रंग के बिंदु हों तथा काली रेखाएँ पड़ी हों इस भांति की कौड़ी थोड़ी सी तलाश करने पर सरलता से मिल जाती है। इस कौड़ी को प्राप्त करके काले धागों के द्वारा बच्चों के गले में डालने से समस्त बाल ग्रहों का तथा बालारिष्टों का नाश हो जाता है। यह कौड़ी अनेकों चमत्कार प्रस्तुत करने में सक्षम है।

जो कौड़ी डेढ़ तोले के वजन की होती है, वह अति उत्तम होने के कारण शुभता तथा लाभ शीघ्र प्रस्तुत करती है। जो कौड़ी एक तोले के वजन वाली हो, वह मध्यम मानी जाती है तथा इससे कम वजन की कौड़ी के लाभ प्रायः शुभ नहीं रहते।□

काली हल्दी

जब हम हल्दी की बात करते हैं तो स्वभावतः ही लोग इसे समझ जाते हैं क्योंकि कोई घर ऐसा नहीं होगा, जहाँ पर इसका प्रयोग न होता हो परन्तु मैं तो काली हल्दी की बात करूँगा। क्योंकि तन्त्र साधनाओं में इसी का अधिक प्रयोग किया जाता है।

प्राय लोगों के पत्र आते हैं कि साहब काली हल्दी मिलती ही नहीं। कुछ पत्रों के अनुसार उन्हें काली हल्दी तो मिली परन्तु कहे गए लाभ दृष्टिगोचर नहीं हुए। आखिर यह काली हल्दी है क्या ?

माना जाता है कि पीली हल्दी में ही कभी-कभी काली हल्दी मिल जाती है। परन्तु यह काली हल्दी नहीं होती। हल्दी के खेत से खर-पतवार को खुरपी से काटते समय किसी-किसी हल्दी की गाँठ पर खुरपी लग जाती है। जिस कारण उसका

पोषण बन्द हो जाता है। अतः वह सूख जाती है। उसे काले रंग में प्राप्त किया जाता है। परन्तु इससे प्रभाव नहीं मिलते। जिसके कारण प्रयोग कर्ता निराश होकर तन्त्र शास्त्र को ही दोषी मानने लगता है। इस सारी मेहनत तथा निराशा का कारण काली हल्दी को न समझ पाना है। आइए ! मैं आपको बताता हूँ कि काली हल्दी क्या है ?

यह क्षुप जाति की वनौषधि है। इसके पत्ते हल्दी के पत्तों की भाँति ही होते हैं। इसकी जड़ में आँबा हल्दी की भाँति गाठें लगती हैं। यह गाँठ काले रंग की तथा भीतर से हल्के पीले रंग की होती है। जिस खेत में हल्दी की खेती की जाती है, वहाँ पर यह स्वतः ही उग आती है। इसकी जड़ से कपूर की महक आती है। काली हल्दी के पौधों पर गुच्छेदार पीले रंग का फूल खिलता है। इस फूल से फली भी बनती है जो कि गोलाकार होती है, पतली होती है तथा चिकनी होती है। इसी पौधे की जड़ में लगी गाँठों को काली हल्दी कहते हैं।

काली हल्दी को कचूर कहते हैं। यह प्रायः सभी पंसारियों से मिल जाती है अतः व्यर्थ की भटकन बन्द करके पंसारी से खरीद लेनी चाहिए। प्रायः बंगाल में यह अधिक पाई जाती है। यह चेहरे का रंग साफ करके कील मुँहासे दूर करती है। शायद इसीलिए बंगाल में इनका उबटन बना करके प्रयोग किया जाता है। टर्की के रहने वाले भी स्नान करने के पश्चात् इसका उबटन प्रयोग करते हैं। कम्बोडिया में आक्षेप से पीड़ित बालकों के शरीर पर इसका प्रलेप करके लाभ उठाया जाता है। इसके धारण करने तथा सेवन करने से मृगी रोग से भी ठीक हो जाता है। इसे धारण करने से ग्रह जनित बाधा समाप्त हो जाती है। जब तक इसे पहना रहा जाएगा तब तक कोई भी

ऊपरी शिकायत नहीं होती। तांत्रिक सिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक उपासक तथा साधक चन्दन के टीके के स्थान पर काली हल्दी का टीका लगाते हैं। इस टीके के मध्य में रक्त का सितारा लगाते हैं। यह रक्त प्रायः साधक लोग अपनी ही कनिष्ठिका से लेते हैं। यह टीका अपने तथा अपने आराध्य के माथे पर लगाते हैं। अक्सर इसके लाभ को प्रत्यक्ष देखा गया है। □

कस्तूरी

तन्त्र प्रयोगों में कस्तूरी का एक विशेष स्थान है और ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होगा जो कि इसके विषय में जानता न हो परन्तु यह असली मिलती ही नहीं। इसी कारण तन्त्र प्रयोग करने पर इससे मिलने वाले लाभ प्रश्न ही बने रहते हैं।

कस्तूरी प्रायः सर्वत्र उपलब्ध है और कस्तूरी कहने मात्र से पंसारी दे देता है। यह असली है या नकली ? यह प्रश्न बना ही रहता है क्योंकि इसके विषय में बहुत अधिक किसी को मालूम नहीं रहता और न ही कोई बताता है।

कस्तूरी एक विशेष प्रकार के हिरण के निश्राव वाहा का सूखा हुआ रस है। यह विशेष प्रकार का हिरण लगभग आठ हजार फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। मुख्यतः यह मृग हिमालय, दार्जिलिंग, नेपाल, आसाम, चीन तथा सोवियत देश में अधिकता से पाया जाता है। कस्तूरी नामक कीमती औषधि केवल पुरुष जाति के हिरण में ही बनती है। इसकी महक की दीवानी होकर स्त्री जाति की हिरणी पुरुष हिरण के पास आकर दीवानेपन में उससे विषय भोग करती है। कस्तूरी का पूर्ण निर्माण हो जाने के पश्चात् हिरण के शरीर में लगभग एक महीने तक ही रहती है। इसी एक महीने में हिरण को पकड़

करके कस्तूरी प्राप्त की जाती है। इस एक महीने के पश्चात् कस्तूरी प्राप्त नहीं होती। हिरण के बच्चों में कस्तूरी नहीं होती। इनके बच्चे जब दो वर्ष के हो जाते हैं तब लगभग डेढ़ से तीन तोला तक कस्तूरी बनती है। यह कस्तूरी इस हालत में होती है कि इसका प्रयोग नहीं किया जाता। जब हिरण पूरी तरह जवान हो जाता है तब इसमें लगभग डेढ़ औंस से लेकर कम-से-कम दो औंस तक कस्तूरी पाई जाती है। इस विवरण के अलावा भी प्रत्येक हिरण में एक से डेढ़ तोले तक तो कस्तूरी पाई ही जाती है। कस्तूरी एक डेढ़ इंच के व्यास वाली गोल या चौकोर थैली में बन्द होती है। इस थैली के ऊपर का धरातल कुछ चिकना तथा चपटा होता है। इसी पर कुछ सख्त बाल होते हैं। इस थैली का थोड़ा-सा मुख रहता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि कस्तूरी की ही भाँति का कुछ है जो अन्य जानवरों से भी प्राप्त किया जाता है। जैसे कि—

एक सांड होता है जिसे कि ओबीबस मस्केटस कहते हैं। इस सांड के सारे शरीर से कस्तूरी की महक आती है।

एक बत्तख होती है जिसे कि अनास मस्काटा कहते हैं। इसमें कस्तूरी की तीव्र महक पाई जाती है।

एक बकरा होता है जिसे कि कपरा आइवेक्स कहते हैं। इसके रक्त से कस्तूरी की महक आती है।

एक और हिरण होता है जिसे कि एन्टीकोप डोर्क्स के नाम से जानते हैं। इसके रक्त से कस्तूरी की तीव्र महक आती है।

एक मगरमच्छ होता है जिसे कि क्रोको डिप्लस वेल्गेरिस कहते हैं। इसके शरीर से तो कस्तूरी की शानदार महक आती है।

उपरोक्त विवरण से आप समझ रहे होंगे कि यदि इनका
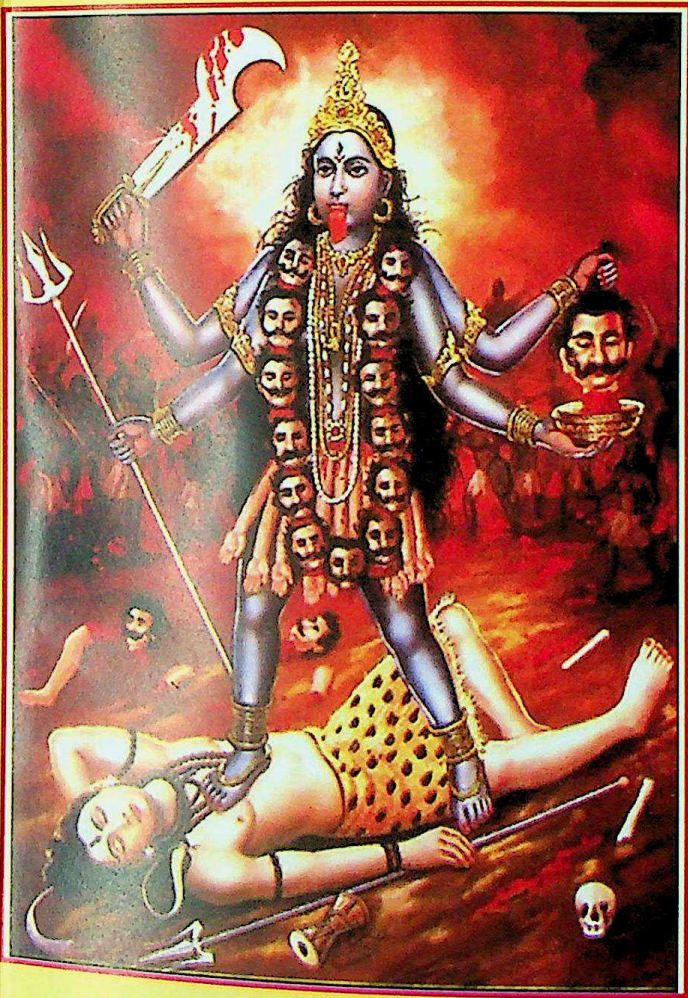
1. तन्त्र-मन्त्र की देवी महाकाली जी के दर्शन
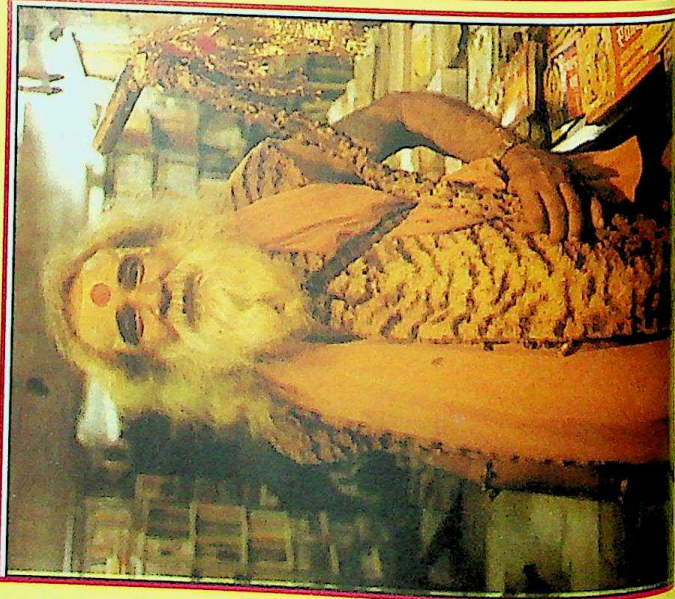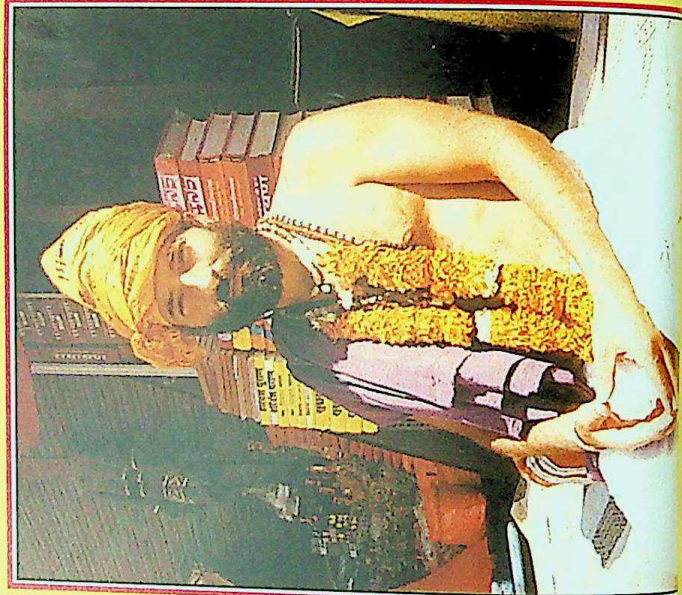
इस इन्द्रजाल को संसार के 11 महात्माओं एवं सिद्धयोगियों से आशीर्वाद प्राप्त है कि इस ग्रन्थ को घर में पवित्र स्थान पर रखने से सब प्रकार की सांसारिक बाधाएँ दूर होती हैं।
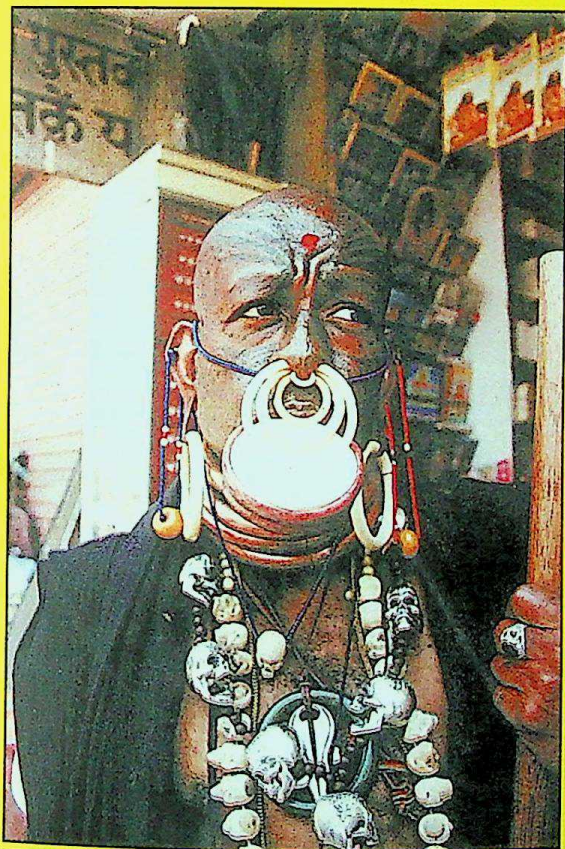
4. अघोरी साधु जीभ, नाक, कान में हाथी दाँत के आभूषणों सहित
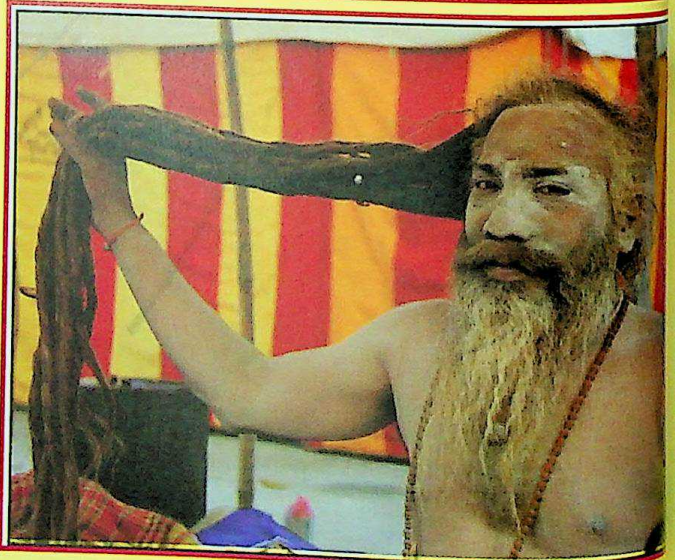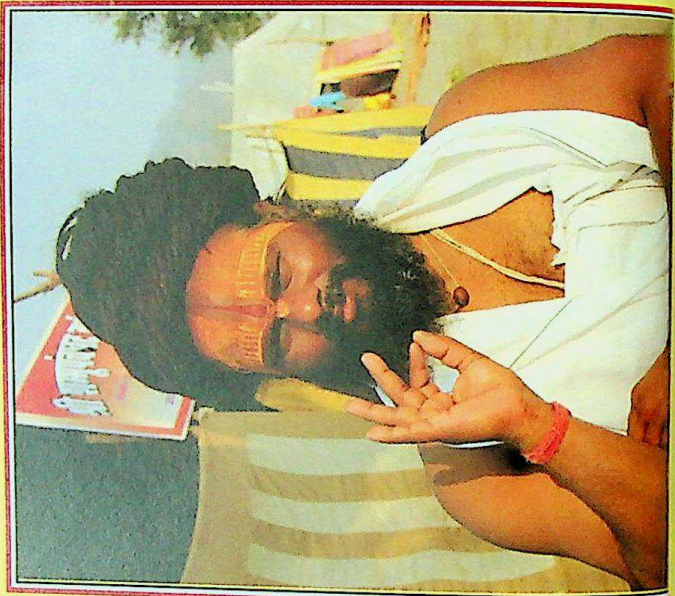
6. एक नागा बाबा अपने केश प्रदर्शित करते हुए
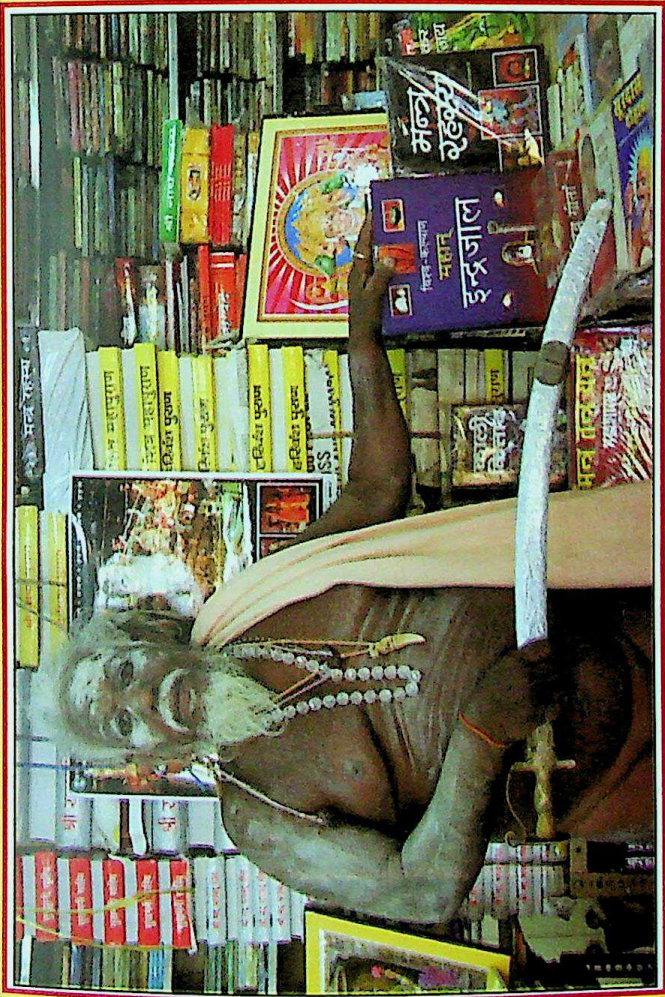
7. नागा बाबा इन्द्रजाल पुस्तक का विमोचन करते हुए
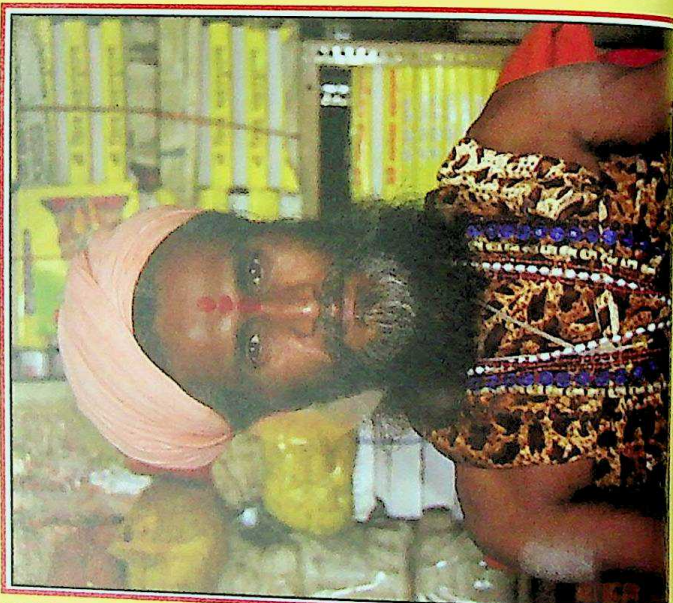
10. अद्भुत साधु विचित्र मालाएँ पहने एवं सुन्दर त्रिशुल के संग
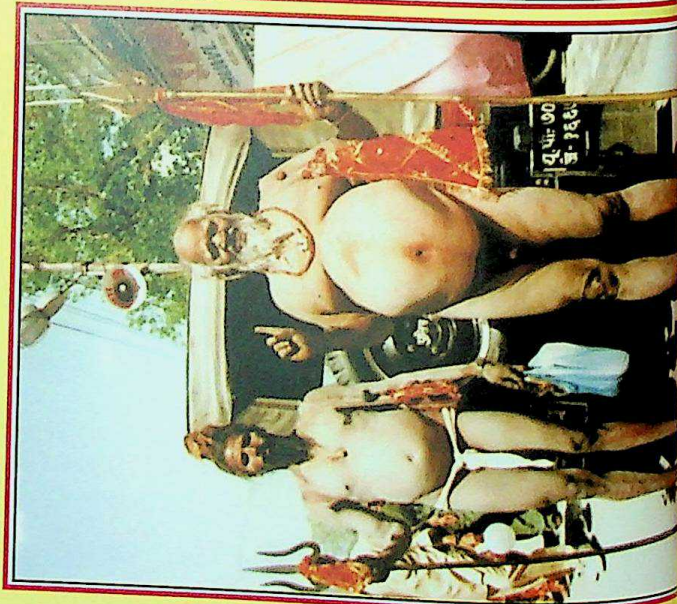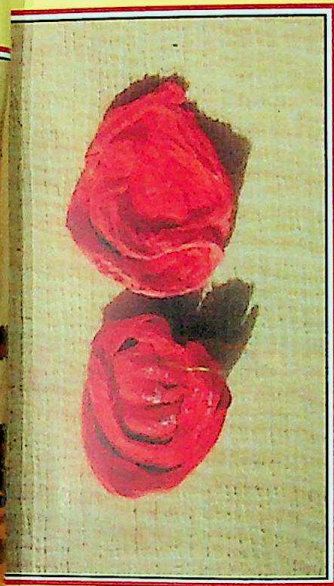
13. बिल्ली की जेर

14. सियार सिंगी
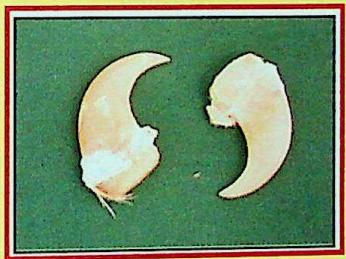
15. शेर का नाखून
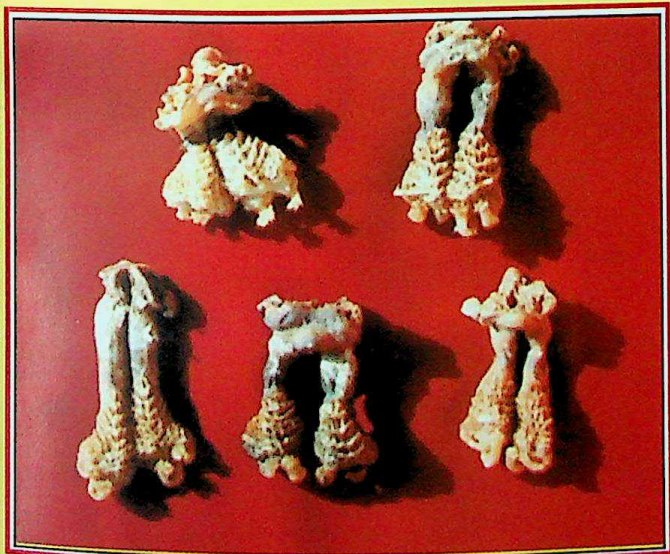
16. हत्था जोड़ी
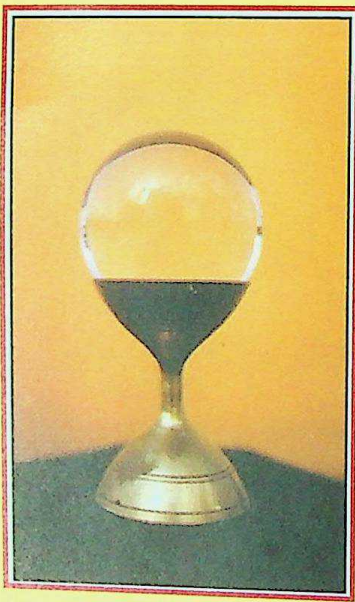
17. क्रिस्टल बॉल

18. क्रिस्टल के शिवलिं
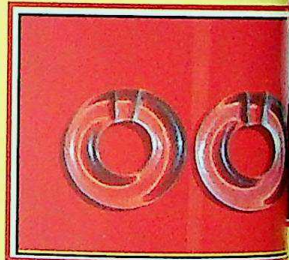
1. कमण

19. क्रिस्टल के कुण्डल
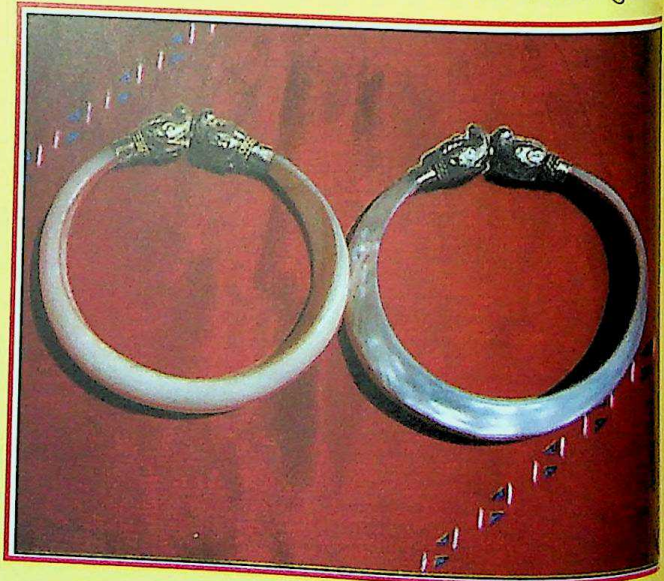
20. हाथी दाँत के कुण्डल

शिवलिं

कुण्डल
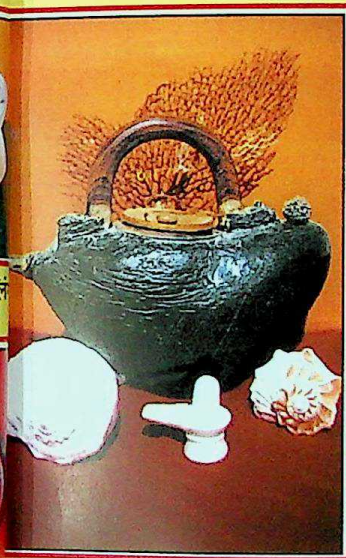
1. कमण्डल, शंख एवं शिवलिंग
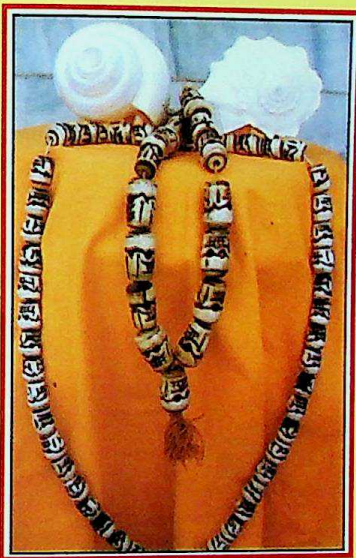
22. हड्डी की मालाएँ

23. पारे के बने शिवलिंग

24. चँवर

25. मोरपंखी

29. स

(ब
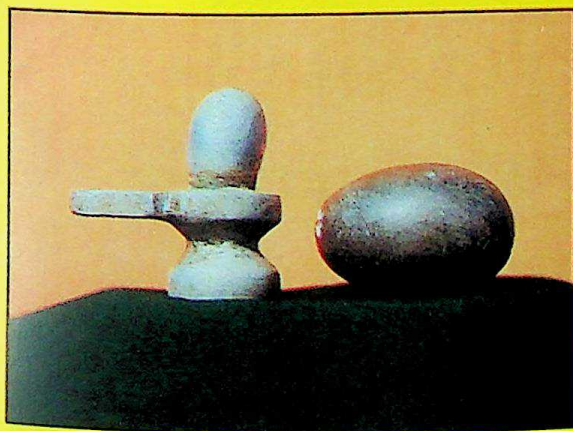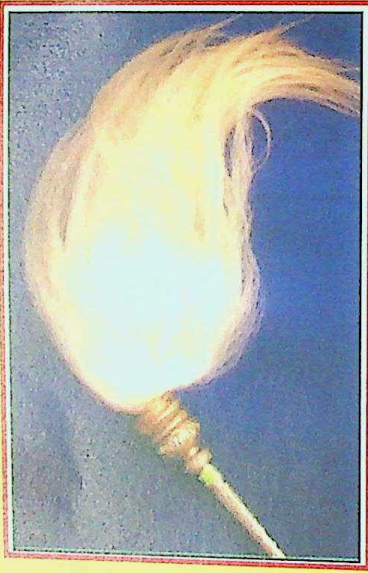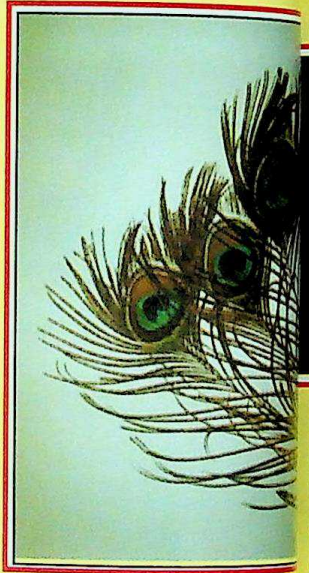
26. तान्त्रिक छड़ी

27. तान्त्रिक मणियों की अष्टधातु

0. शिवलि

28. दक्षिणावर्ती शंख (पूजा के लिए)
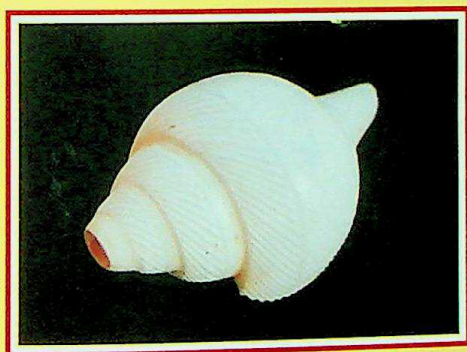
29. साधारण शंख (बजने वाला)
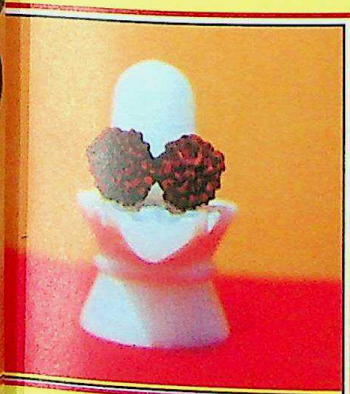
0. शिवलिंग और गौरीशंकर रूद्राक्ष
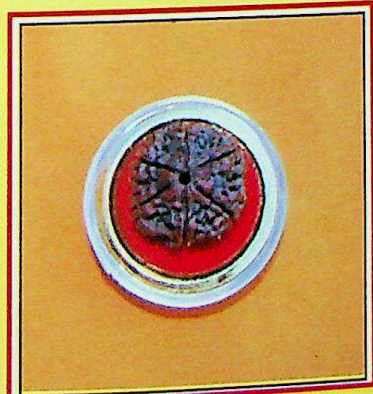
31. असली रूद्रक्ष का एक दाना
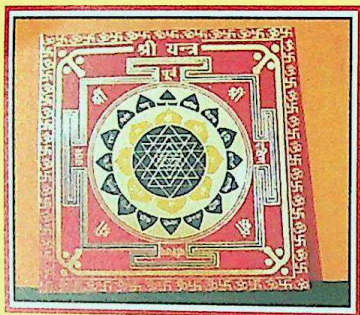
32. श्री यन्त्र रंगीन

33. ताँबे के पतरे पर बना श्री

34. स्फटिक श्री यन्त्र

35. कच्छप श्री यन्त्र

36. मेरु श्री यन्त्र

37.

39.
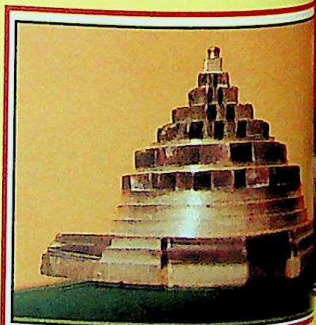
37. पत्थर की माला
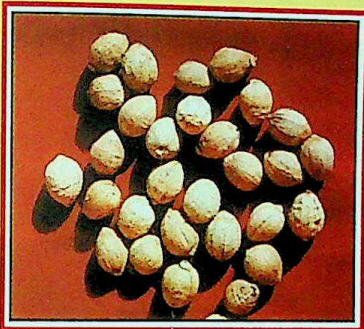
38. श्री फल
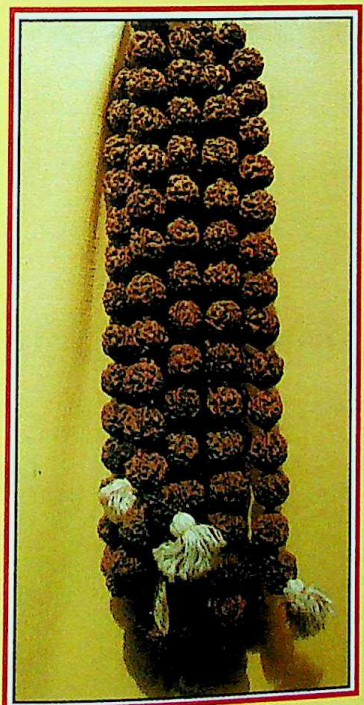
39. एकाक्षी नारियल

40. रूद्राक्ष की मालाएँ
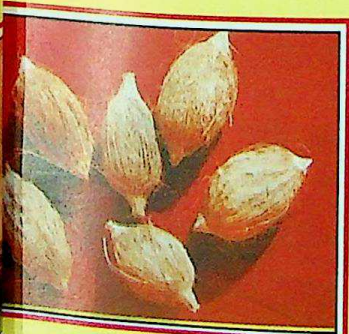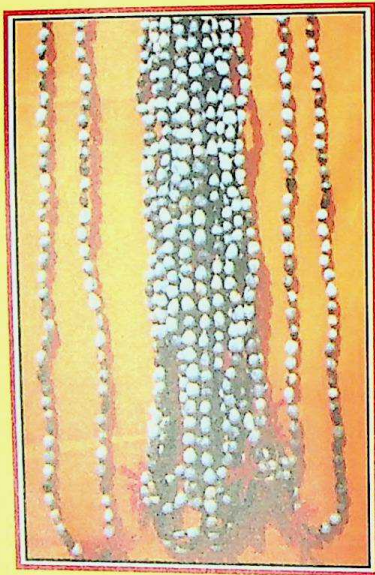
41. वैजयन्ती माला

42. तान्त्रिक प्रयोग की विभिन्
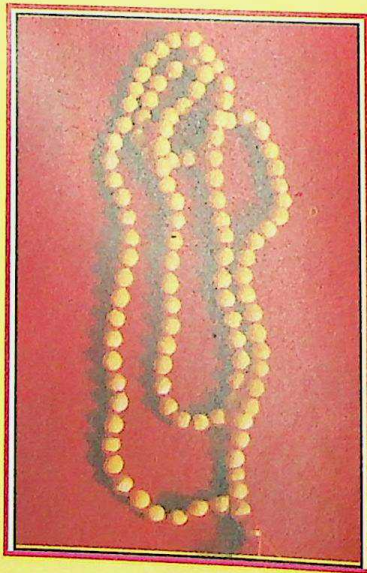
43. हल्दी की माला
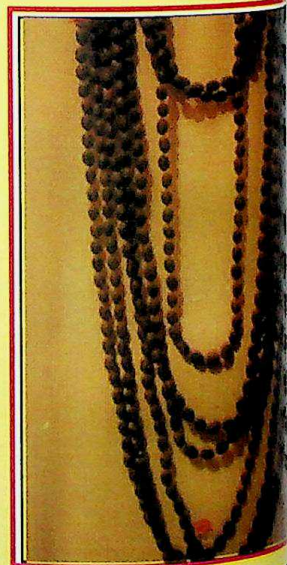
44. कमलगट्टे की मा

रक्त सुखा करके बेचा जाय तो कस्तूरी कही जा सकती है जबकि कस्तूरी के अन्य गुण इनमें नहीं होते हैं।

बाजार में मुख्यतः तीन भाँति की कस्तूरी आती है :—

१. रूस की कस्तूरी,

२. आसाम की कस्तूरी (इसे कामरूप कस्तूरी भी कहते हैं),

३. चीन की कस्तूरी।

आइए कस्तूरी पहचानें

एक गिलास में पानी भर करके कस्तूरी का एक दाना इसमें गिरा दें। यह दाना पानी में जाकर गिलास के तले पर जाकर बैठ जाए और गले या ढीला न हो तो कस्तूरी को असली समझें।

एक अंगीठी में कोयले दहकायें। कुछ अंगारे लेकर कस्तूरी का एक दाना अंगारे के ऊपर डाल दें। यदि यह कस्तूरी का दाना जलकर राख हो जाए तो कस्तूरी को नकली जानना चाहिए। यदि कस्तूरी का दाना अंगारे पर पिघल करके बुलबुले छोड़े तो कस्तूरी को असली जानें।

एक धागे को हींग से भिगो करके तर कर लें। कस्तूरी को लेकर इसके बीच से धागा गुजार करके निकालें। यदि हींग की महक बनी रहे तो कस्तूरी को नकली समझें। मेरे विचार से इस प्रयोग को करने से असली कस्तूरी की परख नहीं होगी। क्योंकि कस्तूरी जब बाजार में बिकती है तब अपनी महक खो देती है और जब महक न होगी तो हींग की महक को मारेगा कौन ? यदि आपको कोई महकती हुई कस्तूरी दे तो आप यह प्रयोग करके असल नकल का भेद जान सकते हैं।

एक पदार्थ होता है जिसका कि नाम ट्रिनीट्रोब्यूटिल टोलबल

है । इस पदाथ की महक कस्तूरी की भाँति होती है और य
महक अधिक समय तक टिकती है ।

कस्तूरी भारी होती है ।

कस्तूरी छूने में चिकनी होती है ।

कस्तूरी कपड़े में रखने से कपड़ा पीला हो जाता है ।

कस्तूरी प्राप्त करने के लिए हिरन को मार करके उस
नाभि काट लेते हैं । इस हिस्से को कस्तूरी नाभा कहते हैं ।

कस्तूरी मक्का के चून की भाँति होती है । यह तिलों
भाँति भी होती है । यह कुलथ के बीज की भाँति भी होती
यह मटर के दाने के भाँति भी होती है । कहीं-कहीं पर
इलायची के दानों की भाँति पाई जाती है ।

कस्तूरी को तन्त्र प्रयोगों में अनगिनत कार्यों में लिया जा
है । मन्त्र लिखने के लिए इसकी परम आवश्यकता पड़ती है

सियार सिंगी

प्रत्येक जंगल में सियार पाए जाते हैं और सभी लोग इ
परीचित भी हैं । प्रायः यह देखने में आया है और प्राणी विज्ञ
के विद्वानों की भी यही राय है कि सियार के सींग नहीं हो
परन्तु कुछ ऐसा है जो सियार सिंगी के नाम से तंत्र में प्रय
किया जा रहा है । वास्तव में यह आश्चर्य का विषय है कि
सियार के सींग ही नहीं होते तो सियार सिंगी क्या है ?

हाँ ! यह सत्य है कि सियार के सींग नहीं होते और यह
सत्य है कि सियार सिंगी होती है । इसकी प्राप्ति सियार से
होती है ।

तन्त्र शास्त्रों में अनेकों रहस्य छुपे हुए हैं । इन्हीं छुपे

रहस्यों में से एक रहस्य है 'सियार सिंगी'। इसे प्राप्त करने के लिए सियार की हत्या करनी पड़ती है।

आप सभी जानते हैं कि सियार मुँह ऊपर उठा करके चिल्लाता है। यद्यपि इसके सींग नहीं होते फिर भी जब यह पूरे वेग से चिल्लाता है तो इसके सिर पर एक हड्डी-सी उभर आती है और जब यह चिल्लाना बन्द करता है तब यह हड्डी नदारत हो जाती है। इसी हड्डी को सियार सिंगी कहते हैं। अब आप समझ गए होंगे कि सियार सिंगी को प्राप्त करने का अवसर कितना कम तथा कितना खतरनाक है।

सियार सिंगी प्राप्त करने के लिए एक लम्बी तलवार लेकर बन में जाना होगा और किसी ऐसे स्थान पर जा छिपना होगा जहाँ पर कि सियार आ करके मौज मजे करते हों। जब आप देखें कि सियार आकर चिल्लाने लगा है बस उसके चिल्लाते ही उसकी गरदन पर पूरी ताकत से तलवार चला दें। स्मरण यह रखना है कि गरदन एक ही वार में कट जाय। इस सारे कार्य-क्रम में सियार को चिल्लाते हुए काटना है। यदि चिल्लाना बंद कर दे तो अपना यह कार्यक्रम निष्फल समझ लें। गरदन कटने के बाद सिर फोड़ करके यह उभरी हुई हड्डी प्राप्त कर लें। यह हड्डी ही सियार सिंगी के नाम से मशहूर है। बाजार में पाई जाने वाली सियार सिंगी पर बाल होते हैं। इसके अनेकों प्रयोग होते हैं।

जिस व्यक्ति के पास या जिस घर में सियार सिंगी रहती है वहाँ सदा उन्नति होती रहती है। उसके नाम की विजय पताका सदा लहराती रहती है। कोई भी संकट उसे छू नहीं सकता।

साधक लोग सियार सिंगी को कण्ठ में धारण करते हैं।

जिसके कारण साधना बिना किसी बाधा के पूर्ण होकर सफलता प्राप्त होती है।

एक डिब्बी में सियार सिंगी रख करके असली सिंदूर डाल दें, कुछ चावल डालें, कुछ उड़द के दाने डालें, कुछ छोटी इलायची डालें। प्रतिदिन धूप दीप करते रहें। सियार सिंगी के पूजन के प्रारम्भ में लाल रंग के कपड़े की झंडी बना करके गणपति को बुधवार के दिन चढ़ा दें। अब आपके पास कुछ तांत्रिक प्रयोग करने के लिए मसाला तैयार है।

सियार सिंगी वाला सिंदूर जिसकी भी माँग में भर दिया जाएगा। वह जिन्दगी भर साथ नहीं छोड़ेगा।

सियार सिंगी वाले चावल क्रोधित व्यक्ति को मारे जाएं तो उसका क्रोध सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

सियार सिंगी वाले उड़द जिस दरवाजे पर मारे जायेंगे वह घर कभी भी आबाद नहीं रहेगा।

सियार सिंगी वाली छोटी इलायची जिसे खिलाओ उससे मनचाहा काम करवाओ।

शेर सिंगी

आपने वन प्रान्त में आदिवासियों को या कुछ जंगली जातियों को देखा होगा और ध्यान दिया होगा कि यह लोग हड्डियों की मालाएं धारण करते हैं। सिर में टोपी पहनते तो उसमें रंगीन पंख लगे होते हैं। बहुत पहले इस टोपी में केवल दो हड्डियाँ लगाया करते थे। आजकल उस हड्डी के अभाव हो जाने के कारण रंगीन पंख प्रयोग किए जाते हैं। जिस की टोपी में लगाई जाने वाली हड्डी शेर सिंगी होती थी।

शेर शब्द से तो शेर ही स्पष्ट होता है और शेर के सींग नहीं हुआ करते। अतः शेर सिंगी शब्द बड़ा ही हास्यास्पद प्रतीत होता है। इस पर भी आपको विश्वास करके यह समझ लेना चाहिए कि भारत की प्राचीन तान्त्रिक विद्या स्वयं ही अपने आपमें आश्चर्य समेटे हुए है तो शेर सिंगी की बात भी हास्यास्पद न होकर आश्चर्ययुक्त सत्य है।

आजकल शेरों का अभाव होने पर ऐसे शेर मिल पाने असम्भव ही हैं परन्तु इसका वर्णन करना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि शेर सिंगी अपने आपमें एक विशेष प्रकार का तांत्रिक प्रभाव रखती है।

जब शेर बहुत अधिक आयु के हो जाते हैं तो उनके कंधों पर दोनों तरफ दो उभार हो जाते हैं जो कि डेढ़ इंच से चार तक के होते हैं। यह स्थिति कभी-कभी किसी-किसी शेर में ही प्रस्तुत होती है और इसी कारण इस शेर में विचित्रता आ जाती है। इस शेर से यदि इसका शिकार वचकर वृक्षादि पर चढ़ जाए तो यह शेर कोई भी उछल-कूद न मचाते हुए अपने शिकार को बड़े ही ध्यान से देखता है और उसका शिकार स्वतः ही भूमि पर गिर पड़ता है, जिसे खा-पीकर शेर अपनी क्षुधा की पूर्ति कर लेता है।

वहुत पहले इस भाँति के अनेकों सिंह पाए जाते थे और ऐसे सिंहों की यह विकट विशेषता देखते हुए कुछ बुद्धिजीवी जंगलियों ने इसकी इन उभरी हुई हड्डियों का प्रयोग अपने सिर में टोपी के साथ किया और इस विशेषता से परिचित हुए।

यह शेर सिंगी कहलाते हैं। यह अदर्शनीय वस्तु जिसके पास रहती है वह नगर में विशेष सम्मान प्राप्त करता है और भी जो उसकी अभिलाषा होती है वह भी क्रमशः पूर्ण हो जाती

है। जिस भाँति एक लघु पारस पत्थर टनों लोहे को स्वर्ण परिवर्तित कर देता है उसी भाँति यह शेर सिंगी जिसके पास उसे कोई भी कमी नहीं होती और उसके लिए कोई भी स्थि दुःसाध्य नहीं होती।

समुद्रफल

इसके वृक्ष भी हमारे देश में प्रायः पाए जाते हैं। इस नाम से यह न समझा जाए कि यह कोई समुद्र से मिलने वा वस्तु है। इस वृक्ष पर जब फल आने लगता है, तब डोरे-डं से निकल आते हैं तथा इन्हीं डोरों से बड़ी इलायची की भां के फल निकलते हैं। इसी फल को समुद्रफल कहा जाता है प्रायः पंसारियों से मिल जाता है। इसको खाने से चरपरा होती है। यह गरम प्रभाव वाला कड़वा फल होता है। इस फ को खाने से भ्रम की शिकायत दूर हो जाती है। इसे तावीज भाँति धारण करने से भूत बाधा का अन्त हो जाता है।

भोज पत्र

तन्त्र प्रयोगों में काम आने वाली एक प्रभावा वस्तु है भो पत्र। इसके अभाव में तन्त्र जगत में इसके पर्याय तो बहुत हैं परन्तु इसके जैसा लाभ किसी अन्य से प्राप्त नहीं किया ज पाता। भोजपत्र का प्रयोग अधिकतर यन्त्र लिखने में किय जाता है। इसके ऊपर लिखे यन्त्र विशेष प्रभावी होते हैं परन् आवश्यक समय पर इसकी उपलब्धि न होने से निम्नलिखि भाँति कार्य चलाया जाता है और यह देखने में आया है कि अ प्रयोग अपने नामानुसार ही विशेष प्रभावी रहे—

पीपल के पत्ते पर पुत्र कामना का मन्त्र लिखा जाता है।

कमल के पत्ते पर राजा वशने के लिए मन्त्र लिखा जाता है। केले के पत्ते पर अन्न भंडार भरे रहने के लिए लिखा जाता है।

श्मशान से वस्त्र लाकर विद्वेषण मन्त्र लिखा जाता है।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए ताड़ पत्र पर लेखन करते हैं।

पान के पत्ते पर कामिनी को मोहने के लिए लेखन करते हैं।

इस पर भी भोजपत्र की अपनी ही एक विशेष भूमिका है। इसे सभी भाषाओं में ही भोजपत्र कहते हैं। यह हिमालयादि क्षेत्रों में पैदा होता है। यह एक वृक्ष की छाल होती है। इस छाल का प्रयोग अनेकों वर्षों से सफलता के साथ किया जा रहा है।

आप समझ गए होंगे कि इस पर मन्त्र लेखन क्यों किया जाता है। भोजपत्र को खाली ही यदि धारण किया जाए तो भी भूत प्रेतादि की बाधाएँ शान्त हो जाती हैं। इसके ऊपर मन्त्र लिखकर शुद्ध किए जाते हैं। इसी पर आकृति बना करके देखते रहने और मन्त्र जप करते रहने से इष्ट के दर्शन होते हैं। यदि भूतादि की पीड़ा तीव्र हो तो इसका धूप भी दिया जाता है।□

व्याघ्र नख

एक जानवर होता है जिसे कि व्याघ्र कहते हैं। इसके नाखून को कण्ठ में धारण करने से सभी ग्रह स्तंभित होकर शान्त हो जाते हैं। इसके धारण किए रहने से कभी कोई अनिष्ट नहीं होता। 'ऊपरी' शिकायतें दूर हो जाती हैं। □

आसन

तन्त्र प्रयोगों में आसन की उपयोगिता सर्वोपरि है। यह मा
जाता है कि पहले आसन शुद्धि फिर तन्त्र सिद्धि। अतः प्रयो
करने के पूर्व आसन के विषय में प्रत्येक साधक को अवश्य
जानना चाहिए। तन्त्र साधन करने वालों के लिए विभि
जरूरतों के अनुसार विभिन्न आसन होते हैं।

सिद्धि करने के लिए जिस वस्तु विशेष के ऊपर बैठा जा
है उसे आसन कहते हैं। यद्यपि कुश, ऊन तथा कम्बल का आ
पवित्र तथा सिद्धिदायक माने गए हैं फिर भी कुछ आसन विशे
अनेकों विशेष कार्यों के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। यहाँ पर जि
आसन का भी विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है उस आसन
पशु पर यदि बैठ सकते हों तो अत्यधिक लाभदायक होता
अन्यथा आप उस पशु के चर्म का आसन बना करके ला
उठायें।

व्याघ्रासन—कोई साधक यदि जीवित व्याघ्र के ऊपर
करके मन्त्र का प्रयोग करता है तो मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता
तथा वह साधक देवी के समान हो जाता है।

किसी स्वच्छ वस्त्र के ऊपर व्याघ्र का चित्र बना कर
आसन के लिए प्रयोग करने से शब्द सिद्धि प्राप्त होती है।

अब आइए ! व्याघ्र चर्म की बात करें।

काले व्याघ्र के चर्म पर बैठ करके साधना करने से यक्षि
प्रसन्न होकर वार्ता करती है।

धूसर रंग के व्याघ्र के चर्म पर बैठ करके साधना करने
तीनों लोकों का परिचय प्राप्त होता है।

व्याघ्र की रोमश त्वचा के आसन पर बैठ करके साधना
करने से बहुत-सी योग सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

व्याघ्र की बिन्दु वाली त्वचा का आसन बना करके जपादि करने से शत्रुओं का नाश होता है और राजा की कृपा प्राप्त होती है।

कूर्मासन—कछुए की खाल का आसन बना करके उपासना करने से डाकिनी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

गजासन—हाथी पर या हाथी के आसन पर बैठ करके साधना करने से मनोवांछित लाभ प्राप्त होते हैं।

मनुष्यासन—साधना करते समय यदि जीवित मनुष्य ही आसन के लिए प्रयोग किया जाए तो राज्याधिकार प्राप्त होता है।

महिषासन—भैंसे पर या भैंसे की चम का आसन बना करके साधना करने पर शत्रुओं का विनाश होता है। □

गणपति प्रयोग

माना जाता है कि गणेश जी विघ्नविनाशक हैं इसीलिए प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ इन्हीं के नाम से किया जाता है। गणेश जी को ही गणपति कहते हैं। यहाँ पर कुछ प्रयोग बता रहा हूँ जो कि अत्यन्त लाभदायक है।

मन्त्र—ऊँ क्षां क्षीं ह्रीं ह्रूं क्रौं क्रं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का एक सौ आठ वार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। अच्छा रहे यदि यह साधन क्रम कृष्ण पक्ष में आरम्भ किया जाए। यदि अष्टमी या चतुर्दशी तिथि के दिन उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध कियां जाए तो उत्तम रहता है। इस मन्त्र को प्रतिदिन जपते रहने से साधक के शत्रु, बाधायें, क्लेश आदि स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

यह एक सिद्ध मन्त्र है और यह कीलन किया हुआ भी नहीं है। इसी कारण यह एक सौ आठ बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है।

यदि किसी अधिकारी या राजा को वशीभूत करना हो तो नीम की जड़ ग्रहण करके गणेश जी की प्रतिमा बना लेवें। इस प्रतिमा को पूजन गृह में स्थापित करके जिसे वशीभूत करना हो उसका नाम लिखें। इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ वार जप करें। इसके बाद उस राजा या अधिकारी से मुलाकात करें।

आपने किसी को भी वश में करना हो। प्रेमिका हो, प्रेमी हो, किसी का पति हो, किसी की पत्नी हो अर्थात् कोई भी हो उसे मोहित करना हो तो उपरोक्त क्रिया ही करनी होगी, लाभ स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। इन प्रयोगों के प्रभाव से लाभ शीघ्र प्राप्त होता है।

नीम वृक्ष की जड़ से बनी हुई गणेश जी की प्रतिमा यदि प्राण प्रतिष्ठा कर ली जाए और इस मूर्ति के बाईं तरफ बैठकर उपरोक्त मन्त्र का जप किया जाए तो सभी परेशानियों का अन्त होकर मन की इच्छा पूर्ण होती है।

ऐय्याशों के लिए

ऐय्याश स्त्री हो या पुरुष, इन्हें प्रतिदिन ऐय्याशी के लिए विपरीत लिंगी की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। इन कामों में झगड़े-झंझट भी बहुत होते हैं। यहाँ पर ऐय्याशों के लिए एक नित्य ही विपरीत लिंगी के प्रबन्ध के लिए एक प्रयोग बताया जा रहा है।

ऊपर बताए गए मन्त्र को सिद्ध कर लें।

नीम की जड़ प्राप्त करके गणेश जी की प्रतिमा बनावें। इस प्रतिमा में गणेश जी की प्राण प्रतिष्ठा कर दें।

किसी स्त्री के बाएं पाँव के नीचे की मिट्टी उठा लावें। इस मिट्टी को गीला करके स्त्री की मूर्ति बनावें। इस मूर्ति को दाहिने हाथ में लेकर गणेश जी की प्रतिमा को बाएँ हाथ में ले लें। उपरोक्त मन्त्र की एक माला अर्थात् एक सौ आठ बार जप करके स्त्री की मूर्ति को गणेश जी की प्रतिमा के ऊपर चढ़ा दें। इस भाँति करने से स्त्रियाँ आकर्षित होकर खिची चली आती हैं।

यह प्रयोग स्त्री वशीकरण के लिए बताया गया है। यदि कोई ऐय्याश स्त्री पुरुषों का प्रबन्ध करना चाहे तो प्रयोग ऊपर की भाँति किया जाएगा। केवल पुरुष के दाहिने पाँव की मिट्टी लेकर पुरुष की ही आकृति बनानी होगी। यहाँ पर पुरुष की मूर्ति बाएँ हाथ पर रहेगी तथा गणेशजी की प्रतिमा दाहिने हाथ पर रहेगी। इसके अलावा सभी क्रियाएँ उपरोक्त ही रहेंगी। □

नींबू

यह वस्तु प्राय: हरेक स्थान पर प्राप्त हो जाती है। इससे सभी लोग बहुत अच्छी भाँति से परीचित हैं। गर्मी के दिनों में कोई घर ऐसा नहीं होता जो नींबू का प्रयोग न करता हो। यह नींबू कहने मात्र से ही प्रत्येक स्थान पर प्राप्त हो जाता है अत: इसका वृक्ष परिचय प्रस्तुत नहीं किया जा रहा।

नींबू कई भाँति के होते हैं—

नींबू, कागजी नींबू, जम्भीरी नींबू, लिम्पाक नींबू, कन्ना नींबू, बड़ा जम्भीरी नींबू, मीठा जम्भीरी नींबू, चकोतरा, बिहारी नींबू, विजोरा और इसकी उपजातियाँ नारंगी, संतरा आदि। इन सभी नींबूओं के अपने अलग-अलग गुण हैं। तन्त्रों में नींबू

भी एक विशेष भूमिका निभाता है। नींबू के द्वारा केवल गा
का ही सामना नहीं करते। मुख्यतः खाद्य सामग्री होने पर
यह मारण, पौष्टिक, शान्ति कर्म के लिए प्रयुक्त होता है।

दृष्टि दोष—एक नींबू लेकर दृष्टि दोष से पीड़ित व्यक्ति
ऊपर से सात बार उतारा करके किसी स्वच्छ चाकू से उस
दो टुकड़े करके अन्जानी दिशा की तरफ फेंक दें। सम्भव हो
इन टुकड़ों को किसी चौराहे पर डाल आवें। इस भाँति दृ
दोष समाप्त होकर शरीर को सुख प्राप्त होता है।

मार्ग के विघ्न—आपको कहीं अन्यन्त्र जाना हो और मा
में विघ्न आदि के खतरे लग रहे हों तो घर से निकलने पर ए
नींबू लेकर उसमें चार पिनें या कील वेष्टित करके द्वार के पा
रख करके प्रस्थान करें। इस प्रयोग के प्रभाव से रास्ते के विघ
समाप्त हो जाते हैं।

मारण—एक नींबू लेकर उसमें शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा करें
इसके बाद अर्द्ध रात्रि को निर्वस्त्र होकर श्मशान में जाकर इ
नींबू को पृथ्वी में दबा आवें। मिट्टी के भीतर जैसे-जैसे यह नीं
सड़ेगा, वैसे-वैसे ही शत्रु का प्राण सड़ेगा। इससे भी भयान
तथा शीघ्र प्रभावी कार्यक्रम भी होता है। आप जब नींबू लेक
श्मशान में जायेंगे तो यदि जलती हुई चिता मिले तो उसमें उ
नींबू को डाल दें। सावधान! मन को कड़ा रखें। हो सकता है
कि कोई शक्ति उपस्थित हो जाए। इस प्रयोग के प्रभाव
शीघ्र मरण होता है। इससे भी भयानक प्रयोग करने के लि
श्मशान में या किसी चौराहे पर एक मन्त्र का जाप करते रहना
पड़ता है, उसी रात्रि को ही एक शक्ति उपस्थित होती है। उ
पूजा करके नींबू दे दें। यह खतरनाक प्रयोग है अतः इसे साव
धानी से करें।

उड़द

उड़द नाम की काले रंग वाली एक दाल होती है। यह खाने पर शरीर को तो लाभदायक है ही तन्त्र में भी बहुलता से लाभ प्रस्तुत करती है। इसके द्वारा मारण, स्तम्भन, उच्चाटन तथा शान्तिक कार्य किए जाते हैं। मूँठ मारना तथा हड्डियाँ उड़ाना इसी के विशेष सहयोग हैं। इन सबका प्रयोग मन्त्रों के साथ किया जाता है अतः 'तांत्रिक चमत्कार' का अवलोकन करें। □

कौवा

मैंने अपनी पुस्तक शकुन अपशकुन विचार में कौवे के विषय में विस्तृत प्रस्तुतिकरण किया है जो कि शकुन से सम्बन्धित है। इस समय तन्त्र प्रयोग में कौवे की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाल रहा हूँ।

हमारा तन्त्र शास्त्र बड़ा ही विकट तथा पेचीदा विषय है और मैं मानता हूँ कि इस महत्त्वपूर्ण विषय पर बात करते समय केवल विद्वता ही झाड़नी उचित नहीं होती। बल्कि स्पष्टीकरण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। मेरा प्रयास है कि मैं अधिक स्पष्टीकरण कर सकूं फिर भी आपको कुछ समझ न आए तो जवाबी लिफाफा भेजकर विषय की विविधता को समझ सकते हैं। मैं यह वायदा तो नहीं करता कि आपको उत्तर शीघ्र मिलेगा परन्तु हाँ! उत्तर मिलेगा अवश्य।

कौवा प्रायः दो ही भांति का होता है और यह माना जाता है कि एक और दुर्लभ कौवा होता है जिसके कि दर्शन भी सुलभ नहीं होते। यह तीसरा कौवा सुनहरा होता है। मैं इस बात के विपक्ष में नहीं रहूँगा क्योंकि यह सुनहरा कौवा वास्तव में ही

होता है और मैंने इसे प्रत्यक्ष देखा है अतः प्रस्तुत विषय में इसकी भी वार्ता करूंगा।

जो कौवा जिस क्षेत्र का होता है वहाँ की पूरी खोज खबर रखता है अतः कौवे को कभी भी दुत्कारना नहीं चाहिए।

यदि कोई कौवा सिद्ध कर ले तो व्यक्ति कौवे के सहयोग से सफल भविष्य वक्ता तथा तांत्रिक बन जाता है।

जंगली कौवा पृथ्वी में छुपे हुए रहस्यों से बखूबी परीचित होता है।

आइये! कौवे को समझें तथा उससे लाभ प्राप्त करें।

कौवा एक काले रंग का पक्षी है। इसके सभी पंख काले होते हैं। इसी कारण इसे काले रंग का कहा जाता है। इसके पंख काले ही नहीं चमकीले भी होते हैं। इसकी दो टाँगें तथा दो आंखें होती हैं। इसकी आँखें तो दो होती हैं परन्तु पुतली केवल एक ही होती है। इस एक पुतली को वह बड़ी तीव्रता से दोनों आंखों के बीच घुमाता रहता है। यह जीव बड़ा ही चतुर तथा तेज तर्रार होता है। मादा कौवा जब अण्डे देती है तब कोयल के घोंसले में देती है। यह कुदरत का करिश्मा ही कहा जाएगा कि प्रायः कौवे तथा कोयल के अण्डे एक समान ही होते हैं। इनमें परस्पर भेद कर पाना कौवे तथा कोयल के भी बस की बात नहीं है। बेचारी कोयल अपने अण्डों के साथ-साथ कौवे के अण्डों को भी सहेजती रहती है। अण्डों के फूटने पर जब बच्चे निकलते हैं तब भी कोयल कौवे के बच्चों को दाना खिला-खिला कर पालती है क्योंकि इन दोनों के बच्चे भी प्रायः एक समान ही होते हैं। कोयल की शरण में पलते-पलते जब वह उड़ने लायक हो जाते हैं तो उड़कर अपनी बिरादरी में जा मिलते हैं। अतः कहा जा सकता है कि कौवा पैदाइशी चालाक होता है। एक

और इसकी विशेषता होती है कि यह पैदा होने के बाद दुर्घटना से भले ही मर जाएँ परन्तु इनका जीवन हजार वर्ष से भी ऊपर का होता है।

प्रभु ने जब संसार बनाया तब कोई भी प्राणी ऐसा नहीं बनाया जो कि संसार में कोई विशेष योगदान न करता हो। मनुष्य बनाया पशु खाने के लिए। पशु बनाया हरियाली खाने के लिए। कुत्ता बनाया, बिल्ली खाने के लिए। बिल्ली बनाई, चूहे खाने के लिए। चूहा बनाया, साँप का बिल बनाने के लिए। यह एक प्राकृतिक नियम है कि शेर कभी भी घास नहीं खा सकता और गाय कभी भी मांस नहीं खा सकती। यह एक अलग विषय है। इससे ऊपर फिर कभी चर्चा करूँगा। इस समय बात कौवे की भूमिका पर हो रही थी।

मेरा विचार है कि यह संसार एक अभिनय करने वाला मंच है और इस संसार में जीने वाला प्रत्येक प्राणी इस संसार रूपी अभिनय मंच पर अपना-अपना अभिनय कर रहा है, इसी श्रृंखला में कौवा भी अपना अभिनय प्रस्तुत कर रहा है। बहुत अभिनय बहुतों की समझ में नहीं आते। इसी भांति कौवे का अभिनय भी बहुतों की समझ में नहीं आता।

आइये कौवे को प्रयोग करें—

कहीं से एक कौवा पकड़ कर ले आयें। छः माशा बूरा, एक माशा कीकर की गोंद तथा आधा माशा कपूर (शुद्ध मिला करके) अच्छी तरह खरल में पीस लें। एक तोला पानी लेकर उपरोक्त सामग्री मिला कर चम्मच से घोल दें। डबल रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करके इस पानी में डाल दें। यह जब भीग जायें तब कौवे को खाने के लिए दे दें। इस भोज्य सामग्री को कौवा बड़े ही चाव से खा जाएगा। खाने के बाद वह बड़ी ही मीठी बोली

बोलेगा। आप उसकी बोली को तथा उसकी चेष्टा को समझने का प्रयत्न करेंगे तो आप आश्चर्य में पड़ जाएंगे क्योंकि यह कौवा बहुत से गुप्त भेद प्रकट करता है जो कि आपके लिए लाभदायक होते हैं।

स्वप्न सिद्धि

एक शब्द होता है—टेलीपेथी ! इसका अर्थ होता है किसी दूसरे व्यक्ति के मन की बातों को पढ़ते रहना। इसके प्रयोग तो मैं 'सम्मोहन विज्ञान' में प्रस्तुत करूंगा। यहाँ पर किसके मन में क्या है ? यह जानने का तरीका बता रहा हूँ। इस प्रयोग को करने से आप किसी भी व्यक्ति के मन की बातों को अपने स्वप्न में देख सकते हैं। इसे मैं स्वप्न सिद्धि करता हूँ।

किसी भी मंगलवार के दिन अभिजित योग[1] में एक कौवा पकड़ करके ले आएं। इसे पीने के लिए गुलाब जल के साथ शुद्ध शहद मिला करके दें। इसके अलावा इसे भोज्य सामग्री के रूप में कुछ भी दे सकते हैं। इस कौवे को कुछ दिन आपनें अपने पास रखना है अतः किसी लोहे के पिंजरे में इसे बन्द कर दें। बताया गया पेय ही उसे पीने के लिए दिया जाएगा। तेरह दिन तक उसे अपने पास रखें फिर तेरहवीं रात्रि को ग्यारह बजे कौवे की गरदन काट दें और उसका पेट फाड़ दें। पेट फाड़ करके सारी सामग्री निकाल कर कौवे का दिल अलग करके सम्भाल लें। कौवे का बाकी सारा सामान किसी एकान्त स्थान में जाकर पृथ्वी में दबा दें। अब आप एक तांबे की डिब्बी में इस दिल को बन्द करके धूप में रख करके दिल को सुखा लें। जब यह सूख जाय तो इस दिल की पंचोपचार से पूजा करके सिन्दूर चढ़ायें। थोड़ी-सी कस्तूरी भी चढ़ा दें इसके बाद इसे नित्य रात्रि को

---

[1] दोपहर $11\frac{1}{2}$ बजे से $12\frac{1}{2}$ बजे तक यह योग नित्य रहता है।

सोते समय धूप दिखा करके डिब्बी को अच्छी भांति हिला करके तकिए के नीचे रख करके सोते रहें। इस प्रयोग की पहली रात्रि से सातवीं रात्रि तक आपको किसी भी रात्रि को स्वप्न में कौवा दीखेगा और बस आपका प्रयोग सफल हो गया। यदि कौवा न भी दीखे तो भी सात रात्रि तक यह प्रयोग करते रहें। आठवीं रात्रि से आप किसी के भी मन का रहस्य जानने की शक्ति समेट लेते हैं।

इस डिब्बी से लाभ लेने का तरीका यह है कि आप अपने सोने का कमरा एकान्त में करें तथा अकेले ही सोयें। अब आप सोते समय इस डिब्बी को हाथ में लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए इस डिब्बी को एकटक देखते रहें। यह नाटक की भांति होगा। इसके बाद तकिये के नीचे रख करके सो जायें। रात्रि को सोते समय स्वप्न में वही व्यक्ति प्रस्तुत होगा तथा अपने मन का सारा रहस्य प्रस्तुत कर देगा।

पूर्वोक्त प्रयोग स्वप्न में रहस्य जानने का था। निम्नलिखित प्रयोग के प्रभाव से किसी भी व्यक्ति से सोते समय उसके रहस्य उगलवाये जा सकते हैं।

आपने सुना होगा कि लोग सोते हुए बहुत कुछ बक देते हैं। शायद आपने देखा होगा, यदि नहीं देखा तो इस प्रयोग के द्वारा उससे सोते समय उसके रहस्य जान लें।

एक कौवा पकड़ करके उसकी जीभ काट लें। एक मेंढक पकड़ें और उसकी भी जीभ काट लें इन दोनों जीभों को एक तांबे के तावीज में भर लें या तांबे की डिब्बी में भर लें। इस भांति आपके हाथ में रहस्य उगलवाने की डिब्बी या तावीज आ जाता है। आपने जिस तावीज या डिब्बी में यह सामग्री भरी हो, उसे साथ रखें और आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

बोलेगा। आप उसकी बोली को तथा उसकी चेष्टा को समझने का प्रयत्न करेंगे तो आप आश्चर्य में पड़ जाएंगे क्योंकि यह कौवा बहुत से गुप्त भेद प्रकट करता है जो कि आपके लिए लाभदायक होते हैं।

स्वप्न सिद्धि

एक शब्द होता है—टेलीपेथी ! इसका अर्थ होता है किसी दूसरे व्यक्ति के मन की बातों को पढ़ते रहना। इसके प्रयोग तो मैं 'सम्मोहन विज्ञान' में प्रस्तुत करूंगा। यहाँ पर किसके मन में क्या है ? यह जानने का तरीका बता रहा हूँ। इस प्रयोग को करने से आप किसी भी व्यक्ति के मन की बातों को अपने स्वप्न में देख सकते हैं। इसे मैं स्वप्न सिद्धि करता हूँ।

किसी भी मंगलवार के दिन अभिजित योग[1] में एक कौवा पकड़ करके ले आएं। इसे पीने के लिए गुलाब जल के साथ शुद्ध शहद मिला करके दें। इसके अलावा इसे भोज्य सामग्री के रूप में कुछ भी दे सकते हैं। इस कौवे को कुछ दिन आपनें अपनें पास रखना है अतः किसी लोहे के पिंजरे में इसे बन्द कर दें। बताया गया पेय ही उसे पीने के लिए दिया जाएगा। तेरह दिन तक उसे अपने पास रखें फिर तेरहवीं रात्रि को ग्यारह बजे कौवे की गरदन काट दें और उसका पेट फाड़ दें। पेट फाड़ करके सारी सामग्री निकाल कर कौवे का दिल अलग करके सम्भाल लें। कौवे का बाकी सारा सामान किसी एकान्त स्थान में जाकर पृथ्वी में दबा दें। अब आप एक तांबे की डिब्बी में इस दिल को बन्द करके धूप में रख करके दिल को सुखा लें। जब यह सूख जाय तो इस दिल की पंचोपचार से पूजा करके सिन्दूर चढ़ायें। थोड़ी-सी कस्तूरी भी चढ़ा दें इसके बाद इसे नित्य रात्रि को

[1] दोपहर $11\frac{1}{2}$ बजे से $12\frac{1}{2}$ बजे तक यह योग नित्य रहता है।

सोते समय धूप दिखा करके डिब्बी को अच्छी भांति हिला करके तकिए के नीचे रख करके सोते रहें। इस प्रयोग की पहली रात्रि से सातवीं रात्रि तक आपको किसी भी रात्रि को स्वप्न में कौवा दीखेगा और बस आपका प्रयोग सफल हो गया। यदि कौवा न भी दीखे तो भी सात रात्रि तक यह प्रयोग करते रहें। आठवीं रात्रि से आप किसी के भी मन का रहस्य जानने की शक्ति समेट लेते हैं।

इस डिब्बी से लाभ लेने का तरीका यह है कि आप अपने सोने का कमरा एकान्त में करें तथा अकेले ही सोयें। अब आप सोते समय इस डिब्बी को हाथ में लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए इस डिब्बी को एकटक देखते रहें। यह नाटक की भांति होगा। इसके बाद तकिये के नीचे रख करके सो जायें। रात्रि को सोते समय स्वप्न में वही व्यक्ति प्रस्तुत होगा तथा अपने मन का सारा रहस्य प्रस्तुत कर देगा।

पूर्वोक्त प्रयोग स्वप्न में रहस्य जानने का था। निम्नलिखित प्रयोग के प्रभाव से किसी भी व्यक्ति से सोते समय उसके रहस्य उगलवाये जा सकते हैं।

आपने सुना होगा कि लोग सोते हुए बहुत कुछ बक देते हैं। शायद आपने देखा होगा, यदि नहीं देखा तो इस प्रयोग के द्वारा उससे सोते समय उसके रहस्य जान लें।

एक कौवा पकड़ करके उसकी जीभ काट लें। एक मेंढक पकड़ें और उसकी भी जीभ काट लें इन दोनों जीभों को एक तांबे के ताबीज में भर लें या तांबे की डिब्बी में भर लें। इस भाँति आपके हाथ में रहस्य उगलवाने की डिब्बी या ताबीज आ जाता है। आपने जिस ताबीज या डिब्बी में यह सामग्री भरी हो, उसे साथ रखें और आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

जिस पुरुष या स्त्री के मन के भेद को जानना हो तो जब वह सो जाए तो इस ताबीज को उसके हृदय पर रख दें। इसके प्रभाव से कुछ ही क्षणों में यह व्यक्ति बुदबुदाना प्रारम्भ कर देगा और अपने मन के सारे रहस्य खोल देगा। जब आपका मतलब पूर्ण हो जाए तो उस ताबीज को उठा लें। ताबीज के हटाते ही वह बुदबुदाना बन्द कर देगा।

इस प्रयोग के प्रभाव से वह जो कुछ बोला है, इसका उसे स्वयं को भी अनुभव न होगा। आपने यह प्रयोग किया था, ऐसा कभी कहें भी नहीं।

पादुका साधन

कौवे का हृदय, कौवे के नेत्र, कौवे की जीभ लेकर मैनशिल, गेरु, सिन्दूर, कौंच मालती (पुष्प), रुद्रजटा और बिदारीकंद एकत्र करके सारी सामग्री को पीस कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को अपने पांव की तलहटी में लगाने से एक पल में सहस्र योजन जा सकेंगे।

जेब भरी रहें

प्रायः लोग अपनी जेब में पड़ा सारा धन व्यय कर डालते हैं और फिर धन के लिए परेशान रहते हैं। ऐसा कई कारणों से होता है। आवश्यक सामग्री को खरीदने के लिए किया गया व्यय व्यथ नहीं कहलाता परन्तु कुछ लोग आदत से लाचार होने के कारण व्यर्थ ही व्यय करते रहते हैं।

जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब एक कौवा पकड़ करके उसके दाहिने पांव का एक नाखून उखाड़ करके कौवे को छोड़ दें। इस नाखून को ताबीज में बन्द करके जेब में रख लें। जब तक यह तावीज जेब में रहेगा, कभी भी जेब खाली नहीं होगी।

कुश्ती जीतें

यदि कभी अखाड़े में उतरना हो या कुश्ती करनी हो और इस कार्यक्रम में जीत पाने की आशा कम हो या आशा ही न हो तब किसी कौवे को मार करके उसकी चर्बी निकाल लें और उसे अपनी दोनों हथेलियों तथा दोनों पांव के तलुओं में मल लें। इसके वाद अखाड़े में जायें या कुश्ती करें तव अवश्य जीत होती है।

बच्चे के कम बोलने पर

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा जन्म के बाद जव बोलना सीखता है तो कम बोलता है या बोलता ही नहीं। यह स्थिति वड़े लोगों में भी पाई जाती है। यदि कौवे की जूठन इन्हें खिला दी जाए तो यह लोग धाराप्रवाह बोलने लग जाते हैं।

नौकरी के लिए

नौकरी के लिए आवेदन करने पर भी कोई सुनवाई नहीं होती। इस बात से प्रायः हमारे नवयुवक क्षुब्ध रहते हैं। परमात्मा ने जब कोई परेशानी बनाई तो उसके हल भी बनाये। जब कोई रोग बनाया तो उसकी दवा भी बनाई। अतः क्षुब्ध न होकर लाभ उठायें। मन को मजबूत करें। एक कौवा पकड़ें और उसका रक्त प्राप्त करें। अब आवेदन पत्र लिखकर अपने हस्ताक्षर वाली जगह पर कौवे का रक्त लगाकर ऊपर अपने हस्ताक्षर करें। सफलता प्राप्त होगी।

प्रेमिका आकर्षण

किसी शनिवार के दिन एक कौवा पकड़ और घर लाकर किसी पिंजरे में वन्द कर दें। इसे मीठा भोजन खिलायें। मंगलवार की अर्द्धरात्रि को कौवे को काट करके उसका हृदय निकाल

लें। इस हृदय के अलावा बाकी कौवा व्यर्थ समझकर कहीं पर दबा दें। अब आप इस दिल को धूपादि करें और अपनी प्रेमिका के दरवाजे में या उसके रास्ते में गाड़ दें। जब आपकी प्रेमिका उस पर पाँव रखेगी तो वह आपकी तरफ आकर्षित हो जाएगी। आप उसका जैसे चाहें प्रयोग करें। यह प्रयोग स्त्री पुरुष कोई भी कर सकता है।

स्त्री वशीकरण तिलक

एक नर कौवा शनिवार को पकड़ लें और उसकी पीठ के सारे पंख नोच लें। इन पंखों की विधिवत् पूजा करें और फिर इनकी भस्म बना लें। इस भस्म का तिलक लगाकर जिससे पहले मिलेंगे, वही प्यार करने लगेगा।

पुरुष वशीकरण तिलक

शनिवार के ही दिन मादा कौवा पकड़ करके उसकी पूँछ के नीचे वाले पंख नोच करके भस्म बना लें। इस भस्म का जो स्त्री अपने माथे पर टीका करेगी। उससे पुरुष वशीभूत होंगे।

शत्रु नाशक तिलक

काले कौवे का रक्त, काले बकरे का रक्त, काले घोड़े का रक्त तथा काले मुर्गे का रक्त मिला करके माथे पर तिलक लगाएं तथा शत्रु के सामने जायें। इसके प्रभाव से शत्रु भाग जायेगा और जीवन भर आपसे भय खाता रहेगा।

सफलता दायक रस्सी

जीवन में प्रत्येक क्षेत्र की सफलता प्राप्त करने के लिए आप को यह प्रयोग करना होगा। एक ऐसा स्थान चुनें जहाँ पर आपको काफी सारे कौवे मिल सकें। अब आप मीठे चावल

बनाकर उस स्थान पर जायें और आस-पास घना फैला दें। इसे खाने के लिए कौवे आ जायेंगे। स्थान कम तथा कौवे अधिक होने के कारण एक दूसरे से लड़ेंगे और भीड़ में जबरदस्ती घुस कर खाने का प्रयास करेंगे। आप खड़े होकर देखते रहें। जब चावल समाप्त हो जायेंगे तो यह सारे कौवे उड़ जाएंगे। और वहां पर रह जाएंगे कुछ पंख जो कौवों के होंगे। उन्हें समेट कर ले आयें।

अगले दिन पुनः इसी क्रिया को दोहरायें और फिर बचे हुए पंख उठा लाएं। इस भांति सात दिन तक लगातार एक ही निश्चित समय पर यह प्रयोग करना होगा।

आठवें दिन फिर मीठे चावल ले जायें और छितरा दें परन्तु यह विस्तृत फैलाएं ताकि कौवे आराम से खा सकें। जब कौवे खाने लगें तो हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करें और कहें, 'मेरा अन्न तुम्हारे लिए तब तक हराम रहेगा। जब तक मैं असफल रहूँगा।' यह कह कर आप अपने घर वापस आ जायें।

घर आकर सातों दिनों के समेटे हुए पंख हाथों से मसल-मसल करके मुलायम करें और फिर एक काला धागा लेकर उसके साथ पंख लपेटते हुए मोम लगा-लगा कर एक रस्सी बना लें। यह सारे पंख इस रस्सी में आ जाने चाहिएं। जब रस्सी बन जाये तो उत्तर दिशा की तरफ रख करके इसे धूप दीप करें, एक नारियल लेकर अपने ऊपर से सात बार घुमाएं और फिर इस रस्सी के सामने उसे फोड़ दें। इस नारियल की गिरी के छोटे-छोटे कतरे करके दसवें दिन फिर वहीं कौवों को डाल आएं। अब आप इस रस्सी का प्रयोग करें और इसके प्रभाव से चमत्कृत हो जाएंगे।

जब आप किसी अधिकारी से मिलने जायें तो इस रस्सी को

दाहिना भुजा पर धारण कर लें। आप जो कहेंगे, वह अधिका वही करेगा।

किसी भी लाभ के हेतु प्रार्थना पत्र लिखते समय दाहि भुजा पर पुनः इसे धारण कर लें इसके प्रभाव से आपके आवे पत्र पर अवश्य ध्यान दिया जायेगा।

यह रस्सी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सफलता दिल एगी। इस रस्सी को सदा शुद्ध रखना ही लाभकारी होगा।

अज्ञात निधि

काले कौवे की जीभ लेकर आक की रुई में लपेट करके में डाल करके दिया जलायें और उसका काजल काँसे के पा पर बनायें। इस काजल को नेत्रों में लगाने से पृथ्वी में छु अज्ञात निधि का दर्शन होता है।

कन्या की शीघ्र शादी

किसी कन्या की शादी के प्रयासों में सफलता न मिल रही तो कन्या अपनी शादी के लिए यह प्रयोग करे।

अपनी किसी ऐसी सहेली के घर मेहमान बन कर जा जिसकी शादी अभी-अभी हुई हो। वहां पर जाते हुए अपने व ले जाना भूल जाये। उसके घर जाकर रात्रि को भी ठहरे। प्र काल जब सहेली रसोई में चाय पानी के लिए जाए तो शीघ्र कर सहेली के सोने वाले कमरे में जाये। वहां जाकर वह व तलाश करे जिसे कि सहेली ने रात्रि में विषय भोग करने के ब प्रयोग किया था। वह वस्त्र गन्दा होगा। उससे घिन न बल्कि उस वस्त्र को चुरा ले। सहेली के दिए वस्त्र पहने हुए त वह गंदा वस्त्र लेकर घर आ जाये। घर आकर रात्रि को एक

में कमरा भली भांति बन्द करके अपना शृंगार करे तथा सारे वस्त्र पहनकर अपने बिस्तर पर बैठ जाये। वह वीर्य वाला कपड़ा लेकर गोल-गोल लपेट ले। इसे पुरुष की इन्द्री की भांति बना करके एक पीढ़े पर रखे। इसकी पूजा करे और भावना करे कि यह कामदेव ही है। नीचे दिए गए मन्त्र का जप करे तथा सारे वस्त्र उतार करके इस इन्द्री बने वस्त्र को उठाकर अपनी योनि से समीप रखे। योनि तथा वस्त्र में थोड़ी दूरी रहनी चाहिए। इस दूरी को देखते हुए जप करती रहे तथा इस इन्द्री बने वस्त्र को धीरे-धीरे अपनी योनि की तरफ सरकाती जायें। इस समय आप बेहद कामुक हो जायें। जब आपकी कामुकता बढ़ जाये तब इसे उठाकर चूमें चाटें तथा इसे देखकर कहे—'हे पुरुषेन्द्रिय! मेरा पुरुष मुझसे मिला नहीं तो त भी योनि से दूर हो जा।' ऐसा कहकर इसे तकिए के नीचे रखकर सो जाये। रात्रि को स्वप्न में कामदेव आकर आपको सन्देश देंगे। प्राप्त हुए सन्देश के अनुसार करके लाभ उठायें।

मन्त्र—"ॐ कामदेवाय नमः मम मैथुनार्थे पूर्ण पुरुष देही देही स्वाहा।" □

घोड़े का नाल

यह बड़े काम की वस्तु है। किसी शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल प्राप्त करें। इसे घर के द्वार पर लटकाने से ऊपरी शिकायत दूर हो जाती है। दृष्टि दोष नहीं होता। □

लोहे का छल्ला

यदि काले घोड़े की नाल मिले तो लुहार से इसी नाल का एक छल्ला बनवावें। उसे मध्यमा अंगुली में पहन लें। इसके

अनेकों लाभ होते हैं। इसके पहनने से शनि ग्रह की शान्ति होती है, कोई भी ऊपरी अलावला हमला नहीं करती। गुर्दे की पथरी समाप्त हो जाती है। एक गिलास पानी में इस छल्ले को डाल कर पानी पीने से वायु प्रकोप शान्त होता है। □

वीर्य स्तम्भन

यहाँ पर वीर्य स्तम्भन के कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। हमारे तन्त्रों में यह प्रयोग मनुष्य के लाभ के लिए कहे गए हैं।

कोई पुरुष किसी का शुभाकांक्षी हो या न हो परन्तु सम्भोग करते हुए संसार का प्रत्येक पुरुष अपनी सहयोगिनी को सन्तुष्ट रखना चाहता है। अतः इस विषय में प्रत्येक पुरुष प्रत्येक स्त्री का शुभाकांक्षी कहा जाएगा। विषय भोग में स्त्री को आनन्द तभी आएगा जब पुरुष सबसे पहले स्त्री को स्खलित करे। होना तो यही चाहिए। परन्तु बहुत कम ही ऐसा हो पाता है। यदि आपको लगे कि आपने वीर्य स्तम्भन करना है अर्थात् पहले स्त्री को स्खलित करना है तो निम्नलिखिन उपायों में से कोई भी प्रयोग करें।

ऊँट की हड्डी—कहीं से ऊँट की हड्डी प्राप्त करें और उसमें छेद कर लें। इस छेद में काला धागा डालकर सिर पर बाँधने से वीर्य स्तम्भित होता है।

सर्प—काले रंग वाले दुन्दुभी सर्प की हड्डी को कमर में धारण करने से वीर्य स्तम्भित होता है।

छछून्दर—एक नर छछून्दर की हत्या करें और उसका पेट फाड़ करके उसके अण्डकोश निकाल लें। इन्हें तांबे के ताबीज में भर करके स्त्री से सम्भोग करने पर वीर्य स्तम्भित होता है और स्त्री स्खलित होकर अपने पति पर न्योछावर रहती है।

कौड़ी—रविवार के दिन घोड़े तथा खच्चर की पूंछ के बाल तोड़ कर ले आयें। एक कौड़ी में छेद करके इन बालों में पिरो इस कौड़ी को भुजा पर धारण करके स्त्री सेवन करने से स्त्री को असीम सुख प्राप्त होता हैं।

खरगोश—एक खरगोश पकड़कर उसका पेट काट करके उसके अण्डकोश निकाल लें। इन्हें तांबे के तवीज में भर करके कमर में बांधने से वीर्य स्तम्भित होता है।

छिपकली—यदि छिपकलो की पूंछ का अगला हिस्सा काट करके सफेद धागे में लपेट करके कनिष्ठिका पर बांधा जाये तो वीर्य क्षरित नहीं होता। □

पुरुष वशीकरण

यह प्यार मौहब्बत की बातें हैं। प्राय: प्रेमी अपनी प्रेमिका को केवल यौन सुख के लिए प्रयुक्त करते हैं और फिर छोड़ देते हैं। यह स्थिति बड़ी ही विकट होती है। प्रेमिकाओं को चाहिए कि कुछ भी करने से पहले अपने प्रेमी का निश्चय करे। यदि उसी युवक को प्रेमी बनाना ही लक्ष्य हो तो यह प्रयोग करें।

उस युवक के पाँव (दाहिने) के नीचे की धूल लेकर अपने घर आ जाएँ। घर आकर घर से मकड़ी का जाला किसी रूमाल में उतार लें। वह पाँव की मिट्टी इस जाले के ऊपर रख कर जाला उस पर फैला दें। इस रूमाल को काले धागे से लपेट कर अपने पास रखें। इसके प्रभाव से वह युवक आपसे बच कर कहीं नहीं जायेगा। आप समझ सकते हैं कि इस प्रयोग का अर्थ क्या हुआ? □

बिल्ली की आँवर

जब कोई मादा जीव बच्चा उत्पन्न करता है तो वह बच्चे को जन्म देने के बाद आँवर भी त्यागता है ; यह नियम मनुष्य पर भी लागू होता है। इस आँवर को जेर भी कहते हैं। यह अत्यन्त जहरीली होती है। यदि इसका निष्कासन न हो पाए तो जीव के प्राण जाने का भय बन जाता है।

आप समझ गए होंगे कि आँवर कितनी खतरनाक होती है और यह कुदरत का करिश्मा ही कहा जायेगा कि इस आँवर को बिल्ली खा जाती है। तन्त्र प्रयोग में केवल बिल्ली की आँवर ही प्रयुक्त होती है और इसे ही बिल्ली खा जाती है। यह आँवर भी कुदरत का एक प्रसाद है। यदि किसी को बिल्ली की आँवर मिल जाय तो उसके दुर्दिन समाप्त हो जाते हैं। इसका लाभ तभी होता है, जब ताजा ही और स्वयं ही प्राप्त किया जाए। यूँ तो यह बाजार में भी बिकती है। परन्तु मेरी समझ से वह हमारे लिए व्यर्थ ही है।

एक उदाहरण के द्वारा इस बात को समझें-

एक बार मैं एक दुकान पर गया और उससे कुछ बातें करते हुए मैंने देखा कि वहाँ पर कुश का बाँदा पड़ा है। पूछा कि इसका क्या करोगे ? उसने बताया कि चार महीने से रखा है और अब बेचेंगे। मैंने कहा कि जब से यह पड़ा है तब से आपको क्या अनुभूतियाँ हुई ? उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया।

आप जानते होंगे कि कुश का बाँदा धन प्राप्ति में सहायक होता है परन्तु उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

क्योंकि वह यथाविधि प्राप्त ही नहीं किया गया। मान लिया जाए कि वह यथाविधि प्राप्त भी किया गया तो भी उसकी गोपनीयता समाप्त होने से उसका प्रभाव समाप्त हो गया।

अब आप सोचेंगे कि गोपनीयता कैसे समाप्त हुई ? इसे आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि उसने कितने ग्राहकों को, शुद्ध अशुद्ध हाथों से खरीदने के लिए दिया होगा। अतः सदा स्मरण रखें कि तन्त्र में सफलता की पहली शर्त ही गोपनीयता है। यह शर्त केवल मार्गदर्शक पर लागू नहीं होती। □

पतंग

जी हाँ। यह वही पतंग है जिसे बच्चे उड़ाते हैं। इस पतंग के जन्म की कहानी भी बड़ी अजीब है और इसके प्रयोग भी बड़े अजीब हैं। हर बात का कोई-न-कोई अर्थ होता है अतः पतंग उड़ाने का भी एक अर्थ है। जो व्यक्ति पतंग उड़ाता है वह अपने दुर्दिन उड़ाता है। इसे उड़ा करके छोड़ देना चाहिए परन्तु लोग इसे लूटने और बचाने के चक्कर में रहते हैं। इसी कारण इसका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता।

पतंग उड़ाता हुआ व्यक्ति यदि पतंग उड़ा कर धागा तोड़ कर छोड़ दें, यह पतंग हवा के सहारे उड़ती हुई अन्यत्र चली जाती है। मान्यता है कि इस पतंग के साथ व्यक्ति का दुर्भाग्य उड़ता है और धागा तोड़कर छोड़ देने का अर्थ है कि पतंग के साथ उसका दुर्भाग्य उड़ जाय। यह पतंग अपने साथ सदा ही दुर्भाग्य लेकर उड़ जाती हैं अतः इसे लूटने का प्रयास नहीं करना चाहिए। □

मोर का पंख

माना जाता है कि यही एक ऐसा पक्षी है जो मैथुन नहीं करता। अतः पवित्रता का तथा शुद्धता का प्रतीक है। इसी कारण इस पक्षी के पंखों से झाड़ा आदि करने का काम लिया

जाता है। इसके पंख की एक और विशेषता होती है कि जहाँ पर इसके पंख होते हैं वहाँ पर सर्प प्रवेश नहीं करता। हमारे तंत्र में मोर का पंख महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर शान्त नहीं होता, बल्कि संसार सृष्टि में सहायक होता है। मोर पंख में दीख रहे सितारे को काट करके खरल में पीस लें और इसे गर्भवती स्त्री पहले दो मास में तीन तीन दिन खाये तो उसे पुत्र पैदा होता है। □

मारण प्रयोग

१. यदि किसी के ऊपर सर्प की हड्डी का चूर्ण करके डाल दिया जाएगा तो वह व्यक्ति मर जाएगा।

२. यदि मनुष्य की हड्डी का चूर्ण करके पान में रखकर जिसे खिला देंगे, वह शीघ्र मरेगा।

३. यदि काले धतूरे का चूर्ण तथा चिता की भस्म मिलाकर मंगलवार के दिन जिसके ऊपर डाल दिया जायेगा। वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।

४. यदि विष का चूर्ण तथा उल्लू की विष्ठा मिला कर जिस पर डाल दी जाएगी वह अति शीघ्र काल का ग्रास बनेगा। □

रजस्वला वस्त्र

आजकल रजस्वला वस्त्र की कोई भी गोपनीयता नहीं रही। जो जहाँ चाहता है वहीं पर इस वस्त्र को फेंक देता है। इस वस्त्र का अर्थ होता है स्त्री जवानी से लेकर चालीस वर्ष तक की है अतः इस स्त्री का प्रयोग करने के लिए यह वस्त्र बहुत सहयोग करता है। एक गुप्त अनुष्ठान करने पर जिस स्त्री का यह वस्त्र होता है उस वस्त्र के द्वारा वह स्त्री न चाह

कर भी खिची चली आती है। मैं इस भांति का प्रयोग जानबूझ कर नहीं दे रहा। बल्कि स्त्रियों से कहना चाहता हूँ कि वह इस कपड़े को व्यर्थ समझ कर इधर-उधर न फेंक दिया करें, क्योंकि इस वस्त्र के द्वारा आपको कहीं भी कोई भी तांत्रिक प्रयोग करके खींच सकता है। □

दिल का डर

कभी-कभी व्यक्ति को अकारण ही डर लगने लगता है। वह आसपास अनजानी आकृतियों का भ्रम देखता है। उसे लगता है कि उसे कोई मार न डाले या कोई दुःखद घटना होने वाली है। उसके शत्रु बहुत अधिक हैं जो कि उसे हानि पहुँचा रहे हैं तो शनिवार के दिन सवा पाव काले तिल, काले कपड़े में बाँधकर अपने ऊपर से सात बार घुमाकर नदी में फेंक आएँ। एक तांबे के लोटे में शुद्ध एवं स्वच्छ जल भरके, रात्रि को सोते समय अपनी चारपाई के सिर के तरफ नीचे रख दें। इस जल में गुड़हल का पुष्प, थोड़ा-गुड़ डालकर ढक करके रखें, प्रातः स्नान करके वह लोटा उठा कर उसमें रखे, जल एवं सामग्री को सूर्य देवता की तरफ मुख करके अर्पण करे अर्थात धीरे-धीरे जल गिरा दें। सोमवार को सुनार के पास जाकर एक तोला चाँदी का चन्द्रमा बनवाकर लाएँ। इसे दूध से धोएँ और वह दूध कुत्ते को जो कि काला हो, पिला दें। सफेद धागे की सात तारें मिलाकर धागा बटें एवं उस धागे में चन्द्रमा डाल कर गले में पहन लें तो भगवद् कृपा से दिल को मजबूती प्राप्त होती है तथा बहुत से अनिष्ट स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं। □

भूतादिक का भय

आजकल भूत आदि का लगना एक सामान्य-सी बात हो गई

है। इस परेशानी के कारण सर्व सामान्य को भी ओझा आदि के चक्कर में पड़ जाना पड़ता है। जाते हैं लाभ के लिए और उसके चक्कर में फंस जाना पड़ता है और इसी कारण धन एवं शरीर की हानि होने लग जाती है। यह एक गम्भीर विषय है। आज आधुनिक युग में आदमी बहुत व्यस्त हो गया है और इसी कारण कभी-कभी वहम का भूत भी हो जाता है। आश्चर्य है कि ओझा लोग मुँह मांगे पैसे लेकर भी रोग ठीक नहीं कर पाते। अस्तु भूत असली हो या नकली निम्न उपाय करें :—

रविवार को स्नान करके तुलसी के आठ पत्ते, काली मिर्च आठ दाने तथा सहदेवी बूटी की जड़ को काले कपड़े की एक थैली बनाकर, उसमें भर लें तथा इसी को तावीज की तरह काले धागे के द्वारा गले में धारण कर लें तो लाभ हो जाता है। □

समस्या समाधान

आजकल विज्ञान का युग है तो यह समस्याओं का भी युग है। लोग इसे कलयुग कहते हैं। आप इसे समस्या युग भी कह सकते हैं और समस्या का निपटारा हो जाए अर्थात अन्धे के हाथ बटेर लग जाए तो कहना ही क्या ? सभी समस्याओं की बात तो मैं कर नहीं रहा परन्तु कुछ ऐसी समस्या भी होती हैं जिसका कोई हल नहीं निकल पाता तो दुखी होने से तो लाभ होगा नहीं। हाँ, यह प्रयोग करके देखें—बरगद के वृक्ष से शनिवार की संध्या को एक स्वच्छ पत्ता तोड़ लाएं और उस पत्ते पर अपनी समस्या लिख दें। लाल धागा लेकर अपने पाँव से सिर तक का नाप कर तोड़ लें और नापे धागे को पत्ते पर लपेट कर जल में प्रवाहित कर दें।

यह अति उत्तम प्रयोग है। देखने में तो यह आया है कि

एक बार ही में लाभ हुआ परन्तु आपको कोई कमी लगे तो यह प्रयोग सात बार अर्थात् सात शनिवारों को करें। □

प्रेत बाधा

आज जबकि विज्ञान बहुत उन्नति कर चुका है और स्थिति यह है कि मनुष्य के कदम चाँद की धरा को भी स्पर्श कर आए हैं। शिक्षा का चारों तरफ बोलबाला है। फिर भी प्रेतादिक की बाधा से त्रस्त लोग बहुत बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं। कभी-कभी इस बाधा के कारण सन्तान आदि का न हो पाना भी दृष्टिगोचर होता है। इसके समाधान के लिए एक लाल कपड़ा लेकर उसमें थोड़ा-सा गुड़, सिन्दूर, ताँबे का पैसा तथा काले तिल रखकर वस्त्र की पोटली-सी बना करके बाधा ग्रस्त रोगी के ऊपर से सात बार वार करके किसी रेलवे लाईन के पार फेंक कर बिना पीछे मुड़े ही वापस चले आओ। प्रयास यही करें कि पोटली से सामान बाहर न गिरें तथा जाते समय किसी से वार्ता न करें। यह प्रयोग मंगलवार या शनिवार को संध्या को करें जब दोनों समय एक हो रहे होते हैं। सामग्री में सिन्दूर का ही प्रयोग करें, कुमकुम का नहीं। □

निरन्तर धन हानि होने पर

कड़ी मेहनत और पूर्ण योग्यता होते हुए भी कभी-कभी कारोबार में धन हानि होने लग जाती है। ऐसी स्थिति में कारणों पर ध्यान देकर कारण दूर करना चाहिए और यह करना चाहिए।.

रविवार को रात्रि में सोते समय एक लोटे में जल भरें तथा उसी में थोड़ा-सा दूध मिलाकर ढक लें। अपने सिरहाने की

तरफ नीचे रखकर सो जायें। प्रातः स्नान आदि करके वह लोटा उठाकर किसी कीकर के वृक्ष के पास आकर लोटे का जल वृक्ष को चढ़ा दें। इस भाँति सात सोमवार करें। प्रायः इस प्रयोग से दु:खित जनों को लाभ हुआ है। □

गर्भ निरोध हेतु

आज बढ़ती मंहगाई का युग है। परिवार को सीमित रखकर ही भविष्य की जनता को सुखद बनाया जा सकेगा। इस कार्य में कई तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं। आगे या अभी सन्तान न हो इसके लिए सरसों की जड़ को स्त्री अपने सिर पर या चुटिया आदि में छुपा कर धारण करे। इसके बाद पति से विषय भोग करे तो गर्भ न ठहरेगा। जब गर्भ ठहराना हो तो सरसों की जड़ खोलकर नदी में प्रवाहित कर देनी चाहिए। □

शत्रु का बुद्धि स्तम्भन

आज का युग ही नहीं बल्कि प्राचीनतम समय से ही मनुष्य, मनुष्य से बैर रखता आया है। यह शायद विधाता का ही कोई प्रकोप होगा कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं को चतुर समझ कर दूसरों को कुछ भी नहीं समझता। इस समस्या को हल करने के लिए निम्न प्रयोग करें :—

जब शत्रु अत्यन्त दुःखी कर रहा हो तो उसकी बुद्धि का स्तम्भन कर देना चाहिए। इसके लिए चमार और धोबी की नाद का मैल लेकर चाण्डाली स्त्री के मासिक का रक्त लगा वस्त्र लेकर एक पोटली में बाँध लें और जब शत्रु को राह पर आता या जाता हुआ देखें तो वह पोटली शत्रु के पाँव की तरफ फेंक दें तो शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जाएगी।

(२) उपरोक्त क्रिया न कर पाने की स्थिति में या शत्रु के सामने न आना चाहें तो मासिक के रक्त के वस्त्र पर गोरोचन से शत्रु का नाम लिखें। किसी घड़े में वह वस्त्र डालकर घड़े का मुख बन्द करके एकान्त में धरती में गाड़ दें तो भी शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जाएगी। □

पति वश में करें

यह माना जाता है कि पुरुष को अपनी सन्तान तथा दूसरे की स्त्री अत्यन्त सुन्दर तथा प्यारी लगती है। इसी कारण पुरुष वर्ग पराई स्त्रियों के प्रति आसक्त रहता है। घर में कितनी भी सुन्दर पढ़ी-लिखी, सुशील पत्नी क्यों न हो, कभी-कभी पुरुष उसकी अवहेलना करके इधर-उधर के चक्कर में रहता है। इस कारण पत्नी की मान-हानि होती है और घर की शान्ति भंग हो जाती है। ऐसी स्थिति में पत्नी अपने मासिक के रक्त की तीन बूंदें पीने की सामग्री में डालकर पति को पिला दे तो पति उसका गुलाम हो जाता है परन्तु इसका प्रभाव चिरस्थायी नहीं होता अतः प्रत्येक मास यह क्रिया करनी पड़ती है।

(२) मासिक के प्रारम्भ से अन्त तक योनि में एक लौंग रखा जाए और मासिक की समाप्ति पर वह लौंग पान में रख कर पति को खिला दिया जाए तो सारी उम्र के लिए पति गुलाम हो जाता है। इसका प्रभाव शीघ्र होता है तथा सारी उम्र तक रहता है। □

बवासीर

यह एक तकलीफदेह रोग है और गुदा द्वार पर प्रकट होता है। यह दो तरह का होता है—(१) बादी, जिसमें केवल तकलीफ

होती है, (२) खूनी, इसमें तकलीफ भी होती है और रक्त भी गिरता है। गुदा द्वार पर कुछ मस्सों के रूप में यह दिखाई देता है। इसके कारण रोगी का उठना-बैठना तक असम्भव हो जाता है। पाखाने जाने के नाम से तो रोगी की हालत और भी बिगड़ती है क्योंकि पाखाना करने से तकलीफ बहुत बढ़ जाती है। इस रोग में रोगी को रसेदार भोजन खाना चाहिए तथा पेट का साफ होना जरूरी है। इस तकलीफदेह बीमारी को भगाने के लिए सफेद तथा लाल धागे को मिला कर बट लें। मंगल के दिन पाँव के दोनों अंगूठों पर यह धागे लपेट कर बाँध दें। इस प्रयोग को करने से प्रायः यह रोग शनैः शनैः समाप्त हो जाता है। □

बीमारी

किसी व्यक्ति को बहुत समय से कोई बीमारी चली आ रही हो और दवा आदि से लाभ न हो रहा हो तो शनिवार की रात्रि को बेसन की एक रोटी बनावें और उस पर सरसों का तेल चुपड़ कर रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर उतारें। इसके बाद काले कुत्ते को वह रोटी खिला दें। सावधानी यह रखें कि कुत्ता काला ही हो तथा केवल कुत्ता ही हो, कुतिया नहीं। □

जुलपित्ती

यह एक ऐसा रोग है जो अचानक पैदा होता है और अचानक लुप्त भी हो जाता है। कोई निश्चित समय रोग वृद्धि का नहीं होता। इस रोग के कारण शरीर खुजलाता है और खुजलाने पर चकत्ते आदि पड़ जाते हैं। इसे अंग्रेजी में आर्टिकेरिया कहा जाता है। गाँव-देहात में इस रोग को शान्त रखने के लिए गे

खाया जाता है। डाक्टरी चिकित्सा में मल्हम से मालिश की जाती है। जो भी हो यह रोग एक अदृश्य शत्रु की तरह दुःखी करता रहता है। कुछ स्थानों पर देखने में आया कि जब रोग आक्रमण करता है तो लोग, अपनी सगी भाभी के पेटीकोट (साए) को जिसे कि धोकर सूखने के लिए डाला जाता है को उठाकर अपने शरीर को उससे रगड़-रगड़ कर साफ करते हैं और फिर पेटीकोट को वहीं फेंक कर हट जाते हैं। इस क्रिया पर किसी की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए। एक और महत्त्वपूर्ण प्रयोग है जिसे कि ध्यान से करना चाहिए। जब यह रोग आक्रमण करे तो उस समय युवा भंगिन जब गंदा आदि उठा रही हो तो जाकर उससे लिपट कर अपनी छाती से लगा कस कर भींच लें तो भी रोग से छुटकारा मिलता है। यहाँ पर अलग-अलग प्रयोग कहे हैं, जैसी उपलब्धि हो उनका प्रयोग करें। स्मरण रहे रखें कि जिसके साथ या जिसके वस्त्र से क्रिया की जाती है उसे चिढ़ना चाहिए। वह प्रसन्न न हो। जितना तेजी से वह चिढ़ेगा, क्रोध करेगा उतनी ही शीघ्रता से यह दुष्ट रोग शान्त होगा। भंगिन का युवा होना आवश्यक है। भाभी सगी ही होनी चाहिए। इन सब बातों का सावधानी से विचार करें। □

गर्भपात

जब किसी गर्भवती स्त्री को गर्भ के गिर जाने का खतरा लगे तो वह कुम्हार के हाथों में लगी मिट्टी मंगवाए। उस मिट्टी को शहद में घोल कर जीभ पर रख कर सवा पाव बकरी का दूध पी ले तो गिरता हुआ गर्भ भी ठहर जाता है।

निद्रा स्तम्भन

जब किसी को, किसी भी कार्य के कारण रात्रि को जागना पड़े तो केटहली की जड़ को शहद में घिस कर केवल सूंघ लें तो उस रात्रि को लाख प्रयत्न करने पर भी निद्रा नहीं आएगी।

मेघ स्तम्भन

वर्षा तो जीवन है और इसका स्तम्भन क्यों ? परन्तु बहुत अधिक वर्षा जब प्राणलेवा बन जाए तो दो हांडियों को लेकर उनमें श्मशान का अंगारा या कोयला भर दें। इसके बाद दोनों हांडियों का मुख एक दूसरे से जोड़कर एकान्त में गाड़ दें तो वर्षा रुक जाती है।

नजर

कहते हैं नजर तो पत्थर को भी फोड़ देती है इसलिए यह एक खतरनाक बात हुई। नजर का लगना भी एक आम बात है। इसके उपचार हेतु हर जगह सात मिर्चें (डंडी वाली) लेकर रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर जला दी जाती हैं। इसके जलने से नजर हो तो उतर जाती है। इसी भाँति अन्य भाँति भाँति के तरीके प्रयोग में लाए जाते हैं। सम्भव हो तो मंगल या शनिवार को हनुमान जी का दर्शन करें। प्रणाम करके उनके दाहिने कंधे से सिंदूर लेकर माथे पर टीका लगाएं तो पत्थर फोड़ दृष्टि भी समाप्त हो जाती है। इस प्रयोग के लिए प्रतिमा पर सिंदूर चढ़ा होनी चाहिए। तभी ये प्रयोग किया जा सकता है।

सफेद आक

यह एक प्रसिद्ध पौधा है। इसे हमारे यहाँ का बच्चा बच्चा जानता है। शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहाँ पर यह न मिलता हो और जो मिलता है, जिसे सफेद आक समझते हैं, वह पौधा यह नहीं है। प्रायः प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है। इसे तोड़ने पर काफी दूध निकलता है। यह दूध जहरीला होता है। माना जाता है कि यदि यह दूध नेत्रों की पुतली पर लग जाये तो नेत्र खराब हो जाते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं परन्तु सफेद पर कत्थई रंग के दाग दिखाई पड़ते हैं। जिस सफेद फूल पर किसी भी अन्य रंग का दाग हो तो उसे सफेद आक नहीं कहते।

इसे मदार भी कहते हैं। इस पर केवल सफेद पुष्प होने पर सफेद मदार या सफेद आक कहते हैं। यह पुष्प शिवार्चन करने पर शिवलिंग पर चढ़ाने से शिव जी अत्यधिक हर्षित होते हैं। अतः इसे शिवाह्वय भी कहते हैं। इस पर सफेद फूल होते हैं इसलिए इसे श्वेत आक भी कहते हैं। यह पौधा जिस द्वार पर रहता है वह द्वार अभेद्य हो जाता है। अर्थात किसी भी भांति से शत्रुगण उस द्वार के भीतर रहने वालों को हानि नहीं पहुँचा पाते अतः इसे राजार्क भी कहते हैं। यह पौधा गणपति का स्वरूप है शायद इसीलिए इस पौधे की जड़ में स्वतः ही गणेश जी की प्रतिमा बन जाती है। अतः इसे गणरूपक भी कहते हैं। गणरूपक को कोई-कोई गणरूपी भी कहते हैं। इसे सदा पुष्प भी कहते हैं क्योंकि इसके ऊपर सदा पुष्पों की बहार छाई रहती है, इसी भांति इस पौधे को इसके गुणों के अनुसार विभिन्न नामों से जाना जाता है परन्तु प्रचलित नाम सफेद आक ही है।

यह पौधा जहां रहता है, वहाँ लक्ष्मी का अटूट भंडार रहता है। कभी सर्प भी देखे जाते हैं। यह एक दुर्लभ जाति का पौधा

है, जिसकी तलाश में कीमियागिरी का कार्य करने वाले लगे रहते हैं। क्योंकि इस पौधे की सहायता से पारे का सोना बना लिया जाता है। यह सत्य है कि यह दुर्लभ है परन्तु मैंने इसे प्रायः हर नगर में ही कहीं न कहीं देखा है। प्रस्तुत विषय पर बात करते हुए मैं इस पौधे के तांत्रिक प्रयोग बता रहा हूँ।

तरुण रसायन

जिससे शरीर की पुष्टि हो उसे रसायन कहते हैं। रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग में सफेद आक की जड़ प्राप्त करें। घर लाकर इसे दूध से धोएँ। सूर्य उपासना करके प्रतिदिन प्रातःकाल के समय खाली पेट ही इस जड़ का चूर्ण करके गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह प्रयोग सात दिन ही करना है। इतने ही प्रयोग से वृद्ध भी तरुण हो जाता है।

रक्षा

रविवार को जब पुष्य नक्षत्र हो तब इस वृक्ष की जड़ को खोद करके ले आयें और धूप दीप करके धारण कर लें। अब आपकी रक्षा आक की यही जड़ करेगी। आप कहीं पर भी रहें कहीं पर भी जाएँ। आपको कोई भी ऊपरी अलाबला छू भी नहीं सकेगी। माना तो यहाँ तक जाता है कि इस जड़ के दर्शन मात्र से ही भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचादि पलायन कर जाते हैं।

तिलक वशीकरण

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र का संयोग होने पर इस पौधे की जड़ ले आएं। गाय का घी, गोरोचन के साथ इस जड़ को मिला करके लेप बनायें तथा माथे पर तिलक लगायें। इस तिलक को लगाने वाले के प्रभाव में लोग तो क्या त्रिलोक भी आ जाता है।

सफेद आक की कलम

यथाविधि इस पौधे की टहनी तोड़ करके सुखा ले तथा उसकी कलम बना करके यन्त्र विधान में दिया गया यन्त्र लिख कर सिर में धारण करें तो देवता भी मोहित होते हैं।

इच्छा पूर्ति

किसी भी रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब विधिवत् सफेद आक की जड़ उखाड़ लाइए। यह जड़ कुछ मोटी होनी चाहिए। यह जड़ उखाड़ते समय निम्नलिखित तथ्य स्मरण रखें।

उत्तर दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से वशीकरण, धन प्राप्ति तथा लक्ष्मी साधना होती है।

पूव दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से मान सम्मान की वृद्धि, राजा की कृपा, उन्नति तथा सफलतायें प्राप्त होती हैं।

दक्षिण दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से रोग, शोक का नाश होता है शत्रु की मृत्यु होती है।

पश्चिम दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से सभी विपक्षियों का सौभाग्य समाप्त हो जाता है।

अब आप जड़ की लकड़ी में गणेश जी की तस्वीर बनाय। प्रतिमा बना सकें तो अति उत्तम रहेगा।

प्रतिमा बनाने के पश्चात् प्रतिमा की विधिवत् पूजा करें। यह प्रतिमा एक अंगूठे से बड़ी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि घरों में एक अंगुष्ठ प्रमाण से बड़ी प्रतिमा का पूजन नहीं किया जाता। पूजन काल में लाल कनेर के फूल गणेश जी को अर्पित करें, इस पूजन को महीना भर करना होगा। इस काल में हल्के भोजन करें तथा स्त्री सेवन न करें। इस पूजन काल में **ॐ गंणेशाय नमः** का जाप करें।

'ॐ पंचातकं ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' बोल करके गणेश जी का पूजन करें।

'ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐ ह्रीं फट स्वाहा' बोल करके गणेश जी की पूजा करने के बाद हवन करते हुए आहुति दें। इसके प्रभाव से मन की इच्छा पूर्ण होती है। हवन करते हुए लाल कनेर के पुष्प, शहद तथा शुद्ध घी की आहुति देनी चाहिए।

'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धि करि ह्रीं नमः' का जप करते हुए लाल कनेर का पुष्प बहती हुई नदी में डाल दें।

वीर्य स्तम्भन

यदि किसी व्यक्ति के पास एक से अधिक स्त्रियाँ हों तो सफेद आक की जड़ को कमर में बाँध करके उनसे सम्भोग करे तो उसे दस स्त्रियाँ भी कम रहती हैं अर्थात वह एक ही बार में दस स्त्रियों को सन्तुष्ट कर सकता है। इस प्रयोग के प्रभाव से वह समस्त स्त्रियाँ जिनसे कि मैथुन क्रिया था आजीवन वशीभूत रहती हैं।

यदि किसी को अनेकों स्त्रियों ने उसके पुरुषत्व को चुनौती दी हो तो वह व्यक्ति सफेद आक की जड़ तथा कमल का पत्ता कमर में धारण करके उनसे मैथुन करे तो सभी को सन्तुष्ट करके स्वयं सौ स्त्रियों से भी पराजित नहीं होगा।

तिलक

१. सफेद आक की जड़ को बकरी के मूत्र में घिस करके माथे पर तिलक करें तो देखने वाले वशीभूत होते हैं।

२. सफेद आक की जड़ को पीस करके उसमें अपना वीर्य मिला करके माथे पर तिलक करें तो देखने वाले विपरीत लिंगी उससे सम्भोग की कामना करते हुए बेचैन होकर प्रस्तुत होते हैं।

सौभाग्यशाली

यदि कोई व्यक्ति अपनी नाभि पर कमल का पत्ता तथा दाहिनी भुजा पर सफेद आक की जड़ धारण करे तो उसके सौभाग्यशाली बन जाने के विषय में कोई सन्देह नहीं रहता।

दीपक

यदि कोई व्यक्ति सफेद आक का पत्ता तोड़ करके दूध संग्रह करे और उसमें शहद मिला दे। सफेद आक का फल तोड़ कर उसमें से रुई निकाले। इस रुई को एकत्र की गई सामग्री में मिला करके रुई की बत्ती बना के दीया जला दे। इसके बाद स्त्री से सम्भोगरत हो तो जब तक दीपक जलता रहेगा तब तक उसे अन्य स्त्री की जरूरत रहेगी। यदि एक ही स्त्री हो तो उसके सन्तुष्ट होने पर दीपक बुझा देना चाहिये क्योंकि दीपक के जलते रहने तक इन्द्री शिथिल नहीं होगी।

व्याधि और अरिष्ट

सफेद आक की जड़ को भुजा में धारण किये रहने से सभी व्याधि और अरिष्ट समाप्त हो जाते हैं।

अभेद्य द्वार

यदि सफेद आक के पौधे के किसी घर के द्वार पर लगा दिया जाये और यह पौधा जीवित रहे तो वह द्वार अभेद्य हो जाता अर्थात वह घर सभी टोने टोटकों से सुरक्षित रहता है।

श्वेतार्क गणपति

लगभग पच्चीस वर्ष पुराने सफेद आक के पौधे की जड़ के अन्तिम हिस्से से अर्थात नीचे से सातवीं आँख पर गणेश जी की प्रतिमा बन जाती है। अतः धैर्य तथा सावधानी के साथ मिट्टी खोदनी चाहिए। □

गोरोचन

तन्त्र शास्त्रों में कस्तूरी की ही भांति एक और कीमती वस्तु होती है जिसे कि गोरोचन कहते हैं। इसको घिस करके चन्दन की भांति माथे पर लगाते हैं तो दूसरी तरफ इसकी स्याही बना करके यन्त्र का लेखन करते हैं। यह एक ऐसी वस्तु है जिसके बिना अष्टगन्ध हीं नहीं बनती।

कस्तूरी की ही भांति यह भी असली कम ही मिल पाती है। जिस भांति कस्तूरी पशु के शरीर में बनती है, इसी भाँति गोरोचन भी बनता है।

गाय के सिर में एक पित्त होता है जिसका रंग भी पीला होता है। इस पित्त की बनावट गोल, चपटी, तिकोन और लम्बी अलग-अलग भाँति की होती है। जब इसे ताजा-ताजा प्राप्त किया जाता है तो यह मोम की भांति मुलायम होता है। वाहरी वातावरण में आते ही यह ठोस हो जाता है। प्रत्येक स्थिति में यह पीला हो होता है। कभी-कभी गुलाबीपन की झलक भी मिलती है। कुछ गोरोचन पर काले रंग के छींटे भी दृष्टिगोचर हुए हैं।

गोरोचन को मंगला भी कहते हैं क्योंकि इसके होते अमंगल होता ही नहीं। इसे शिवा भी कहते हैं क्योंकि यह सदा शुभ करता है। रक्षा करता है। इसे बन्दनीया भी कहते हैं। क्योंकि इसे आराध्य को भी चढ़ाते हैं। इसे भूत विद्रावणी भी कहते हैं क्योंकि जहां यह रहे वहाँ भूत न रहे। इसे मेध्या भी कहते हैं। क्योंकि इसके सेवन से देह शीघ्र पुष्ट हो जाती है। इसे गोपित्त भी कहते हैं। क्योंकि यह गाय का पित्त है। इसी भाँति इसक अनेकों नाम हैं और इसे अपने गुणों के कारण उसी गुण वाले

नाम का परिचय प्राप्त है। इसे सभी जगहों पर गोरोचन कहने से यह प्राप्त हो ही जाती है।

गोरोचन एक सर्व श्रेष्ठ वस्तु है और शायद ही कोई ऐसा कार्य हो जिसमें इसका प्रयोग न किया जाता हो। यहाँ पर मैं आपको प्रयोग बता रहा हूँ।

वशीकरण—गोरोचन को घिस करके माथे में टीका लगाने से देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं।

अराध्य की प्रसन्नता—गोरोचन को घिस करके आराध्य के मस्तिष्क पर टीका लगाने से आराध्य की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

धन वृद्धि—गोरोचन को धन स्थान पर रखने से धन की दिन प्रतिदिन वृद्धि होती है।

सौंदर्य वृद्धि—गोरोचन को उबटन की भांति प्रयोग करने से देह की सुन्दरता अत्यधिक बढ़ जाती है।

मंगलदायक—गोरोचन को ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण किये रहने पर मंगल होता रहता है

गोरोचन को ताबीज में भर करके घर में स्थापन करने से कभी भी घर में अमंगल नहीं होता।

भूतादि की शांति—गोरोचन को या गोरोचन के लिखे यंत्र को कण्ठ में धारण करने से भूतादि पलायन कर जाते हैं।

ग्रह दोष—गोरोचन को नित्य धारण किए रहने से ग्रहों का दोष समाप्त हो जाता है।

मोटापे के लिए—चार जौ के बराबर की मात्रा में गोरोचन लेकर बदाम के साथ खावे। लगभग २० दिनों में देह मोटी हो जाती है।

मिर्गी का अन्त—गोरोचन को दो माशे की मात्रा लेकर गुलाब जल के साथ घिस करके दिन में तीन बार करके तीन दिन तक पिलाने से सारी जिन्दगी मिर्गी नहीं होगी। □

राल

राल नामक एक वृक्ष होता है। इस वृक्ष के तने को गोद करके छोड़ देते हैं। कुछ दिनों में यहाँ पर गोंद सी जम जाती है। इसे उखाड़ करके संग्रह कर लेते हैं। इस गोंद के विविध प्रयोग किए जाते हैं। तन्त्र में राल की जड़ ग्रहण की जाती है। इसके धारण करने से ग्रह बाधा तथा भूतादि की बाधा समाप्त हो जाती है। जड़ के अभाव में राल को ही ताबीज में भर लें। □

कुन्दरु

यह भी शल्लकी नामक वृक्ष की गोंद है। इस गोंद को ही ताबीज में भर करके प्रयोग किया जाता है।

इस ताबीज को खजाने में रखने से धन बढ़ता है।

इस ताबीज को कण्ठ में धारण करने से समस्त ग्रह शान्त हो जाते हैं। धारक को कभी धन सम्बन्धी परेशानी नहीं होती। □

गंध विरोजा

यह अपने नाम से ही सर्वत्र पहचाना जाता है। तथा सर्वत्र उपलब्ध भी है। इसे भी ताबीज में भर करके प्रयोग किया जाता है। इस ताबीज को कण्ठ में धारण करने से भूत, प्रेत, राक्षसादि की बाधा समाप्त हो जाती है। इसे धारण किए रहने से ग्रह पीड़ा नहीं देते तथा ज्वर भी नहीं होता। □

खोपड़ी

यहां पर मृत पुरुष या स्त्री की खोपड़ी के विषय में अनेकों बातें प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तन्त्र प्रयोगों में पूर्ण सफलता के लिए एक खोपड़ी की आवश्यकता होती है। अव विचार यह करना होता है कि कैसी खोपड़ी ? इस विषय में सर्व साधारण की भी मान्यता है कि खोपड़ी तेली की हो तो उत्तम रहता है। आपको मालूम होगा कि अधिकतर तेली मृत देह को पृथ्वी में दबा देते हैं। तांत्रिक प्रयोगों के लिए किसी भी जली हुई देह की खोपड़ी प्रयुक्त नहीं होती। क्योंकि संस्कार करते समय इसकी कपाल क्रिया कर दी जाती है। यदि आप को कोई ऐसी खोपड़ी मिले, जिसकी कि कपाल क्रिया न हुई हो तो भी प्रयोग कर सकते हैं।

सर्वसाधारण का विचार तथा विद्वानों का विचार है कि यह विषय कापालिक या अघोरी का है अतः वह इसकी उपयोगिता पर ध्यान नहीं देते।

तंत्र प्रयोगों में आसन की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। उसके बाद भी दो मुख्य आसन बचते हैं जिन्हें कि—

श्री पंचमुंडी आसन तथा

श्री श्री नवमुण्डी आसन कहते हैं।

यह माना जाता है कि श्री पंचमुंडी आसन पर साधना करने से दुर्लभ प्राप्तियाँ हो जाती हैं परन्तु शिव तो सोया ही रहता है। वह नहीं जागता, जबकि श्री श्री नवमुंडी आसन पर साधना करने से शिव भी जग जाते हैं। यह एक विस्तृत विषय है तथा तांत्रिक साधनाओं में सबसे ऊँचा है। सम्भवतः इसीलिए शब्दों के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया। इन आसनों पर गुरु किसी को भी बैठने ही नहीं देता। यह विषम बहुत आगे का विषय है अतः

इस पर फिर कभी बात करेंगे । इस समय हम खोपड़ी के साधारण प्रयोगों की बात करेंगे । साधारण इसलिए कहा है क्योंकि खोपड़ी से ही मनुष्य भयभीत होते हैं और इसे ही वह ले आए तो आगे के कार्यों का भय प्राय: समाप्त ही हो जाता है । अब मैं तन्त्र प्रयोगों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर संक्षेप में प्रकाश डालूंगा ।

मुंड माला

कुछ खोपड़ियाँ एकत्र करके मजबूत धागे में पिरो करके माला की भाँति गले में धारण करके श्मशान साधना करने से शीघ्र प्रभाव होता है । यह प्रयोग उपनिषदों के संदेश 'अहं ब्रह्मस्मि' के अनुसार ही है । भगवती काली, भगवती तारा तथा भगवती छिन्नमस्ता की साधना में यह माला शीघ्र फलीभूत होती है ।

जप माला

खोपड़ियाँ एकत्र करके उनका कपाल तोड़ करके हड्डी एकत्र करके किसी सूत्र में पिरो ले । यह एक सौ आठ हो तो अच्छा रहेगा । इस माला को सदा पर्दे में रखे । इसके द्वारा काली कुल साधक देवी से साक्षात्कार कर पाते हैं । इस जपमाला से श्मशान साधन भी किया जाता है । आगामी पृष्ठों में दिये महाशंख का विशेष अध्ययन करें ।

मुंडासन

एक खोपड़ी लेकर उसके ऊपर बैठ सके तो उत्तम अन्यथा पृथ्वी पर गड्ढा खोद कर दबा दे । इसके ऊपर बैठकर शक्ति उपासना करने से अत्यन्त लाभ प्राप्त होता है । यह आसन साधक के लिए ही नहीं है वल्कि इसके ऊपर देवी की प्रतिमा स्थापित करने से अनेकों चमत्कारों का दर्शन होता है ।

सूर्य दर्शन

आपने सुना होगा तथा सूर्य की तस्वीरों में भी देखा होगा कि सूर्य देव एक रथ पर सवार हैं और उस रथ को कई घोड़े खींच रहे हैं। आपको यह सब काल्पनिक लगता होगा। आज कल इन सब बातों पर सहसा कोई विश्वाश नहीं करता। मैं आपको सूर्य का रथ देखने की विधि वताता हूँ।

एक नींबू होता है जिसे कि विरोजा नींबू कहवे हैं इस नींबू के बीज एकत्र करके उनका तेल निकाले या,निकलवा ले। इसके बाद ताम्बे की एक पतली सी पत्ती लेकर उसके ऊपर यह तेल लगावे। इसके बाद मध्याह्न काल में इस पत्तो के द्वारा सूर्य को देखे। आप आश्चय मान जाएंगे। क्योंकि आपको सूर्य देव अपने रथ पर सवार दृष्टिगोचर होंगे। □

मारण

जिस शत्रु पर मारण प्रयोग करना हो उसकी ताजा विष्ठा लेकर खोपड़ी में रखकर खोपड़ी के ऊपर श्मशान से लाए कोयले के द्वारा शत्रु का नाम लिखे। इसके बाद पृथ्वी में इस खोपड़ी को दबा देना चाहिए। जैसे-जैसे इसकी विष्ठा सूखेगी वैसे-वैसे वह शत्रु सूखेगा और जब विष्ठा पूरी तरह सुख जाएगी तो शत्रु मर जाएगा। □

पुरुष वशीकरण

जब कभी कोई स्त्री किसी पुरुष से साथ करना चाहे और उसकी इच्छा यह भी हो कि वह पुरुष किसी और स्त्री का साथ न करे तब वह इस प्रयोग को करे।

आप किसी गाय का गिरा हुआ सींग प्राप्त कर लें। यह [illegible] आसानी से प्राप्त हो जाता है। इसे प्राप्त करके [illegible]

भांति सिल पर घिसे। इसके बाद घिसे हुए पदार्थ को अपनी योनि पर लेप करके उस पुरुष के साथ सम्भोग करे। बस यही प्रयोग काफी है। इसके बाद वह पुरुष किसी भी स्त्री से सम्भोग नहीं कर पाएगा। क्योंकि दूसरी स्त्री के पास जाने पर उसकी ध्वजा सुप्त ही रहेगी।

यह प्रयोग उस स्त्री के लिए सर्वश्रेष्ठ है जिसका पति बिगड़ा हुआ एय्याश हो। यदि कोई अन्य स्त्री इस प्रयोग को करती है तो उससे आनन्द उठाने के पश्चात् जब वह उसे छोड़ना भी चाहेगी तब वह बड़ा सींग ढूंढ़ करके लाये। इसे भी चन्दन की भांति घिस करके योनि पर लेप करके उसी पुरुष के संग मैथुन करे तो इसके बाद से वह पुरुष दूसरी स्त्रियों की तरफ आकर्षित हो जायेगा और उसकी ध्वजा भी कार्यरत हो जाएगी। □

पुरुष नपुंसक हो

यदि आप किसी को परेशान करना चाहैं तो एक बिच्छू मार करके रख लें। जहां पर आपका केन्द्रित व्यक्ति मूत्र त्याग करे। वह स्थान स्मरण कर ले। उस व्यक्ति के जाने के बाद उस जगह पर जहाँ पर कि मूत्र त्याग किया था मरा हुआ बिच्छू गाड़ दें। इस प्रयोग के पूर्ण होते ही उस व्यक्ति की इन्द्री की कार्यक्षमता समाप्त हो करके पुरुष नपुंसक हो जाएगा। पुनः उसे ठीक करने के लिए बिच्छू उखाड़ने पर उसकी नपुंसकता समाप्त हो जाएगी। □

मार्ग विघ्न विनाशक

यदि आपने कहीं पर यात्रा करने जाना हो और आपको यह लगता हो कि मार्ग तमाम विघ्न बाधाओं से पूरित है अर्थात

आप को यह लगे कि यात्रा उचित नहीं रहेगी तब भयभीत होकर यात्रा स्थगित न करें, बल्कि यह प्रयोग करें।

समान मात्रा में गन्धक, हरताल तथा विष को पीस करके चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को गाय का मूत्र मिला करके राह में बिखेर दें और यात्रा का शुभारम्भ करें।

इस प्रयोग को करने से मार्ग के सभी विघ्न इस भाँति हट जाते हैं, जिस भांति सिंह को देख करके जंगल के अन्य प्राणी हट जाते हैं। □

जन्म पर्यन्त शुभता

जब आप अपने जीवन में बार-बार विघ्नों तथा अनिष्टों का सामना करते करते थक जाएँ और कोई भी उपाय कारगर न हो तो इस प्रयोग को अवश्य करके देखें—

लाल गुड़हल की फूलों की माला बना करके नीचे दिए मंत्र से सौ बार अभिमंत्रित करें और देवी को चढ़ा दें।

मंत्र— ॐ ख्रौं ढ्रौं छ्रौं ह्रौं थ्रौं फ्रौं ह्रौं ॥'

इस प्रयोग को करने से क्षण प्रतिक्षण विघ्नों का अन्त होते-होते अनिष्ट का नाश हो जाता है। इस प्रयोग के प्रभाव से जन्म पर्यन्त शुभता बनी रहती है। □

अपना बने

यदि कोई मित्र आपकी तरफ से उदासीन हो जाए और आप उसकी विरह बरदाश्त न कर पाएँ। यदि किसी और को भी मित्र बनाना हो तो रविवार के दिन जब पुष्प नक्षत्र हो तब प्रातःकाल घर से प्रस्थान करें। रास्ते में किसी ब्राह्मण के पांव के नीचे की मिट्टी उठा लें। आगे जाकर किसी गाय की तलाश

करें और उसके पांव की भी मिट्टी उठा लें। अब आप कोई गधा तलाशें। गधा मिल जाने पर उसके पांव के नीचे की मिट्टी भी उठा लें। इस सारी मिट्टी को एक दूसरे में मिला करके धूप दीप करें। इसके बाद स्मरण करें मोहिनी देवी का। प्रयोग करते समय 'ॐ शारदायै नमः' कह कर इस मिट्टी को जिसके सिर के ऊपर एक चुटसी भी डाल देंगे, वह सदा के लिए वश में हो जाएगा। जैसा चाहे वैसा प्रयोग करें। □

काम विजय

यदि कोई व्यक्ति अपनी शक्ति के साथ विषय भोग करते समय देवी का ध्यान करता है तथा यह भी ध्यान करता है कि पांच त्रिकोणों वाले मन्त्र की पीठ पर शव बने शिव के ऊपर देवी भैरव जी के साथ आनन्द मग्न होकर विषय भोग में लिप्त हैं और अत्यधिक प्रसन्न हैं। ऐसा करने से अपनी शक्ति के साथ विषय भोग करने वाला व्यक्ति साक्षात कामदेव के समान हो जाता है। ऐसा ध्यान करते हुए वह जो भी इच्छा करता है, वह पूरी तरह सफल होती है परन्तु इस कार्य का समय केवल रात्रि दस बजे से दो बजे तक ही है। □

पृथ्वी पति

यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर में अपने इष्ट (कुल देवता) का मंत्र जपते हुए शव रूपी शिव के ऊपर कंकाल मालिनी का प्रसन्न मुद्रा में ध्यान करता है। इसके साथ ही समूलोत्पाटित केश लेकर अपने वीर्य के साथ श्मशान में जाकर अर्द्ध रात्रि को निर्वस्त्र होकर प्रदान करता तो वह व्यक्ति निश्चय ही पृथ्वी-पति हो करके हाथी की सवारी करता रहता है। □

रजस्वला योनि

जिस स्त्री का मासिक स्राव हो रहा हो उसे पूर्ण नग्न करके अपने सामने खड़ा करें। योनि से गिरते हुए रक्त को देखते रहें और योनि की पूजा करें। इसके बाद रजस्वला योनि को देखते हुए मूल मंत्र का जप करते रहें। जप के समापन पर योनि को जल समर्पण करें। ऐसा प्रयोग करने वाला साधक अवश्य ही देवी के लोक में श्रेष्ठ पद पाता है। □

भाग्यशाली प्रयोग

यह प्रयोग स्त्री के लिए है। यदि किसी स्त्री का भाग्य साथ न दे रहा हो। अनेकों प्रयास करने पर भी यदि सफलता न मिल रही हो तो आप अपनी ऐसी सहेली का प्रयोग करें जिस पर भाग्य की कृपा हो। जो सुखी हो, जो सफल हो, जो स्वस्थ हो।

आप उसके घर जाएं और किसी भी भांति जलपान करते समय अपनें कपड़े खराब कर लें जिससे कि आप कि सहेली आप को पहनने के लिए अपने वस्त्र दे दे। वह वस्त्र जैसे भी हों चलेंगे। इन वस्त्रों को धारण करके घर आ जाएं। घर आकर श्रृंगार आदि करके देवी का पूजन करें। पूजन के पश्चात् उन कपड़ों को उतार दें यह भावना करते हुए कि माँ ने आपके क्लेश को इन वस्त्रों में भर दिया है। इसके बाद अपने पति से विषयानन्द हों। आप अपने पति से विषय भोग करते हुए यही विचार करें कि हम नहीं बल्कि भैरव और भैरवी सम्भोग कर रहे हैं। ऐसा करने से आपको अत्यधिक आनन्द भी आएगा तथा जीवन में सफलता भी प्राप्त करेंगे। यदि आप विषय भोग करते समय अपने पति को भैरव कह कर सम्बोधित करें और

आपका पति आपको भैरवी कह कर सम्बोधित करे तो लाभ शीघ्र होता है। इस प्रयोग में आपको एतराज भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि आपका शरीर तो क्षण भंगुर है। वास्तव में संसार का प्रत्येक पुरुष भैरव तथा संसार की प्रत्येक स्त्री भैरवी है।

इस प्रयोग को करने से आपका काम चल जाएगा। अगले दिन सहेली का वस्त्र वापस कर दें और वहां से मिलने वाले वस्त्र किसी को दे दें।

इस प्रकार से यह प्रयोग सम्पन्न होगा और आपका भाग्य भी आपका साथ देने लगेगा।

□

तिरस्कृत स्त्री

अनादि काल से ही हो रहा है कि पुरुष स्त्री को अपनी दासी के समान मानता चला आ रहा है। इसी कारण आज भी पुरुष स्त्री का त्याग कर देते हैं। इस त्याग किए जाने में कारण विशेष तो अवश्य ही होते हैं। संसार का उत्पादन करके पालन पोषण करने वाली स्त्री अपनी शक्ति से अनभिज्ञ पति के प्रत्येक अत्याचार को सहती रहती है। यहाँ तक कि वह त्यागी जाने पर भी सिवाय आँसू बहाने के और कुछ भी नहीं करती। संसार को नवीन भविष्य प्रदान करने वाली इस शक्ति के साथ पुरुषों का बहुत बड़ा अन्याय है। मैं कहता हूँ कि संसार की समस्त स्त्रियां अपने भीतर सो रही आध्यात्मिक शक्ति को जगा करके इच्छानुकूल फल प्राप्त करें।

यदि आपके पास एक एकान्त वाला कमरा हो तब यह यह प्रयोग करें। प्रयोग करने का समय रात्रि दस बजे से दो बजे तक का है। अपने एकान्त कमरे में आकर दरवाजों को भीतर से

भली-भांति मजबूती से वन्द कर लें। खिड़की पर भी रंगीन पर्दें लगा दें ताकि कोई आपको देख न सके। अब आप कमरे में धूप जला दें। यदि इसकी गंध से औरों को पता चले तो धूप भी रहने दो। लाल रंग के कम्बल का आसन पृथ्वी पर बिछा दें और अपना भरपूर शृंगार करें। इसके बाद समस्त वस्त्र उतार करके चाहें तो बैठ जाएँ। अन्यथा कमरे में टहलती रहिए। टहलते हुए भावना करें कि आप आप नहीं हैं बल्कि देवी हैं। आप में देवी की शक्ति है। आप देवी की भांति पुष्ट, सुन्दर तथा सशक्त हैं। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में आप अपने भीतर बदलाव पायेंगी। मन पसन्न रहा करेगा। जव आप टहलते-२ थक जाएँ या वैसे ही बैठना चाहें तो बैठकर निम्नलिखित मन्त्र का जप करें।

मन्त्र—'क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षें क्षों क्षँ क्षः ॥' □

मूत्र बन्दी

आपने यदि किसी शत्रु को परेशान करना हो तो उस शत्रु को अपनी निगाह से ओझल न होने दें। ध्यान रखें कि कव वह मिट्टी पर पेशाब करे। जव आप देखें कि शत्रु ने जमीन पर मूत्र त्याग किया है तब आप उसका पीछा छोड़ करके उस पेशाब की हुई जगह से मिट्टी उठा लें और संगह कर लें। अब आप एक छछून्दर पकड़ें और रविवार या शनिवार के दिन उस छछून्दर को मार डालें। इसके वाद उसका पेट चीर कर आँतों को फेंक दें और उसमें वह मिट्टी भर दें जो कि शत्रु के मूत्र वाली है। इसके बाद सूई तागे से उसका पेट सिल दें। अव इस छछून्दर को किसी ऊँचे वृक्ष पर लटका कर बाँध देवें। बहुत ही अच्छा होगा यदि किसी श्मशान भूमि के वृक्ष का प्रयोग किया जाये।

इस प्रयोग के पूर्ण होते ही आपके उस शत्रु का मूत्र बन्द हो जायेगा। इसके कारण उसे बहुत ही कठिन यातना होगी परन्तु इसका हल किसी भी दवा दारु से न होगा बल्कि जब तक आप उस छछून्दर को उतार कर उसका पेट फाड़ करके मिट्टी को फेंक न देंगे तब तक वह ठीक नहीं होगा। □

शत्रु नपुंसक हो

उपरोक्त तन्त्र में शत्रु के मूत्र की बात की जा रही थी। इस तन्त्र में भी यही बात की जाएगी। बस, थोड़ा सा अन्तर है। आपने सर्व प्रथम एक बिच्छू मारना है। इस मरे हुए बिच्छू को लिए रहिये और शत्रु का पीछा करें। जब आपका शत्रु पृथ्वी पर मूत्र त्याग करके चला जाये तब उस मूत्र त्यागी जगह पर जाकर एक गड्ढा खोदें। जब गड्ढा खोद चुके तब मरे हुए बिच्छू को उसमें डाल कर पुनः गड्ढा भर दें और अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो जाएँ।

इस प्रयोग के करने से शत्रु की इन्द्री सुप्त हो जाएगी अर्थात आपका शत्रु नपुंसक हो जाएगा। अर्थात आपका शत्रु किसी भी स्त्री के लायक न रहेगा। वह इस समस्या से बौखला जायेगा परन्तु इसका हल कोई नहीं। इसका हल है तो केवल आपके पास। आप जब उस गड्ढे से बिच्छू निकाल देंगे। आपका शत्रु पुनः ठीक हो जाएगा। □

पति को वश में करने हेतु मूत्र का प्रयोग

जिस स्त्री का पति लम्पट हो और कई स्थानों पर उसके यौन सम्बन्ध हों तो पत्नी के लिये यह स्थिति बड़ी विडम्बना वाली होती है। ऐसी स्त्री स्वयं का तथा समाज का हित करने के लिये यह प्रयोग करें।

स्त्री अपने पति का ध्यान रखे और जब उसका पति भूमि पर पेशाव करके जाये तो वह स्त्री उस मूत्र की हुई जगह से थोड़ी सी मिट्टी अपने पाँचों नाखूनों की चुटकी बना करके उठा ले। इसके बाद किसी कुम्हार का स्थान देख करके वहाँ जाये तथा चोरी से चाक के ऊपर से थोड़ी-सी मिट्टी अपने पाँचों नाखूनों की चुटकी बना करके उठा ले और घर आ जाएं। अव दोनों तरह की मिट्टी मिला करके एक गोली बनावें तथा इस गोली में एक छिद्र भी कर दें। जो कि आर-पार हो। इस छेद में एक काला धागा डाल करके घर के दरवाजे के ऊपर लटका दें। जब उसका पति द्वार के भीतर चला जाय तो उस धागे तथा गोली को उतार करके पृथ्वी में गड्ढा खोद करके गाड़ दें और इसके बाद यदि अपने पति में व्यस्त होना चाहें तो हो सकती हैं।

इस प्रयोग के करने से पति जीवन भर पत्नी के वश में रहता है तथा कहीं और जाने पर उसकी इन्द्री शिथिल ही रहेगी। ▫

प्रेमिका मोहिनी बटी

किसी भी रविवार के दिन चौराहे से मिट्टी उठा कर ले आवें। एक मोर का वंख तथा एक पंख हुदहुद पक्षी का भी ले आवें। इन दोनों पंखों को खरल में अच्छी भांति पीस करके चौराहे की मिट्टी भी मिला दें और पुनः पीसें। कुछ समय के बाद जब सभी वस्तुएं मिश्रित हो जायें तो अपना वीर्य ले करके इसमें मिला दें। जितनी सामग्री इस वीर्य से भीग सके उतनी ही मिलायें तथा इसकी गोलियाँ बना लें। अब आपके पास किसी भी स्त्री को मोहित कर लेने का रहस्य सुरक्षित हो गया

है। आपने जिसे मोहित करना हो उसे यह गोली किसी भी भांति से खिला दें। बस, बटी को खाने के बाद खाने वाली जीवन भर की गुलामी भी स्वीकार करती है।

पड़ा मोहन

अब आप पेड़े के द्वारा मोहन कार्य करें। एक पेड़ा लेकर फोड़ दें। इसे एक प्लेट में रखें। अब अपना वीर्य निकाल कर इस पेड़े में मिला दें। पुनः इस फूटे पेड़े को एकत्र करके पेड़ा बना लें। यह सारा प्रयोग अमावस की रात्रि में ही करें।

इस पेड़े को लेकर कुम्हार के क्षेत्र में जाकर उसके चाक के पास जा करके बैठें। चाक के ऊपर एक तरफ (बीच में नहीं) पेड़ा रखकर चाक को उल्टा घुमाए। इसे सात बार घुमायें। इसके बाद पेड़ा लेकर घर आ जायें। इस भाँति यह पेड़ा मोहन करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

अब आपने जिसे भी मोहित करना हो उसे यह पेड़ा खिला दें। इसके प्रभाव से वह स्त्री आपके हुक्म की गुलाम बन जायेगी।

समाज मोहनी

इस प्रयोग के प्रभाव से पूरा का पूरा समाज ही मोहित हो जाता है, यदि आपको कभी समाज मोहित करने की आवश्यकता हो तब चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में अष्टमी तिथि को संध्या के समय चीते का पौधा न्योत करके नवमी की प्रातः को शीघ्र ही जाकर वह पौधा जड़ समेत उखाड़ लें। घर में ला करके इसे धूप दीप करके सहेज लें। इसका एक हिस्सा तोड़ करके जेब में रख लें और प्रस्थान करें। यह हिस्सा जब तक आपकी जेब में

सुरक्षित रहेगा तब तक आपको देखने वाले सभी लोग आपको समर्पित रहेंगे। □

स्त्री वशीकरण

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब धोबी घाट पर जा कर किसी धोबी के पैरों के नीचे की धूल ले आयें। इस धूल को रविवार की संध्या के समय जिस स्त्री के सिर पर डाल दिया जायेगा वह मन वचन और कर्म से आपकी हो जाएगी। □

स्त्री वशीकरण

मैंने एक यन्त्र 'यन्त्र विधान' नामक पुस्तक में दिया है। उसे अपनी इन्द्री पर लिख करके स्त्री से सम्भोग करें। इसके बाद से वह किसी भी अन्य पुरुष से सम्भोग न कर पाएगी। □

पुरुष वशीकरण

इस प्रयोग के द्वारा किसी भी पुरुष को अपना गुलाम बनाया जा सकता है। इस कार्य के हेतु किसी भी रविवार या मंगलवार को प्रयोग करने वाली स्त्री अपने बाएँ पाँव की जूती के वजन के बराबर आटा लेकर चार रोटियाँ पकाए। इन रोटियों पर वही जूती सात-सात बार पटके। इसके बाद उन रोटियों को क्रमशः अपनी योनि से स्पर्श करावे। इस भाँति यह रोटियाँ प्रबल वशीकरण का हेतु बन जाती हैं। अब आप इन रोटियों जो आवश्यक पुरुष को खिला यें। □

माहवारी का रक्त

आज भी यह प्रयोग प्रायः कई स्थानों पर करके गृहणियाँ अपना परिवार सुख से चला रही हैं। इस प्रयोग का प्रभाव

केवय एक महीने तक रहता है। अतः प्रत्येक मास में इसका नवोनीकरण करना होता है। इस प्रयोग के प्रभाव से पति क्रोध नहीं करता तथा आराम से घर की फिक्र करता रहता है। कुल मिला करके इस प्रयोग के प्रभाव से घर में सुख शान्ति वनी रहती है। यह प्रयोग भी बहुत आसान है।

जब माहवारी आ रही हो तब एक गिलास पानी में माहवारी के रक्त की सात बूँदें डाल करके पति को पिला दें। इतना करना काफी है।

□

माहवारी की सुपारी

यह एक खतरनाक प्रयोग है और इसका प्रभाव जीवन भर रहता है। इस प्रयोग से प्रभावी व्यक्ति को सिवा अपने माशूक के और कुछ भी नहीं सूझता। माना जाता है कि ऐसा व्यक्ति समाज के लिए व्यर्थ हो जाता है क्योंकि उस आशिक के लिए संसार की हर जरूरत उसका महबूब होती है और वह सदा उससे चिपका-चिपका सा रहता है। इसी कारण मैंने इसे खतरनाक प्रयोग कहा है। इस प्रयोग को करने की विधि निम्न-लिखित है—

जब स्त्री को मासिक स्राव प्रारम्भ हो और वह अपनी योनि पर वस्त्र बाँधने लगे तब एक सुपाड़ी अपने योनि के प्रवेश द्वार के पास भीतर की तरफ रख ले। इसके बाद अपनी नित्य क्रिया करती रहे। जब-जब वह रुधिर वाला वस्त्र बदले तब-तब सुपाड़ी का ध्यान रखे। यह सुपाड़ी बाहर न आये तथा नीचे न गिरे। इसी भाँति की सावधानी रखती रहे। जब मासिक स्राव बन्द हो जाये तो यह सुपाड़ी निकाल करके रख ले। यही वह सुपाड़ी है, जो जीवन भर के लिये पागलों जैसी दीवानगी पैदा करती

है। यदि कोई स्त्री राँझे, महिवाल जैसे प्रेमी को देखना चाहे तो स्वयं को भी हीर तथा सोहनी की भाँति तैयार करे और यह सुपाड़ी उस व्यक्ति को खिला दे। इसका प्रयोग मजाक के हेतु कभी नहीं करना चाहिये। □

शत्रु वशीकरण

मेनसिल, हरताल तथा नीलदूर्वा को लाक्षा के रस में मिला करके स्त्री के दूध में घोंट करके माथे में तिलक लगा कर शत्रु के के समक्ष जाने से शत्रु वशीभूत हो जाता है। □

शत्रु वशीकरण

(१) अपराजिता, महिषकन्द, सहदेवी, गोरोचन को एक साथ पीस करके बकरी के दूध में घिस करके माथे पर टीका लगाने से शत्रु तो क्या सभी देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं।

(२) नागकेसर, कुंकुम, चमेली, कुष्ठ तथा तगर को पीस करके शुद्ध घी में मिला करके माथे पर तिलक लगाने से वशीकरण होता है। □

शत्रु अंधा हो

मंगल या शनिवार की रात्रि को श्मशान में जाकर सभी वस्त्र उतार कर आदमजात नंगा हो जायें। यदि शिखा बंधी हो तो खोल दें। प्रयोगकर्त्ता के बाल होने के कारण जूड़ा किया गया हो तो सारे बाल खोल करके बिखेर लें। अब वहां कोई मुर्दा तलाश करें, यह मुर्दा अधजला भी हो तो भी चलेगा। प्राप्त किये मुर्दे के टुकड़े-टुकड़े करें और यदि मनुष्य का खून मिल सके

तो अत्यन्त लाभदायक रहेगा। विष, भूसी तथा हड्डी के टुकड़े का पहले से ही प्रबन्ध कर लेना चाहिए। अब आप जलती हुई चिता तलाशें। नीचे दिये गए मन्त्र को पढ़-पढ़ करके उस चिता में सारी सामग्री एकत्र करके एक सौ आठ बार आहुति दें। इस प्रयोग के करने से शत्रु अन्धा हो जाता है। मन्त्र में अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम बोलें।

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती कोमारी लल लल लालय लालय घण्टादेवी! अमुक मारय मारय सहसा नमोऽस्तुते भगवती विद्ये स्वाहा।"

□

नजर टोक

अक्सर बच्चों को नजर आदि की शिकायत हो जाती है, इस कारण बच्चा बहुत बेचैन रहता है। कहावत है कि नजर तो पत्थर को फोड़ देती है। यदि बच्चे के गले में एक काले धागे में रीठा पिरो करके डाल दें तो नज़र का दोष समाप्त हो जाता है और पुनः नहीं होता।

□

बच्चों की खाँसी

यह माना जाता है कि खांसी स्वयं एक रोग न हो करके किसी अन्य रोग का उपद्रव मात्र होता है परन्तु यह खांसी कभी कभी बहुत तकलीफ कारक हो जाती है। दवा देने से भी काम नहीं चलता। ऐसे समय में निम्नलिखित प्रयोग करने से बहुत ही आश्चर्यजनक ढंग से खाँसी ऐसे गायब होती है कि अपने सारे लक्षण भी साथ ले जाती है।

किसी भी शनिवार के दिन कौवे का बीट उठा लावें। एक

काले कपड़े की थैली सी बना करके उसमें बीट डाल कर पुनः मुख वन्द करके सी दें। अब इस थैली को किसी काले धागे की सहायता से गले में लटका दे। □

हिस्टीरिया

यह रोग प्रायः स्त्रीयों को हुआ करता है। जब यह रोग किसी भी भांति से दामन न छोड़े तो किसी भेड़ के शरीर से एक जूं पकड़ लायें। इसके बाद कम्बल के रोएँ उखाड़ करके इनमें जूं को छोड़ दें और इस सारी सामाग्री को एक तांबे के ताबीज में भर करके ताबीज को अच्छी भांति वन्द कर दें। जिससे कि जूं बाहर न निकल जाये। अब ताबीज को हिस्टीरिया रोग से ग्रसित रोगिणी के गले में पहना दें। □

अन्न धन भरपूर रहे

प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसके घर में कभी भी अन्न धन की कमी न हो और वह सदा इसे भरे रखने का प्रयास करता रहता है। इस विषय में यहाँ पर दिया गया यह तन्त्र प्रयोग विशेष प्रभावी है और इस विषय में आपकी भरपूर मदद करेगा। यदि आप चाहते हैं कि आपके घर में सदा अन्न तथा धन का भण्डार भरा रहे तो यह प्रयोग करें—

आप एक ऐसे बरगद का वृक्ष ढूंढें जिसके नीचे एक छोटा-सा बरगद उगा हो तो आप किसी विद्वान से सर्वसिद्ध योग का पता करके यह प्रयोग करें।

जिस दिन सर्व सिद्ध योग हो उससे एक दिन पहले वहाँ पर जाकर छोटे बरगद के वृक्ष को न्यौत आएँ। दूसरे दिन जब कि सिद्ध योग बताया गया हो आधी रात को नंगा होकर वहाँ जाएँ

तथा इस छोटे वृक्ष को जड़ समेत उखाड़ लायें । घर लाकर उसकी धूप दीप से पूजा करें और किसी शुद्ध स्थान पर उसे रख दें । यह वृक्ष जब तक आपके घर में रहेगा, तब तक आपके घर में अन्न तथा धन की कमी नहीं आयेगी । □

दिन में तारे दिखाई दें

यदि आप सूर्य की तेज रोशनी होने पर भी तारे देखना चाहें तो अगस्त वृक्ष के फूलों का रस निकालें । इस रस में श्वेतांजन (सफेद सुरमा) को सात दिन तक खरल करें । इसके बाद इसे शीशी में बन्द करके रख लें । आप दोपहर के समय इसे आँखों में काजल के भांति लगाएँ और आकाश की तरफ देखें तो आप को दिन में भी आकाश पर सितारे टिमटिमाते हुए दिखाई देंगे ।

माना जाता है कि सफेद रंग के फूलों वाली टहनी पर भी यदि दिन में पांव रख करके आसमान को देखा जाए तो सूर्य की तेज रोशनी के बावज़ूद भी तारे दिखाई देते हैं ।

माना जाता है कि सफेद फूलों वाले ढाक के वृक्ष पर चढ़ करके भरी दोपहरी में भी आकाश को देखने से सितारे दिखाई देते हैं । □

पृथ्वी में छुपा धन दीखे

काले धतूरे की जड़ व छितवन की जड़ प्राप्त करें । यह जड़ें प्राप्त करते समय सिर के सभी बाल बिखेर लें । घर में आ कर इन जड़ों की छाल को उखाड़ लें । इसे किसी ताबीज में भर लें । या ऐसे ही प्रयोग करें । इन छालों को एक साथ मुख में रख लें या धारण कर लें । ऐसा करने से पृथ्वी के अन्दर छुपी हुई धन-सामग्री यदि हो तो दिखाई पड़ती है । □

अदृश्यकरण

अशोक तथा चित्रक की जड़, खंजन की बीठ; घोड़े के मुख वाला फेन, सेहजनें के वीज तथा नीलकंठ पंक्षी की दोनों पुतलियों को प्राप्त करके धूप दीप करें और तांबे की तावीज में भर लें। इस तावीज को जब भी मुख में डाला जायेगा तब ही वह व्यक्ति अदृश्य हो जायेगा। □

मारण

यदि गिरगिट की चर्बी का तेल निकाल करके जिसके शरीर पर डाल दिया जायेगा वह अवश्य मर जायेगा। □

रोगनाशक

काँसे के एक पात्र में जल भर करके 'क्रीं' से सात बार अभि-मंत्रित करके रोगी को पिलाने से रोग समाप्त होता है। □

संसार वशीकरण

चंदन को शिला पर घिस करके 'क्रीं स्वाहा' से अभिमंत्रित करके माथे पर तिलक लगायें तो संसार का वशीकरण होता है। □

भय नाशक

थोड़े से चावल लेकर 'क्रीं हू ह्रीं' से सात बार अभिमंत्रित करके स्थान पर या रोगी को मारने से उसके सभी भय समाप्त हो कर भय के कारण का निवारण हो जाता है। □

शत्रु नाशक

किसी श्मशान में जाकर सारे वस्त्र उतार कर नंगा हों तथा

सिर के बाल खोल कर बिखेर लें। अब जलती हुई चिता के पास आकर 'क्रीं ह्रीं ह्लू स्वाहा' से चिता को अभिमंत्रित करें। इसके बाद जब यह चिता शीतल हो जाये तो उसकी राख लेकर शत्रु के घर में डाल दें। ऐसा करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

□

आकर्षण

यदि कोई व्यक्ति आपका काम बिगाड़ने पर तुला हो या किसी के पास आपका कोई काम फंसा हो तो 'त्रीं त्रीं त्रीं' का जाप करते हुए उसके पास जाएँ। वह आप के काम से मना नहीं करेगा।

यदि किसी को वशीभूत करना हो तब इसका जप करते हुए आवश्यक व्यक्ति के पास जाएँ। आप जैसा कहेंगे, वैसा ही वह करेगा।

□

पृथ्वीपति

काली कुल में दीक्षित व्यक्ति श्मशान में जाकर निर्वस्त्र होकर केश खोल करके अपने इष्ट का ध्यान करते हुए अपने मंत्र का जप करता रहे। जप के समापन पर सफेद आक के फूल के साथ अपना वीर्य मिला करके एक हजार बार अर्घ्य की भाँति श्मशान में चढ़ाये तो वह व्यक्ति अचानक पृथ्वीपति अर्थात् राजा बन जाता है।

□

परम पद

जो व्यक्ति लाल गुड़हल के पुष्पों के किसी स्त्री की योनि को निर्वस्त्र करके देखते हुए उसकी योनि के सम्मुख अपने मन्त्र का

जप करते हुए योनि का पूजा करता है तो वह गन्धर्वों का पति होकर कवियों में श्रेष्ठ स्थान पाकर नाम कमाता तथा अन्त में निश्चय ही परम पद में लीन हो जाता है। □

वशीकरण

बट की जड़ तथा विदारी कन्द को एक साथ कूट करके रख लें। आवश्यकतानुसार इसे चन्दन की भांति घिस करके तिलक करें। इस तिलक को जो भी देखे वशीभूत हो। □

स्त्री वशीकरण

आप किसी स्त्री को वशीभूत करना चाहते हों और उस पर कोई प्रयोग न चलता हो या वह हठी मन वाली हो या अपने स्त्रीत्व को पूरे जी-जान से बचा रही हो। आप को प्रथम तो ऐसी स्त्री को त्याग देना चाहिए क्योंकि किसी का भी व्रत खंडित नहीं करना चाहिये। इस पर भी यदि आप उस पर अत्यधिक मुग्ध हो चुके हों और कोई चारा न रहे तो यह प्रयोग करें। काले चने के तीस बीज (चने) लें। इन्द्र जौ को पसारी से प्राप्त करें। गोदंत का स्वयं प्रबन्ध करें। किसी दांतों के डाक्टर के के यहाँ से नर का दाँत चुरा लें इस प्रकार आप चार वस्तुओं का संग्रह करेंगे। इन्हें एकत्र करके अच्छी भाँति पीस लें। जब यह पिस जावे तो तेल में मिला करके माथे पर टीका लगा करके उस स्त्री से मिलें। उसे सम्बोधित करें ताकि वह आपका टीका देख सके। जैसे ही वह आपका टीका देखेगी वह आपके लिये व्याकुल हो जायेगी। □

विघ्न

प्रायः घरों में जाने या अन्जाने कई भांति के विघ्न प्रस्तुत होते रहते हैं। इन विघ्नों का कारण यदि दिखाई दे तो व्यक्ति उसे दूर कर लेता है परन्तु अदृश्य विघ्नों का कारण प्रायः परेशान करता ही रहता है। ऐसी स्थिति का अन्त करने के लिये निर्गुण्डी की जड़ लाकर घर में स्थापित कर दें। आपके द्वारा इस जड़ को लाते ही घर के समस्त विघ्न समाप्त हो जायेंगे। □

बारहसींगा

बारहसींगे के सींग का एक ताबीज सा बना लें। आपको जितनी भी इच्छा हो उतने ही बना सकते हैं। इन ताबीजों को जिसके गले में डाल दिया जायेगा और वह जब तक पहने रहेगा तब तक उसे सर्प काटने का खतरा नहीं होगा अर्थात उसे सांप नहीं काटेगा। □

प्रेमोन्माद

यदि किसी पुरूष में तथा स्त्री में प्रेम परस्पर बहुत बढ़ जाये और सामाजिक नियमों का उल्लंघन होने की स्थिति आ जाये तथा किसी कारणवश उनकी शादी भी सम्भव न हो। हो सकता है कि वह शादी-शुदा होकर दूसरे घरों से हो अर्थात् पुरुष की पत्नी भी हो तथा स्त्री का पति भी हो। चाहे कारण जो भी हो यह प्रेमोन्माद जब असह्य हो जाये तो एक व्यक्ति यह प्रयोग करे।

एक ऐसी कब्र तलाश करें जिसके ऊपर एक संगमरमर का पत्थर लगा हो। इस पत्थर के ऊपर कब्र में सो रहे व्यक्ति का

विवरण होगा। इस पत्थर को फोड़ लायें। इसे चन्दन की भाँति जल में घिसें। इस जल को किसी अन्य पेय पदार्थ में मिला करके उस स्त्री तथा पुरुष को अलग-अलग पिला दें। इस प्रयोग के करते ही अर्थात् उस जल को पीते ही उनका प्रेमोन्माद समाप्त हो जायेगा। □

पपीते के बीज

यदि आपके पास अपनी रक्षा का कोई प्रबन्ध न हो और आपको लग रहा हो कि कोई मन्त्र प्रयोग करके आपके जीवन को समाप्त करना चाहता है। ऐसी स्थिति में आप पपीते के बीज लेकर ताँबे के ताबीज में भर ले और इसे कण्ठ में धारण कर लें इसके प्रभाव से आप पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे और दृष्टि दोष भी नहीं होगा। □

नजर बट्टू

एक रुद्राक्ष,. चांदी का चन्द्रमा, ताँबे का सूर्य, सफेद घुघंची (रत्ती), शेर का नाखून तथा रावटी को एक-एक धागे में पिरो करके बच्चे के गले में डाल देने से यह नजर बट्ट का कार्य करता है। इसके पहनते ही किसी की नजर नहीं लगती तथा भूत-प्रेत की बाधा से भी बचाव होता है। □

स्तम्भन

श्मशान में जाकर एक कोयला उठा लायें। एक लोहे की कलम से उस कोयले के ऊपर 'ह्रीं' को तीन बार गोदें। इसके मध्य उसका नाम लिखें, जिसका कि स्तम्भन करना हो। अब आप बायें हाथ से एक गड्ढा खोदें और उस गड्ढे में उस कोयले

का मुख नीचे की तरफ करके रख दें और गड्ढा भर दें। इसके प्रभाव से वह व्यक्ति तब तक स्तम्भित रहता है, जब तक यह कोयला दबा रहता है। □

बुद्धि स्तम्भन

यदि कोई व्यक्ति आपको बार-बार हानि पहुंचा रहा हो और आपका तिरस्कार भी कर रहा हो तो उल्लू की विष्ठा लेकर सुखा लें। इस सूखी हुई विष्ठा से थोड़ी सी विष्ठा लेकर अपने शत्रु को पान में रख करके खिला दें। ऐसा करने से वह हत्प्रभ हो जाएगा। उसकी बुद्धि का सदा के लिए स्तम्भन हो जाएगा। □

पूर्ण सफलताएं

यह प्रयोग अत्यन्त आसान भी है तथा अत्यधिक खतरनाक भी, क्योंकि इस प्रयोग में सांपों की आवश्यकता पड़ती है। आप अपनी जेब में लाल रंग का वस्त्र लेकर वन की सैर करें तथा ऐसे अवसर की ताक में रहें जबकि आपको सर्प विषय भोग करता हुआ मिले। जब दीखें तो स्वयं को सुरक्षित करके वह लाल कपड़ा उनके ऊपर फेंक दें। यह प्रयोग आसान इसलिए है क्योंकि केवल वस्त्र फेंकना है और यह खतरनाक इसलिए है कि यदि सांपों ने आपको देख लिया तो आपकी खैर नहीं हो सकती। इसी कारण स्वयं को बचाते हुए, छुपाते हुए वह वस्त्र उनके ऊपर फेंकना है। जब सर्प वहाँ से चले जाएँ तब उस वस्त्र को उठा करके सहेज लें। इसे अपनी जेब में रखें। जहाँ पर भी जायेंगे, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी। □

सर्व सिद्धि

आप जब स्नान करने लगें तब जल में ही अपनी अंगुली से एक त्रिभुज बनायें। इस त्रिभुज में 'ह्रीं' बीज लिखें यदि शक्ति प्राप्त करनी हो। इसमें 'क्लीं' बीज लिखें यदि वशीकरण करना हो। यदि मोक्ष प्राप्त करना हो तो 'ॐ' बीज लिखें। इस त्रिभुज की पंचोपचार से मानसिक पूजन करें। इसके बाद इसी त्रिभुज में डुबकी लगा-लगा करके स्नान करें। इसे तान्त्रिक स्नान कहते हैं।

इस प्रयोग को करने से सारे दिन की रक्षा प्राप्त होती है। मन प्रसन्न रहता है तथा सभी विघ्नों का अन्त होकर सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होतीं हैं। □

स्त्री सम्मोहन

जब रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तब विधिवत् ब्रह्मदंडी को उखाड़ लायें तथा इसे सुखा करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को जिस स्त्री के सिर पर डाला जाएगा वही पीछे लग जाएगी।

ब्रह्मदंडी पंसारी से मिल जाती है परन्तु इसे यदि स्वयं ही उखाड़ करके लाया जाए तो अधिक उत्तम रहता है। ब्रह्मदंडी का पौधा दो या तीन फीट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते भाले की नोक के सदृश होते हैं। इन पत्तों पर काले छोटे पड़े होते हैं। इसके फूल नारंगी रंग के होते हैं। इसके फल कांटेदार होते हैं। यह पौधा मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, कोंकण तथा आबू पर्वत श्रृंखला में पाया जाता है। □

औदुम्बर

गूलर के वृक्ष को औदुम्बर या उदुम्बर कहते हैं। यह वृक्ष

होता है और प्रायः प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है। सभी लोग इसे पहचानते भी हैं। इस वृक्ष के अनेकों प्रयोग हैं परन्तु यहां पर दो विशेष प्रयोग बता रहा हूं।

जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब इसकी जड़ प्राप्त करके घर लायें। इसे धूप दीप करके धन स्थान में रख दें। यदि इसे धारण करना चाहें तो स्वर्ण के ताबीज में भर करके धारण कर लें। जब तक ये तावीज आपके पास रहेगा या जब तक यह जड़ आपके धन स्थान में रहेगी तब तक आपको कोई कमी न आएगी। घर में सन्तान सुख उत्तम रहेगा। यश की प्राप्ति होती रहेगी। धन सम्पदा भरपूर रहेगी। सुख शान्ति से सन्तुष्ट रहेंगे।

यदि आप इस जड़ का प्रयोग चन्दन की भाँति चन्दन के स्थान पर करेंगे तो जो भी आपको देखेगा वह आपसे प्रेम करने लगेगा। □

वशीकरण गुटिका

आप सरसों तथा देवदार को पीस करके किसी भी पदार्थ से भिगो करके गोली बना लें। इस गोली को सुखा करके अपने पास रखें। जिसको वशीभूत करना हो तो अपने मुख में यह गोली रख करके उससे बातें करें। इस प्रयोग से सामने वाला व्यक्ति अवश्य ही वशीभूत हो जाता है। □

योनी बन्धन

यह दुष्ट प्रयोग है क्योंकि इससे अकारण ही दूसरों को कष्ट पहुंचता है। किसी को यूं ही कष्ट न पहुँचायें। यह करना आवश्यक ही हो तो निम्नलिखित प्रयोग करें।

पूर्व दिशा में उगी हुई लांगली की जड़ ले आएं। जिस स्त्री की योनि बाँधनी हो उसके बायें पाँव के नीचे की धूल लेकर लाँगली की जड़ के साथ मिलाकर किसी सीप में बन्द कर दें। इस सीप के ऊपर किसी वस्तु से लेप कर दें। इसके प्रभाव से स्त्री की योनि बँध जाएगी। □

मोहिनी धूप

काकड़ासींगी, वच, उशीर, राल, छोटी इलायची तथा मलयागिरी चन्दन मिला करके कूट-छानकर रख लें। इसे कुछ अंगारों पर डाल कर गूगल की भाँति धूप करें। स्त्री इसे अपने सारे शरीर पर, वस्त्रों पर तथा घर में करें। इसके प्रभाव से मिलने-जुलने वाले सभी लोग मोहित होते हैं। □

वीर्य स्तम्भन

छुईमुई की जड़ तथा भटिका को पीसें। इन्हें ताँबे के किसी पात्र में घिसें और संध्या के समय नेत्रों में अंजन की भाँति लगाएँ। इसके प्रभाव से पाँच घण्टे तक वीर्य रुका रहता है। □

गृह शान्ति

प्रायः घरों में कलह होती है और कहावत है कि जिस घर में कलह बसे, वहाँ से अन्न, धन भागे। ऐसा देखने में आया है कि जिस घर में कलह होती है वहाँ की स्थिति बड़ी ही विकट हो जाती है। प्रायः घरों को बरबाद होते ही देखा गया है। यह एक बड़ा ही चिन्ता करने का विषय है। इस समस्या से सबसे अधिक प्रभावी घर की गृहणी तथा बच्चे होते हैं। यह कलह यदि भयानक हो तो घर के बच्चे भयभीत होकर मानसिक तथा

शरीरिक रूप से रोगी हो जाते हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिए घर की स्त्री यह प्रयोग करे।

किसी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल शय्या त्याग कर उठें और नहा-धोकर गूलर के वृक्ष के पास जाएँ। यह प्रयोग तभी सम्भव होगा, जब गूलर लगे हुए हों। आपके घर में जितने प्राणी हों उतने ही गूलर तोड़ लें। इन्हें लेकर घर आ जाएँ। वापस आते हुए जितने गूलर लिए थे, उतने ही पत्ते भी तोड़ लाय।

घर में आकर घर की सफाई करें। सभी द्वार अच्छी भाँति बन्द करें। यह प्रयोग अकेले ही करना होगा। पुनः स्नान करें। अपने केश बिखरा लें। उत्तर दिशा की तरफ एक पटरा रखें। यह पटरा आम का हो। अब आप अपने सारे वस्त्र उतार दें। पटरे के सामने बैठ जाएँ। इस पटरे पर सभी पत्ते अलग-अलग रखें। इन पत्तों के आगे गूलर का प्रत्येक फल रखें। अब आप एक लोटे में जल लेकर उन पर छिड़काव करें। प्रत्येक फल को धूप प्रदान करें। सिंदूर, कुंकुम, चढ़ायें तथा दीप प्रदर्शित करें। आप समझ लें कि आपने प्रत्येक फल का पंचोपचार से पूजन करना है। इसके बाद यदि चाहें तो निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें :—

मन्त्र : "क्रीं क्रीं क्रीं हुँ फट्।"

मन्त्र का जाप करते हुए आप इन फलों को ध्यान से देखें। आप कल्पना करें वह सब कारण जिनसे कलह होती थी इन फलों में आ गए हैं। देख सकने से पश्चात् पत्तों के ऊपर दही तथा चावल एक-एक चम्मच डालती जायें। यह सामग्री फल को चढ़ायें। इसके बाद आप यहाँ पर किसी को न आने दें। अब आप वस्त्र पहन करके अपने घर का काम-काज कर सकती हैं।

शाम को जब सूर्यास्त हो जाए तो एक काला कपड़ा लेकर

इस पटरी के पास आएँ और समस्त वस्त्र उतार करके पटरी पर पड़ी सारी सामग्री इस पोटली में रख कर पोटली को उठा लें। पोटलो उठाने से पहले अपने वस्त्र पहन लें। अब पोटली को लेकर मुख्य द्वार पर आएँ। मुख्य द्वार पर इस पोटली से सात बार आघात करें और द्वार से बाहर निकल जायें। आराम से चलते हुए किसी भी चौराहे या पीपल के नीचे इस पोटली को डाल करके बिना वापस मुड़े आगे बढ़ते हुए दूसरे मार्ग से घर आ जायें।

इस रात्रि को विषय भोग न करें। श्रृंगार न करें। हल्का भोजन करें। गोश्त, मदिरा का सेवन न करें। आशा है कि आपको इससे लाभ अवश्य होगा और आप प्रसन्न होंगी। □

प्रबल स्त्री वशीकरण

पहले मैंने सुपारी प्रयोग कहा जिससे कि पुरुषों को दीवाना किया जाता है। अब स्त्री वशीकरण कहता हूँ जिसके द्वारा खतरनाक वशीकरण होता है अर्थात् वशीभूत हुई स्त्री सदा साधक के पास रहना चाहती है।

इस प्रयोग के लिए दो स्वच्छ फूलदार लौंग ले जाएँ। शुक्ल पक्ष के रविवार को या कृष्ण पक्ष के मंगलवार को इन लौंगों को लेकर एक कटोरी में रख दें इसके बाद अपना वीर्य लेकर इन लौंगों के ऊपर डाल दें। लौंगों को वीर्य में तर करें और किसी ऊँची जगह पर रख दें। जब वीर्य सूख जायें तो इन लौंगों को प्राप्त करके किसी ब्लैड या चाकू से प्रत्येक लौंग के दो टुकड़े कर लें। इस भाँति चार टुकड़े हो जायेंगे। इन्हें अलग-अलग ही रखें। प्रयोग करते समय एक लौंग फूल वाला किसी वस्तु में मिलाकर खिला दें। अब आप इसके प्रभाव का आनन्द उठाएँ।

इस प्रयोग के प्रभाव से स्त्री कभी भी आप से अलग नहीं होगी। सदा सर्वदा आपके ही साथ, आपको समर्पित रहेगी। इन प्रयोगों को करने से स्त्री प्रायः घर परिवार के लिए व्यर्थ ही हो जाती है। अतः ऐसे प्रयोग किसी विशेष स्थिति में ही करना चाहिए। □

लौंग वशीकरण

आप देख रहे होंगे कि तन्त्र प्रयोग के सभी प्रयोग कितने आसान तथा शीघ्र प्रभावी हैं परन्तु इसके छिपे हुए प्रभावों से आप परिचित नहीं हैं। एक बात सदा याद रखें कि जो वस्तु तान्त्रिक प्रयोग करक खिलाई जाती हैं, वह सदा सर्वदा शरीर में सुरक्षित रहती है जबकि रात्रि का खाया भोजन पच के मल के रूप में निष्कासित हो जाता है।

इससे पहले लौंग का वीर्य के साथ प्रयोग कहा गया। यदि आप वीर्य न निकालना चाहें तो मंगलवार की रात्रि को एक फूल वाला लौंग लेकर अपनी जननेन्द्रिय के मुख में रख लें। रात भर इसे पड़ा रहने दें। बुधवार की प्रातः इसे निकाल लें।

इस लौंग को जिस स्त्री को खिलाया जायेगा, वही तीनों वचनों से सांसारिक नियमों की अवहेलना करते हुए आपको प्राप्त होगी

यह एक प्रबल वशीकरण प्रयोग है अतः इसे सावधानी के साथ करना चाहिए। ■

अशोक

इस वृक्ष को पार्कों में, स्कूलों में, बंगलों में तथा घर की क्यारियों में शोभा के हेतु लगाते हैं। इससे प्रायः सभी परिचित

भी हैं। यह वृक्ष प्राय: दो प्रकार का होता है। एक वृक्ष के पत्ते रामफल सदृश होते हैं। इसके ऊपर नारंगी रंग के फूल आते हैं। इस वृक्ष पर माघ तथा फाल्गुन में पुष्प खिलते हैं। इस वृक्ष की दूसरी जाति के पत्ते आम के पत्तों की भांति होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। इस सफेदी पर पीले रंग की झांई होती है। इसके ऊपर चौमासे में फल लगते हैं जो कि कच्चा होने पर नीले रंग का तथा पक जाने पर लाल रंग का हो जाता है। यह वृक्ष जिस द्वार पर लगते हैं वहाँ पर धनधान्य की कमी नहीं रहती। इस वृक्ष के नीचे बैठ करके शक्ति साधन करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

अशोक को शोकनाश भी कहते हैं, क्योंकि इसे घर में लगाने से तथा धारण करने से व्यक्ति को शोक नहीं होता। इसे अंगना प्रिय भी कहते हैं, क्योंकि इससे आंगन की शोभा बढ़ती है। इसे स्त्रीनिरीक्षणदोहद भी कहते हैं क्योंकि इसे खाने से स्त्री के रोग समाप्त होकर सौन्दर्य वृद्धि होती है।

सफलता हेतु

अशोक वृक्ष का एक पत्ता तोड़ करके सिर में धारण करने से जहाँ पर भी जाओ सफलता प्राप्त होती है।

धन अम्बन्धी

अशोक वृक्ष की जड़ को विधिवत् ग्रहण करके धारण करने से कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होती। इस जड़ को धन स्थान में रखने से सदा बरकत बनी रहती है।

दारिद्रय नाशक

यदि भाग्य में ही दरिद्रता लिखा करके जन्म लिया है तो निराश न हों। अशोक वृक्ष के फूल को प्रतिदिन सिल पर पीस

करके शहद के साथ मिला करके खायें। कुछ दिन निरन्तर खाते रहने से दरिद्रता का अन्त हो जाता है। इस प्रयोग काल में धनदा देवी का पूजन करते रहें।

रोग नाशक

यदि अशोक वृक्ष की छाल को उबाल करके पिया जाए तो स्त्री के सारे रोग नष्ट हो जाते हैं। इसे निरन्तर प्रयोग करने से स्वास्थ्य सुधर करके सौन्दर्य वृद्धि होती है।

चिन्ता नाशक

यह माना जाता है कि चिन्ता चिता की खान है। अतः चिन्ता नहीं करनी चाहिए। प्रयास करने पर भी यदि चिन्ता न हटे तो आप अशोक के तीन पत्ते लेकर प्रातःकाल ही निराहार मुख से चबावें। ऐसा कुछ दिन करने से चिन्ता समाप्त होकर शरीर स्वस्थ हो जाता है।

समस्त लाभ

यदि अशोक वृक्ष के बीजों को ताँबे में भर करके ताबीज बना लें और कण्ठ में धारण कर लें तो सभी भाँति के लाभ प्राप्त होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

देवी साधक

अशोक वृक्ष का कुल वृक्ष माना जाता है अतः देवी के उपासक इस वृक्ष को जल द्वारा सींचते रहें। प्रतिदिन जल अर्पण करें। जल चढ़ाते समय अपना इष्ट मन्त्र जपते रहें। ऐसा करने से देवी की प्रसन्नता शीघ्र प्राप्त होती है। □

बाँदा (विभिन्न प्रकार के)

तन्त्र प्रयोगों में बांदा अत्यधिक प्रयोजनीय है। इसे जानते तो सभी हैं परन्तु सही ढंग से परीचित नहीं हैं। इसे बन्दा समझते हुए लोग मानव आकृति को ही ढूंढ़ते रहते हैं जबकि बांदा अक्सर देखने में आता है, यह माना जाता है कि यह वृक्ष का रोग है। अब यह रोग हो या शोक हो, हमारे तो काम की वस्तु है अतः इस पर विशेष ध्यान दें।

आपने देखा होगा कि किसी-किसी वृक्ष के ऊपर दूसरा वृक्ष उग जाता है या बेल (लता) ही उग जाती है। यह प्रायः वृक्ष के सन्धिस्थल पर उगता है। माना जाता है कि यह कौवे के द्वारा विष्ठा करने पर हो जाता है क्योंकि वह जो बीज खाता है वही विष्ठा के साथ निकल कर बांदे का रूप ग्रहण करता है। यह स्थिति अपवाद भी है क्योंकि कुछ ऐसे भी बांदे देखे गए हैं जो कि कौवे की विष्ठा से नहीं हुए थे। यदि आपने कभी बाँदे पर ध्यान नहीं दिया तो पीपल का वृक्ष देखें। आशा है कि उस पीपल के वृक्ष पर दूसरा विभिन्न पौधा उगा हुआ मिलेगा। यदि न दिखे तो कोई पुराना वृक्ष तलाश करें और उसमें बाँदा देखें। आपको अवश्य ही बाँदे का दर्शन होगा।

मुख्यतः एक वृक्ष के ऊपर दूसरी जाति का वक्ष या लता होना ही बाँदा कहलाता है। यह जिस वृक्ष पर होता है, उसी का बाँदा कहलाता है। कहीं-कहीं पर वृक्षों के सन्धि स्थल की गाँठों को ही बाँदा माना जाता है जो कि अपने लाभ प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है। इसमें कुश का बाँदा अपवाद है क्योंकि यह गाँठ युक्त ही पाया गया है।

इन बांदों का हमारे तन्त्र प्रयोग में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। आइए ! अब विभिन्न वृक्षों के बाँदों के नाम पर वार्ता करें।

शिरस का बांदा

यदि आपको शिरस वृक्ष पर बांदा मिले तो पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्राप्त करें। यथाविधि उसे सिर पर धारण करने से धारक अभय हो जाते हैं। इसे दुग्ध के साथ सेवन करने से वीर्य वृद्धि होकर आत्मबल बढ़ जाता है।

बेर का बांदा

यदि आपको बेर के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे स्वाती नक्षत्र में यथाविधि ग्रहण करके हाथ में धारण करें। इस बाँदे को धारण करके आप जिसे हाथ जोड़कर जो काम करने के लिए कहेंगे, उसे वह अवश्य करेगा। देव उपासना में भी इस बाँदे को हाथ में धारण करके देवता से निवेदन करेंगे तो वह निवेदन भी पूर्ण होता है।

बाँदे का तिलक

आम का बांदा तथा शाखोट वृक्ष का बांदा ग्रहण करके गोखरू लें। इनसे चौथाई हिस्सा नमक लेकर सारी सामग्री को घिस करके बकरी के दूध से माथे पर तिलक करें। इस तिलक के लगाने से पृथ्वी, वायु तथा आकाश में गुप्त हुए रहस्य प्रकट हो जाते हैं।

बहुवार का बांदा

यदि आपको बहुवार वृक्ष पर बांदा मिले तो उसे मघा नक्षत्र में यथाविधि प्राप्त कर लें। इसे धारण करने से या धन स्थान में रखने से कभी भी धन की कमी नहीं होती।

अनार का बांदा

यदि आपको कभी अनार के वक्ष पर बांदा मिले तो उसे

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यथाविधि ग्रहण करें। इसे धारण करने से धन भरपूर रहता है।

बिदारी कंद का बांदा

यदि बिदारी कंद का बांदा मिले तो पूर्वा फाल्गुनो नक्षत्र में प्राप्त करें। इसके रखने से धन को किल्लत नहीं रहेगी।

कुश का बांदा

यदि कभी आपको कुश में बांदा दिखे तो उसकी रक्षा करें और जब भरणी नक्षत्र हो तब इसे प्राप्त कर लें। इस बांदे को जहाँ भी रखा जाएगा, वहीं पर धन सम्पदा भरपूर रहेगी।

गूलर का बांदा

यह बाँदा प्रायः आराम से हो प्राप्त हो जाता है। आप गूलर के वृक्ष पर बाँदा देख करके उसका ध्यान रखें। जब रोहिणी नक्षत्र हो तब इस बांदे को प्राप्त कर लें। यह बाँदा जहाँ भो रहेगा। वहीं पर धन अन्न भरपूर रहेगा। इस बांदे को खाने व धारण करने से खाने वाला शक्तिशालो हो जाता है।

थूहर का बांदा

यदि कभो आपको थूहर के ऊपर कभी बांदा दृष्टिगोचर हो तब कृत्तिका नक्षत्र तक उसका ध्यान रखें, उसकी रक्षा करें। जब कृत्तिका नक्षत्र हो तब इस बांदे को प्राप्त कर लें। इसे भुजा में धारण करने से शब्द सिद्धि प्राप्त होती है।

वट वृक्ष का बांदा

जब आद्रा नक्षत्र हो तब वट वृक्ष का बांदा प्राप्त करें। इस बांदे को हाथ में धारण करने से कभी भी युद्ध में हार नहीं होती।

आम का बाँदा

आम के बाँदे को कभी भी शुभ संयोग पर प्राप्त करके हाथ में धारण करें। इसे बाँधने से विजय प्राप्त होती है।

निर्गुण्डी का बाँदा

(१) हस्त नक्षत्र वाले दिन निगुण्डी का बाँदा ग्रहण करके धारण करने से कभी भी धन की कमी नहीं रहती।

(२) भरणी नक्षत्र में यह बाँदा लेकर धारण करने से धारक विद्वान बन जाता है।

अनार का बाँदा

जेष्ठा नक्षत्र वाले दिन अनार का बाँदा प्राप्त करके घर के दरवाजे के ऊपर स्थापित कर दें। ऐसा करने से घर में कोई भी अला-बला प्रवेश नहीं करती। यदि कोई प्रवेश कर चुकी हो तो पलायन कर जाती है। इसके प्रभाव से घर के बालक हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। उन्हें कोई भी ग्रह बाधा नहीं सताती।

हार सिंगार का बाँदा

हस्त नक्षत्र में हार सिंगार का बाँदा प्राप्त करके धारण करने से पैसे की तंगी नहीं आती।

कैथे का बाँदा

यदि आपको कभी कैथे के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे कृत्तिका में प्राप्त करके धारण कर लें। इस बाँदे के प्रभाव से तलवार का स्तम्भन होता है अर्थात् धार वाला कोई भी औजार देह को हानि नहीं पहुंचा पाता।

बड़ का बाँदा

जब अश्विनी नक्षत्र हो तब बड़ का बाँदा ग्रहण करें। इसे

घर लाकर दूध के साथ घिस करके पीने से वृद्ध भी तरुण हो जाता है। इस बाँदे को कमर में धारण किए रहने से मैथुन शक्ति अश्व की भाँति हो जाती है।

नीम का बांदा

यदि आपको कभी नीम के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे आर्द्रा नक्षत्र में प्राप्त करें। इसके बाद इस बाँदे को शत्रु के सोने वाले कमरे में दबा दें। इसके प्रभाव से शत्रु मर जाता है।

शिरस का बांदा

आद्रा नक्षत्र में ही शत्रु का नाश करने के लिए शिरस वृक्ष का बाँदा ग्रहण करें। इस बाँदे को शत्रु के निवास स्थान में दबा देने से निश्चय ही शत्रु नष्ट हो जाता है। इसके सेवन करने से आयु की बढ़ौत्तरी हो जाती है तथा ज्ञान-विज्ञान विचित्र हो जाते हैं।

वच का बांदा

किसी भी ग्रहण काल में वच का बाँदा ग्रहण करके सुखा लें। इसे शुद्ध घी के साथ सात दिन खाने से व्यक्ति वाक्यपति हो जाता है।

शाखोट का बांदा

(१) मृगशिरा नक्षत्र में शाखोट का बाँदा विधिवत् प्राप्त करें। एक पान में इस बाँदे को रखकर मुख में धारण करने से व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

(२) यदि अनुराधा नक्षत्र में शाखोट वृक्ष का बाँदा ग्रहण करके गोरोचन के साथ पीस करके काजल की भाँति नेत्रों में लगाया जाए तो पृथ्वी में छुपे खजानों का पता चलता है।

रोहित का बांदा

यदि अनुराधा नक्षत्र में रोहित का बाँदा प्राप्त करके मुख में रख लिया जाए तो मनुष्य तत्काल ही अदृश्य हो जाता है।

कपास का बांदा

भरणी नक्षत्र में कपास का बाँदा प्राप्त करके भुजा ने धारण करने से व्यक्ति तत्काल ही दृष्टि से ओझल हो जाता है।

बेल का बांदा

अश्विनी नक्षत्र में बेल का बाँदा प्राप्त करके हाथों में धारण करने से व्यक्ति तत्काल दृष्टि से ओझल हो जाता है।

अशोक का बांदा

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में अशोक का बाँदा प्राप्त करके पीसें और पी जाएं तो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

आंवले का बाँदा

आश्लेषा नक्षत्र में आँवले का वाँदा प्राप्त करके भुजा में धारण करने से व्याघ्र का, राजा का तथा चोर का भय नहीं होता अर्थात् इनसे कोई खतरा नहीं होता है।

मुलैहठी का बांदा

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब मुलैहठी का बांदा लाकर जब भी किसी सभा में फेंक देंगे तभी सभा के लोग हत-प्रभ होकर खामोश हो जायेंगे।

पीपल का बांदा

यदि किसी गृहणी ने अपने गर्भाशय में गर्भ धारण करना हो तो अश्विनी नक्षत्र में पीपल का बाँदा प्राप्त करके गाय के दूध

के साथ सेवन करें तो उसे अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है। इस प्रयोग से बाँझ स्त्री भी माँ बन सकती है। इस बाँदे को गृह में स्थापित करने से जीव हानि नहीं हुआ करती।

बाँदा

कोई भी बाँदा गृह में स्थापित करने से अग्नि भय नहीं होता। स्वर्ण के ताबीज में भरकर धारण करने से रोग शान्त हो जाते हैं।

नीम का बाँदा

जब ज्येष्ठा नक्षत्र हो तब नीम का बाँदा लेकर जिस भी व्यक्ति के शरीर पर डाला जाएगा। उसके भाग्य का उसी समय से नाश होकर दुर्भाग्य का प्रारम्भ हो जाएगा। □

आसन स्तम्भन

इस प्रयोग को करने से जल के ऊपर आसन बिछाकर उसके ऊपर स्वयं बैठ जाने से आसन या बैठने वाला जल में डूबता नहीं है बल्कि जल के ऊपर ही आसन तैरता रहता है। यदि आप यह कार्य करना चाहें तो मनुष्य की खोपड़ी लाकर कूट-पीसकर चूर्ण कर लें। इसके बाद श्लेष्मांतक नामक वृक्ष का लटक रहा फल लाकर पीसें और खोपड़ी वाले चूर्ण में मिला दें। इस चूर्ण का आसन पर दो अंगुल का पुट लगा दें और आसन को सुखा करके समेट लें। जब आपकी इच्छा करतब दिखाने की हो तो इस आसन को लेकर किसी नदी पर जाएं और आसन खोल करके जल की धारा पर बिछा कर उसके ऊपर स्वयं भी बैठ जाएं। आपको देखने वाले आश्चर्य में पड़ जाएंगे क्योंकि आप जल में डूबेंगे नहीं। □

शत्रु मुख स्तम्भन

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली चमेली की जड़ प्राप्त करें। इस जड़ को कण्ठ में धारण करने से सभी भाँति की सुरक्षा होती है तथा शत्रु कुछ भी विघ्न प्रस्तुत नहीं कर पाता। इसी जड़ को यदि मुख में धारण किया जाए तो सभी शत्रुओं का मुख बन्द हो जाता है। □

गज स्तम्भन

यदि आप कौंच की जड़ को भुजा अथवा सिर पर धारण करेंगे और यदि आपको हाथी मिलेगा तो स्तम्भित होकर खड़ा रह जाएगा।

इसी जड़ को सम्भोग के समय मुख में धारण किए रहने से वीर्य स्तम्भित रहता है। □

व्याघ्र स्तम्भन

कंटकारी की ही जाति की एक वनौषधि होती है जिसे कि बृहती कहते हैं। इस पर सफेद पुष्प आते हैं। यह मनुष्य की भाँति ऊँची होती है। इसके पत्ते पर तथा टहनी पर काँटे भी होते हैं। इसके फूल बैंगन के फूलों की भांति तथा पत्ते भी बैंगन के पत्तों के सदृश होते हैं। इसकी जड़ को यदि धारण किए रहेंगे तो व्याघ्र जब भी सामने आएगा तब ही स्तम्भित हो जाया करेगा।

इसकी जड़ को एक रंग वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो के दूध में पीस कर ऋतु स्नाता स्नान करके पीये तो उसे पुत्र गर्भ की प्राप्ति होती है।

गर्भवती स्त्री यदि दूसरे मास में इसको जड़ को ऊपर कही विधि से तीन दिन तक प्रयोग करे और नमकीन और रोटी न खा कर चावल की खीर को खाए तो निश्चय ही गर्भ में स्थिर हुई संतान सुन्दर पुत्र के रूप में बदल जाती है। □

शस्त्र सिद्धि

ज़ब किसी मंगलवार के दिन कृतिका का विशाखा नक्षत्र हो तब कैसा भी शस्त्र बनावें। वह युद्ध में विजय प्राप्त करता है। ▣

बन्धन

बन्धन का अर्थ प्राय: किसी कैदखाने में कैद होनें से लगाया जाता है। सम्भवत: यही कारण है कि बन्धन विषय पर कोई भी ध्यान नहीं देता। यहाँ पर मैं स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि कैदखाने की कैद को तो बन्धन कहते ही हैं। इसके अलावा जब कोई तांत्रिक प्रयोग करके शरीर को बांध देता है तो उसे भी बन्धन कहा जाता है। जन्मकुण्डली में भी एक बन्धन योग होता है। अपने आप ही कोई अदृश्य शक्ति बन्धन कर देती है। दृष्टि बन्धन भी होता है। तात्पर्य यही है कि किसी भी भाँति व्यक्ति विशेष उन्नति न कर सके। इन सभी बन्धनों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए दिसम्बर मास के अन्तिम दिनों में चलनें वाले मार्गशीर्ष मास में जब पूर्णिमा पड़े तो चित्रक वृक्ष की जड़ को प्राप्त कर लें। इस जड़ को सिर में धारण करने से बन्धन के सारे बांध टूट कर सर्व सुख प्राप्त होते हैं।

यदि किसी का बन्धन करना हो तो उसके दोनों पैरों के

नीचे की धूल लकर एक मिट्टी के शकोरे में डाल करके काले धागे से लपेटे और श्मशान में दबा दें।

इसी भाँति के अन्य कई प्रयोग भी होते हैं। □

विद्वेषण

साही का काँटा लेकर शत्रु के घर में गाड़ देने से उसके घर में परस्पर वैर भाव उत्पन्न हो जाता है। इस काँटे को यदि '**ॐ नमो नारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेष कुरु-कुरु स्वाहा**' से अभिमन्त्रित किया जाए तो दो व्यक्तियों को परस्पर वैर भाव हो जाते हैं।

भैंस और घोड़े का गोबर लेकर उसमें गाय का मूत्र मिला दें। यह लेप सा बन जाएगा। इस लेप से दो घनिष्ठ मित्रों का नाम लिख दे। इसके प्रभाव से शीघ्र ही उनमें शत्रुता हो जाएगी। □

वशीकरण

यह बहुत ही सरल प्रयोग है यदि आपने किसी स्त्री या कन्या को मोहित करना हो तो आकाश बेल के पत्ते तथा फूल लेकर कूटें और इसका रस निकाल लें। इस रस में कुछ भी भिगो करके अपनी केन्द्रित स्त्री को भेंट में दें। यह भेंट लेते ही स्त्री डाली से टूटे फूल की भाँति आप की शरण में आएगी।

इस वशीकरण प्रयोग को स्त्रियाँ भी पुरुष को मोहित करने के लिए कर सकती हैं। विधि इसी भाँति ही रहेगी। □

पहाड़ी सिंदूर

इसे ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से जटिल से भी जटिल पीलिया रोग समाप्त हो जाएगा। □

भालू का नाखून

इसे कण्ठ में धारण करने से ऊपरी शिकायतें दूर होती हैं। मन का भय समाप्त होता है। □

समुद्र झाग

यदि किसी का कान बहता हो और कोई उपाय लाभ न करता हो तो समुद्र झाग को ताबीज की भांति कण्ठ में धारण करा दें। □

शेर का नाखून

यदि शेर के नाखून को ताबीज की भांति कण्ठ में धारण कराया जाए तो व्यक्ति में नया जीवन, नई शक्ति तथा नई स्फूर्ति पैदा होता है। सभी स्थानों पर विजय मिलती है। किसी भी तरह की ऊपरी शिकायत नहीं होती। □

उल्लू का माँस

यदि उल्लू का माँस ताबीज में भरके कण्ठ में धारण किया जाए तो समस्त भय पलायन कर जाते हैं। किसी भी तरह की अदृश्य हवा की शिकायत नहीं होती। □

भालू का बाल

यदि रात को डर लगता हो, बुरे-बुरे स्वप्न आते हों, सदा मन डरा-डरा सा रहे, दृष्टि दोष शीघ्र हो जाता हो, आपके पास कोई टोना टोटका करता हो, बहुत मेहनत करने पर भी पढ़ाई याद न रहे तो रीछ के पाँच बाल लेकर ताबीज की भांति

कण्ठ में धारण करें। इसे पहने रहने से उपरोक्त बातें समाप्त होकर सुख मिलता है और किसी का किया कराया व्यर्थ हो जाता है। □

इन्द्रजाल

यह किसी ग्रन्थ का नाम नहीं हैं बल्कि एक वनौषधि है। जिस भांति पत्ते की नसें होती हैं उसी भाँति का यह पत्ते की नसों की भांति होता है। इसमें पत्ते की भांति पूरो पर्त नहीं होती। बल्कि केवल नसें ही दिखाई पड़ती हैं। पत वाला हिस्सा खाली होता है। इसका प्रयोग बड़ा महत्व रखता है। इसकी थोड़ी सी टहनी तोड़ कर तावीज में भरने से ताबीज तिलस्म शक्ति प्राप्त कर लेता है। □

गैंडे की खाल

यदि गैंडे की खाल को ताबीज की भांति पहना जाये तो शरीर स्वस्थ होता है। डरावने स्वप्न नहीं आते। ऊपरी शिकायतों की क्या हिम्मत जब ग्रह भी स्तम्भित हो जायें। □

उल्लू के नाखून

यदि उल्लू के नाखूनों को कण्ठ में धारण किया जाए तो नजर लगनी बन्द हो जाती है। किये कराए का प्रभाव समाप्त हो जाता है। ऊपरी शिकायतें नहीं होतीं। □

मोर का मुकुट

यदि कोई व्यक्ति मोर के सिर पर उगा हुआ मुकुट प्राप्त करके अपने कण्ठ में धारण करता है तो संसार मोहित होता है। □

सूअर का दाँत

इसका प्रयोग स्तम्भन के लिए किया जाता है।

जो व्यक्ति सूअर का दांत कण्ठ में धारण करता है वह सदा विजयी रहता है। उसे भूत प्रेत आदि से कोई भय नहीं रहता। उसे कभी नजर नहीं लगती। उसे कभी स्वप्न दोष नहीं होता। यदि सूअर का दाँत कमर में बांध कर सम्भोग किया जाय तो वीर्य स्तम्भित होता है। □

रुद्राक्ष

यह नाम सर्व परिचित है और प्रायः हर स्थान पर यह प्राप्त होता है। पाँच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से भूत-प्रेत, अला-बला भाग जाती है।

रुद्राक्ष का तन्त्रों में बड़ा योगदान है। विद्वानों ने इसे कण्ठ में धारण करने तक या मन्त्र सिद्धि तक ही सीमित रखा है। आजकल रोगों की शान्ति हेतु भी इसे धारण किया जाता है।

यहाँ रुद्राक्ष के तांत्रिक प्रयोग बता रहा हूँ।

इसे चन्दन की भांति घिस कर माथे में टीका लगाने से शिव कृपा प्राप्त होती है। मोहन होता है। शिर का दर्द शांत होता है।

इसे चन्दन की भांति घिस कर ऊपरी शिकायतों वाले रोगी के पूरे शरीर पर मल देने से ऊपरी शिकायतें तत्काल समाप्त हो जाती हैं।

इसे हृदय के पास धारण करने से हृदय सशक्त होता है।

रुद्राक्ष के तांत्रिक विधि से प्रयोग करने पर भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, डायन, नदी, जंगल तथा पहाड़ के देवता का बाधा, पितृ प्रकोप, मानसिक विकार समाप्त होता है। इस

विषय की विस्तृत चर्चा 'रुद्राक्ष के तांत्रिक प्रयग' नामक पुस्तक में अलग से करूंगा।

रात को सोते समय जो बच्चे चौंकते हैं उन्हें रुद्राक्ष घिस कर पिलाने तथा छाती पर लेप करने से इनका चौंकना बन्द हो जाता है।

एक रुद्राक्ष को तथा एक कर्ष सुगन्धरास्ना को कूट पीसकर गाय के दूध के साथ मासिक स्राव के दिनों से प्रारम्भ करके ७ दिन तक खाने से बाँझ को भी पुत्र प्राप्त होता है। □

शत्रु दमन

यदि आपके शत्रु बढ़ जाएं या आपको अपने शत्रु से झगड़े या युद्ध का खतरा लगे तो आद्रा नक्षत्र में बाँस की जड़ ग्रहण करके शत्रु के समक्ष जाएं। ऐसा करने से युद्ध में शत्रु की पराजय होती है। यूं भी इसे धारण करने से शत्रु की शत्रुता की भावना रखने वाले मित्रों की स्वतः ही पराजय हो जाती है क्योंकि उनके जीवन के अपने सभी काम विपरीत फल प्रदान करने लगते हैं। जिस कारण वह अपने आप में ही सिमट जाते हैं। □

एक पल में सौ योजन

इस प्रयोग को सिद्ध करने से आप अपनी इच्छानुसार एक ही पल में सौ योजन तक घूम कर आ सकते हैं। प्रस्तुत प्रयोग को करने में धैर्य को अत्यधिक आवश्यकता है।

एक चील का घोंसला देखें और उसका मानसिक पूजन करें। यह पूजन नित्य ही करना होगा। पूजन के लिए जाते समय थोड़ा सा कच्चा माँस भी ले जाया करें और पूजन करके घोंसले

में डाल दिया करें। जब तक चील अण्डे न रख दे तब तक इस प्रयोग को धैर्य के साथ करना होगा। जब चील अण्डे रख दें तब आप दो महीन पाइप लें। यह पाइप पाँच इंच के होंगे तो ठीक रहेगा। इन पाइपों का एक तरफ से मोम लगाकर मुख बन्द कर द। इसके बाद साढ़े तीन तोला शुद्ध पारा लेकर इन पाइपों में भर दें। एक महीन लम्बी सुई लें तथा दोनो पाइपों को लेकर चील के घोंसले पर आएं। एक अंडे के ऊपर एक पाईप रख कर महीन सुई को पाईप में डालकर धीरे-धीरे दबाते हुए सावधानी से अण्डे में छेद कर दें। यह छेद सावधानी से हल्के हाथ से करें जिससे कि अण्डा न टूटे। छेद होते ही सुई वापिस खींच ले। इस क्रिया को करने से पाईप का सारा पारा अण्डे में घुस जाए तो पाईप को हटा कर चील की बीठ से छेद बन्द कर कर दें। इसी भाँति दूसरे अंडे के साथ भी करें। यह कार्य पूर्ण करके पुनः घोंसले की मानसिक पूजा करें और वृक्ष से उतर जाएँ। अब आपको नित्य ही वृक्ष के नीचे आकर गोश्त आदि चढ़ा करके मानसिक पूजन तब तक करना होगा, जब तक कि अण्ड फूट नहीं जाते।

जब आप देखें कि अण्डे फूट गये हैं तब घोंसले को तथा अंडों को देखें। आपको दो गुटिकाएँ मिलेंगी। उन्हें उठा लें। इन दोनों गुटिकाओं में से एक गुटिका किसी भी अन्जान व्यक्ति को दे दें तथा दूसरी गुटिका अपने पास रख लें। जब आपको एक ही पल में सौ योजन जाना हो या कहीं पर भी जाना हो, तब इस गुटिका को मुख में रख लें। इसके प्रभाव से आप कहीं भी कुछ ही छणों में पहुँच जाएंगे। जहाँ पर रुकना अभीष्ट हो, वहां पर गुटिका मुख से निकाल लें। वापस आने की अभिलाषा होने पर पुनः गुटिका मुख में धारण करके सौ योजन दूर होने पर भी एक ही पल में वापस आ जाएंगे। □

भूत पिशाच नाशक

यदि कोई व्यक्ति भूत पिशाचादि से परेशान हो तो वह किसी भी ग्रहणकाल में गंधमांसी की उत्तर दिशा की ओर अग्रसित हो रही जड़ को प्राप्त करके अंगूठी की भाँति अपनी अंगुली में धारण कर ले इसके प्रभाव से समस्त भूत प्रेतादि दूर भाग जाते हैं। और पुनः वापस नहीं आते। □

विकट स्तम्भन

यदि किसी शत्रु से परेशान होकर उसका स्तम्भन करना अभीष्ट हो तो इस विधि के अनुसार करें। आप आश्चर्य मान जाएँगे क्योंकि यह प्रयोग जिन्दगी भर के लिए विकट स्तम्भन करता है तथा शीघ्र प्रभावी होता है। आश्चर्य आपको इस बात का भी होगा कि यह प्रयोग अत्यन्त आसान है।

आप कहीं दो वृक्ष देखें जो कि आमने-सामने हों। यह वृक्ष विषैले होने चाहिएँ। यदि आपको आक, कनेर, मेंथा, कुचले का वृक्ष मिले तो भी प्रयोए का शुभारम्भ करें क्योंकि यह भी विष के वृक्ष हैं। जब आपको आमने सामने दो वृक्ष मिलें तो किसी क्रूर दिवस में इसकी जड़ को प्राप्त कर लें। यह जड़ें दक्षिणमुखी हों तो अच्छा रहेगा। इस जड़ को लाकर किसी चाकू की सहायता से पुरुष की प्रतिमा गोदें यदि शत्रु पुरुष हो और यदि स्त्री शत्रु हो तो स्त्री की प्रतिमा गोदें। यह प्रतिमा कैसी भी बने, विचार न करें। इस प्रतिमा पर केवल शत्रु के अंग सही होने चाहिएँ। शत्रु की जीभ बनायें। नेत्र बनायें। हृदय, कान, ठोड़ी, पांव, हाथ तथा इन्द्री आदि का उभार अवश्य रखें। अब इन प्रतिमाओं में शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा भी करें। 'लं' बीज मंत्र का एक हजार बार जप करें। इसके बाद इन प्रतिमाओं को किसी

मंदिर के पास, किसी श्मशान में या शत्रु के द्वार के पास पृथ्वी में गाड़ दें। इस प्रयोग के पूर्ण होते ही महाभयानक स्तम्भन होगा, जिस कारण आपका शत्रु जीवन भर के लिए स्तम्भित हो जायेगा।

तेलिया कन्द

यह बहुत चमत्कारिक वनोषधि है और भाग्यशाली लोगों को हा प्राप्त होती है। इसकी उत्पत्ति गिरनार, हिमालय तथा आबू आदि पर्वतीय क्षेत्रों में होती है। इसके पत्ते कनेर के पत्तों की भाँति चिकने तथा पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं। इन पत्तों के ऊपर काले तिलों की भाँति छींटे-से पड़े होते हैं। यह एक बड़ी महत्वपूर्ण वनस्पति है और इसी के विषय में सभी शास्त्र मौन हैं। इसे प्रत्येक भाषा में तेलिया कन्द ही कहा जाता है क्योंकि इसके पत्ते पर जैसे तेल चुपड़ा गया हो, इस भाँति चिकनापन तथा चमक होती है। इसके तने के पास पृथ्वी लगभग एक मीटर के व्यास तक इस भाँति की होती है जैसे कई लीटर तेल गिरा दिया गया हो। यह पौधा बड़ा चमत्कारिक, प्राप्त करने में खतरनाक तथा देखने में दुर्लभ है।

तन्त्र में गोपनीयता अत्यन्त आवश्यक होती है शायद इसी कारण इसके विषय में सभी मौन हैं। इस पौधे की जड़ का प्रयोग किया जाता है। जब यह पौधा आपको मिले तो स्वयं उखाड़ने के बदले एक बकरी, खरगोश या लोमड़ी का प्रयोग करें। मेरी समझ से बकरी ही उचित रहेगी। यदि बरसात के दिन हों तो इसके तने में पतली तथा मजबूत रस्सी बांध कर बकरी के गले में बांध कर उसे हांक दें। बकरी भागेगी तो यह

पौधा भी साथ ही खिंच जायेगा। चूंकि इसकी जमीन मुलायम होती है अतः यह जड़ समेत निकल आता है। इस वृक्ष की जड़ में एक सर्प होता है जो कि जड़ के निकलते ही जड़ की तरफ भागता है और क्रोधित होकर जिसे भी पाता है, उसे लगातार काटता ही रहता है। यही कारण है कि यह वनस्पति प्राप्त करना खतरनाक है। दुर्लभ इसलिए है कि यह बड़े भाग्य से ही दर्शित होती है।

दक्षिण भारत तथा मध्य भारत की पर्वत शृंखला के दुर्गम क्षेत्रों में भी तेलिया कन्द की उत्पत्ति होती है। इस पौधे से काले रंग का कुछ तरल पदार्थ बहता है जिसमें कि बहुत चिकनाई होती है। यदि भाग्यवश यह आपको मिल जाये या दिख जाये तो सावधानी से प्राप्त करें।

पारा

तेलिया कन्द का रस निकाल कर पारे के साथ खरल में मर्दन करने से बीस मिनट में ही पारा ढीला होकर मर जाता है। यह ढीला रहता हैं अतः मनचाही शक्ल दे सकते हैं।

गोली

तेलिया कन्द को छोटे-छोटे टुकड़े करके गोली की भाँति कर लें और चन्द्रमा की चाँदनी में सुखाएँ। जब यह सूख जाए तो एक गिलास दूध में गोली डाल कर दस मिनट रुकें। इसके बाद गोली निकाल कर दूध पी जाएँ। यह दूध सभी रोगों को नाश करके शरीर को हरा-भरा करता है।

सोना

ताँबे को गरम करके तेलिया कन्द के रस में डुबा दें। ठण्डा होने पर निकालें और ताँबे के स्थान पर शुद्ध सोना ले लें

क्योंकि यह ताँबा सोना हो जाता है। अतः जितना ताँबा होगा उतना ही सोना बनेगा।

रसायन

तेलिया कन्द को कूट पीस कर गाय के दूध के साथ खाने पर वृद्ध भी तरुण होकर वृद्धता खो देता है।

पारस

मेरा विचार है कि जहाँ पर तेलिया कन्द होता है। इसी प्रभाव क्षेत्र में अर्थात तेलीय क्षेत्र में या इसकी जड़ के पास रहने वाला पत्थर पारस के गुण ग्रहण कर लेता है।

ताबीज

तेलीया कन्द को स्वण के ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से भूत, पिशाचादि का भय नहीं होता। धन की कभी कमी नहीं होती। देह निरोग रहती है। मन प्रसन्न रहता है।

तेलिया कन्द के बहुत से तांत्रिक प्रयोग होते हैं परन्तु यह दुर्लभ होने के कारण इसके विषय में विस्तृत वार्ता नहीं कर रहा। □

दरियाई नारियल

मनुष्य के रंजोगम दूर करने के लिए इसका तन्त्रों में प्रयोग किया जाता है। यह इसी नाम से पंसारी से प्राप्त हो जाता है। यह एक विषैला, लम्बा और जुड़मा होता है। इसका वृक्ष भी नारियल की ही भाँति होता है।

कवच

दरियाइ नारियल को ताबीज की भांति या ताबीज में भर

करके धारण करने से सभी प्रकार की रक्षा प्राप्त होती है। इसे धारण किए रहने से जीवन शक्तिशाली होता है। बुद्धि तीव्र होती है। धारक को सदा प्रसन्न रखता है और उसके सारे रंजोगम दूर कर देता है। □

चण्डी कुसुम

लाल कनेर के पुष्प चण्डी को चढ़ाने से चण्डीका अत्यधिक प्रसन्न होती है अतः लाल कनेर ही चण्डी कुसुम है। □

गणेश कुसुम

यह भी लाल कनेर है और गणपति इसे प्राप्त करके मन-चाहा वरदान देते हैं। □

गौरी पुष्प

यह सफेद कनेर है। भगवती पार्वती इस फूल से बहुत प्रसन्न होती है। □

काली कनेर

इसे श्यामा पुष्प भी कहते हैं। श्यामा भगवती काली का ही एक नाम है। भगवती काली को काली कनेर के पुष्प चढ़ाने से शनि की शान्ति होती है, अशुभ ग्रह पलायन कर जाते हैं। शत्रुओं का स्तम्भन होता है। भगवती कालिका देवी शीघ्र प्रसन्न होती हैं। काली कनेर की जड़ धारण करने से भूतादि भाग जाते हैं। मारण प्रयोग में भी काली कनेर के पुष्प विशेष प्रभाव प्रदर्शित करते हैं! □

भूत जटा

गंधमाँसी को भूत जटा, पिशाची, पूतना तथा भूतकेशी भी कहते हैं। इसकी जड़ धारण करने से स्त्री जाति के भूत भागते हैं और पूतना शान्त होती है। यदि कोई पिशाची को सिद्ध करना चाहे तो मन्त्र अनुष्ठान के साथ भूत जटा का प्रयोग करे। □

पर्वत वासिनी

यह जटामाँशी है। इसे धारण करने से पर्वत की देवी प्रसन्न होती है और धारक की पूर्ण रक्षा करती है। इसे कण्ठ में धारण करने से भूत, ज्वर, त्वचा रोग नष्ट होते हैं। शरीर में चर्बी बढ़ती है। गौरी के साधक या पार्वती को प्रसन्न करने या सिद्ध करने वाले लोग इससे लाभ उठा सकते हैं! □

राक्षसी

यह कोई भूतिनी नहीं है बल्कि गठिवन जाति का ही एक पौधा है। इसका प्रचलित नाम चोरक है। नेपाल में इसे चौरा कहते हैं। इसकी जड़ से भूतिनी की प्रतिमा बनाकर पूजा करने से भूतिनी शीघ्र प्रस्तुत होकर इच्छित फल प्रस्तुत करती है। परन्तु सावधान इसे माँ की भाँति ही पूजें। यह शैय्या सुख प्रदान करती है। इसे शैय्या पर लेने के बाद दूसरी स्त्री को दूर से ही नमस्कार करना होगा। इसे धारण करने से राक्षसी धन के लाभ कराती है तथा औपरे की परेशानी दूर करती है। □

स्थूल वैदेही

यह गजपिप्पली है। इसे सेवन करने से पेट की कृमी मरती है, वात तथा कफ के रोग समाप्त होते हैं तथा देह पुष्ट होकर भर जाती है। यदि इसका तेल बना कर देह पर मालिश की जाए तो देह मोटी होती है। छोटे स्तन वाली स्त्रीयाँ केवल स्तन पर तेल लगाएं या गजपिप्पली का चूर्ण लेप की भाँति लगाएं। इसके प्रभाव से शीघ्र ही स्तन भारी हो जाते हैं। इसका लेप लिंग पर किया जाए तो लिंग भी मोटा होता है। □

चीता

यह एक वनस्पति है और इसी नाम से प्राप्त होती है। यह अपने रंगों के अनुसार विभिन्न गुण रखती है।

लाल चीता पारे को बांधता है। देह को भारी करता है। यह चितावर की भाँति लोहे को वेध देता है। इसे धारण करने से शरीर निरोग होता है। किसी के द्वारा किया गया तांत्रिक दुरुपयोग प्रभाव नहीं करता।

काला चीता लाकर दूध में डालने से दूध ही काला हो जाता है अतः इसके सेवन तथा बालों में लगाने से बाल जड़ से ही काले हो जाते हैं। □

भूत नाशिनी

इसे वचा या बच कहते हैं और प्रायः पंसारी के पास से मिल जाती है। इसे खाने तथा धारण करने से उन्माद तथा भूतादि का नाश होता है। □

कापाली

यह वार्यविड़ग है। इसे खाने या धारण करने से वहम अर्थात भ्रम को शिकायत दूर होती है। □

रामशर

यह मूंज है। इसे घर में रखने से घर की रक्षा होतो है। धारण करने से आदि व्याधि का नाश होता है। पूजन कर्म में इसे पवित्र माना जाता है। □

लिंकनी

इसे शिवलिंगी भी कहते हैं। इसके बीज शिवलिंग की भाँति या योनि की भाँति होते हैं। यह एक लाल जातीय पौधा है। इसके बीज तथा जड़ का प्रयोग किया जाता है।

सर्व सिद्धि

इसकी जड़ तथा बीज को ताबीज की भाँति धारण करने से किया जा रहा अनुष्ठान सिद्ध हो जाता है।

पारा गुटिका

इसकी जड़ का अर्क निकाल करके पारे के साथ खरल करने पर पारा मर जाता है।

वशीकरण

शिवलिंगी का बीज घिसकर ललाट में तिलक करने से जगत वशीकरण होता है। □

शंख पुष्पी

इसे शंखाहुली भी कहते हैं और प्रायः पंसारियों से मिल जाती है। यदि इसकी जड़ मिले तो धारण करें।

मानसिक रोग

इसे ताबीज की भांति पहनने से मानसिक रोगों तथा भ्रमों का नाश होता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है।

मंगलदायक

इसकी जड़ सदा सर्वदा मंगल करती है। अशुभताओं का नाश होकर उन्नति होती है।

उपद्रव

इस ताबीज के धारण करने से भूतादि के साथ समस्त ग्रहों के उपद्रव शांत हो जाते हैं।

□

चण्डाल कन्द

यह पाँच प्रकार का होता है। इसकी जड़ धारण करने से विष शिघ्रप्रभावी होता है तथा भूत प्रेतादि की समस्त लीलाओं का समापन होता है।

□

संग-ऐ-मिकनातीस

तंत्र में संग-ऐ मिकनातीश का बहुत सफलता से प्रयोग किया जाता है। इसे चुम्बक पत्थर भी कहते हैं। यह वास्तव में चुम्बक की ही भांति कार्य करता है परन्तु यह पत्थर होता है लोहा नहीं। यह पत्थर काला होता है। यदि आपको मिले तो व्यर्थ न जानें। इसके कई प्रयोग होते हैं।

इस पत्थर को तावीज की भांति धारण किया जाय तो दूरदर्शिता प्राप्त होती है। दूसरे वशीभूत होते हैं। भूत प्रेतादि की परेशानियाँ नहीं होतीं। इसे नगीने की भाँति अंगूठी में जड़ा करके उस हाथ में पहने जिसके द्वारा आप जल पीते हैं। जल पीते हुए इस पत्थर को हथेली के भीतरी हिस्से में घुमा लें और चुल्लु के द्वारा जल पीएँ। ऐसा करने से स्वस्थ रक्त का निर्माण होता है। फेफड़े तथा हृदय शक्तिशाली हो जाते हैं। बढ़ा हुआ रक्तचाप ठीक हो जाता है। शरीर स्वस्थ तथा सबल हो जाता है। रात को सोते समय इसे तकिये के नीचे रख कर सोएँ। ऐसा करने से स्वस्थ नींद आयेगी। नींद में डर नहीं लगेगा बल्कि आपको भविष्यवाणी सुनने को मिलेगी। □

क्रिस्टल बाल

यह बिल्लोर से बनती है और काँच की भाँति होती है। इसे क्रिस्टल बाल अर्थात बिल्लोर की गेंद कहते हैं क्योंकि यह गेंद की भांति होती है। यह भी एक प्रकार का पत्थर होता है और इसके चमत्कारी प्रभावों ने ही इसे तन्त्र में स्थान दिलाया है। इसके चमत्कारी गुणों से प्रभावित होकर अब इसके ऊपर अपने ईष्ट के मन्त्र की खुदाई करवाते हैं और प्राण प्रतिष्ठा करवा करके पूजा गृह में स्थापित करते हैं। यह क्रिया भी इसके गुणों के कारण विशेष प्रभाव दिखाती है।

आप को स्मरण करवाऊँ। आपने बचपन में अपने दादा-दादी या नाना-नानी से जादुई कहानियाँ सुनी होंगी और उस कहानी में एक जादूगर का भी चरित्र सुना होगा। जब उसे कुछ जानना होता था तो वह एक गोला लेकर बैठ जाता था और उस गोले से कहता था—'बता मेरे जादुई गोले ! इस वक्त राजकुमारी कहाँ है ?' और गोले के ऊपर आजकल के दूरदर्शन की भांति

चित्र आने लगते थे। इन चित्रों से राजकुमारी की स्थिति का पता करके जादूगर अन्य प्रयोग करता था।

उपरोक्त वार्ता में मुख्य विषय है 'जादुई गोला'।

आपको इस जादुई गोले का परिचय दे रहा हूँ। ध्यान से समझ लें कि यह जादुई गोला कोई कोरी कल्पना ही नहीं थी वास्तव में जादुई गोला था और है। यह जादुई गोला कुछ और नहीं बल्कि क्रिस्टल बाल ही था। इसके चमत्कारों को देखकर इसे क्रिस्टल गेजिंग भी कहा जाने लगा है। क्रिस्टल गेजर का मतलब गुप्त रहस्य प्रस्तुत करने वाले से है।

क्रिस्टल बाल के चमत्कारी प्रभावों से वशीभूत होकर सम्मोहन विशेषज्ञों ने इसे हिप्नोटाइज करने का प्रमुख साधन बनाया और वास्तव में ही यह बाल इस सम्मान के योग्य भी थी।

यदि आप क्रिस्टल गेजिंग करना चाहें तो एक बेदोश क्रिस्टल बाल प्राप्त कर लें और इस पर त्राटक का अभ्यास करें और इस जादुई गोले की चमत्कारी योग्यता से स्वयं ही परिचित हो जायें।[1]

□

स्त्री मोहन

एक ब्याई हुई काली कुतिया को देखें और रविवार के दिन उस कुतिया का दूध प्राप्त करें। इस दूध को लेकर घर आ जाएं और इसमें ६-७ लौंग डाल दें। लगभग तीन दिन तक इन्हें दूध में ही रहने दें। बुधवार को यह लौंग निकालें। किसी बर्तन में अपना वीर्य रख कर उसमें यह लौंग इस भांति डालें कि

(१) अधिक जानकारी के लिये मेरी पुस्तक 'इच्छाशक्ति के चमत्कार' एवं 'टेलीपेथी' देखें।

लौंग वीर्य से भलि-भाँति तर हो जाएँ। यदि आपके पास धैर्य हो तो वीर्य को सूखने दें और धैर्य नहीं हो तो शनिवार को यह लौंग वीर्य से निकाल लें। अब इन्हें छाया में सुखायें। जब यह सूख जाये तो एक स्त्री को एक लौंग किसी भी भाँति खिलाने से उसका महावशीकरण होता है। इस भाँति आपके पास जितने लौंग हों उतने ही पात्र वशीभूत किए जा सकते हैं। □

स्त्री वशीकरण

किसी शुभ संयोग पर अश्वगन्धा की जड़ प्राप्त करें। इसे पीस कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण में कर्पूर का चूर्ण तथा दारचीनी को चूर्ण करके मिला लें। इस चूर्ण को किसी भी खाद्य सामग्री में मिला करके जिस स्त्री को खिलाया जाएगा वही मोहित होकर अपना सर्वस्व सौंप देगी। □

वीर्य स्तम्भन

अश्वगंधा कर्पूर तथा दारचीनी को पीस करके जायफल भी पीस करके मिला दें। इन्हें कपड़छान करके किसी द्रव्य के साथ गीला करके एक-एक ग्राम की गोलियाँ बना दें। सुनार से एक नगीना लगाने वाली अंगूठी लेकर उसमें यह गोली लगा लें। विषय भोग करते हुए जब तक यह अंगूठी हाथ में रहेगी वीर्य नहीं गिरेगा। इस अंगूठी के प्रभाव से केवल वीर्य स्तम्भत ही नहीं होता बल्कि पुरुषेन्द्रिय में उत्तेजन और सख्ती भी बनी रहती है। □

ज्वर नाश हेतु कुछ प्रयोग

१. यदि पारी वाला ज्वर समाप्त करना हो तो एक पोठी

मछली लेकर रोगी के सारे शरीर पर छुआते हुए घुमाएं और फिर किसी चौराहे पर फेंक दें।

२. यदि तीसरे दिन आने वाला ज्वर ठीक न हो तो एक लाल धागा लेकर सिर से पांव तक नाप कर तोड़ लें। इस धागे में नील की जड़ बाँध करके रोगी को धारण करा दें।

३. यदि ज्वर का कारण कोई ऊपरी आबोहवा हो तो चिरचिटे की जड़ या लाल पलाश (ढाक) की जड़ धारण करा दें।

४. एक गिरगिट को पकड़ करके रविवार के दिन उसकी पूँछ काट लें और गिरगिट को छोड़ दें। इस पूँछ को धारण करवा दें।

५. कमल की टहनी के छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी धागे में पिरो लें। और माला की भाँति धारण कराएँ।

६. शनिवार की शाम को आक के वृक्ष के पास जाकर धूप-दीप से वृक्ष की पूजा करें और एक लाल धागा किसी टहनी में बांध कर यह कहें—'मेरा मेहमान आए तो तुम रख लेना।' इसके बाद घर आ जाएँ। इस प्रयोग में सावधानी यह रखनी होगी कि कोई व्यक्ति मेहमान बनकर न आ जाए। यदि कोई आए तो उसके लिए उचित नहीं होगा। □

परिवार नियोजन

१. यदि गर्भ स्थापन का विचार न हो तो मेंढ़क की हड्डी कमर में धारण कर लें।

२. साँप के दांतों को तावीज में भर करके कमर में धारण करते ही गर्भ स्थापन नहीं होता।

३. सरसों की जड़ को धारण करने से परिवार नियोजन में सहायता मिलती है। ☐

कील (विभिन्न प्रकार की)

जिस भांति लोहे की कील होती है और उस कील के द्वारा घर द्वार का कीलन किया जाता है। इसी भांति कुछ और कीलें बनाई जाती हैं जो कि लोहे की नहीं होतीं बल्कि वृक्षों की जड़ तथा हड्डी आदि से बना ली जाती हैं। इन कीलों के प्रयोग विभिन्न होते हैं। मुख्यतः कील कोई भी हो उनके प्रयोग मारण तथा उच्चाटन के ही होते हैं। घर-द्वार को कीलने का यह अर्थ होता है कि घर में सुख-शांति हो और ऊपरी आबोहवा का प्रभाव न हो और यदि प्रभाव हो तो नष्ट हो जाए। इसी भांति कील के प्रयोग कुछ नष्ट करने के लिए ही होते हैं।

आक की कील

आक एक सर्वविदित वृक्ष है। इस वृक्ष को जड़ को कृतिका नक्षत्र में लेकर तोन अंगुल प्रमाण की कील बना करके तालाव में गाड़ने से तालाब की समस्त मछलियाँ मर जाती हैं।

बेरी की कील

विशाखा नक्षत्र में बेर वक्ष की जड़ लेकर आठ अंगुल प्रमाण की कील बना करके केले के बाग में गाड़ने से केले का फल नष्ट हो जाता है।

जंभीरी की कील

यह एक भांति का नोबू होता है। इसकी जड़ को अश्विनी नक्षत्र में प्राप्त करके बारह अंगुल प्रमाण की एक कील बनाकर

जुलाहे के घर में गाड़ देने से जुलाहे का धागा नष्ट हो जाता है।

सुपारी का कील

शतभिषा नक्षत्र में सुपाड़ी की जड़ प्राप्त करके नौ अंगुल लम्बी कील बना करके पान की दुकान, पान के खेत या पान वाले के घर में गाड़ देने से पान नष्ट हो जाता है।

जामुन की कील

जामुन वृक्ष की जड़ को अनुराधा नक्षत्र में प्राप्त करके उसकी आठ अंगुल लम्बी कील बना कर दूधिए के घर में गाड़ने से दूध नष्ट हो जाता है।

कनेर की कील

(१) जब हस्त नक्षत्र हो तब कनेर वृक्ष की जड़ ग्रहण करके तीन अंगुल लम्बी एक कील बनावें और इसे कुम्हार के घर में गाड़ देने से कुम्हार के द्वारा बनाए सभी बर्तन नष्ट हो जाते हैं।

(२) मृगशिरा नक्षत्र वाले दिन रक्त कनेर की टहनी लेकर नौ अंगुल लंबी कील बना लें और इसे निम्नलिखित मन्त्र से ७ वार अभिमन्त्रित करके भूमि में दबा दें। वशीकरण अवश्य ही हो जाता है।

मन्त्र—"ॐ अमुकं हुँ हुँ स्वाहा ॥"

साँप की कील

आश्लेषा नक्षत्र में साँप की हड्डी लेकर ढाई इन्च लंबी कील बनाएं और इस कील को शत्रु के घर में गाड़ दें तो शत्रु की सन्तान नष्ट हो जाती है।

मुलहठी को कील

जब चित्रा नक्षत्र हो तब मुलहठी वृक्ष की जड़ प्राप्त करके चार अंगुल लम्बी कील बनाएँ और उसे तेली के घर में गाड़नें से उसका सारा तेल नष्ट हो जाता है।

घोड़े की कील

जब अश्विनी नक्षत्र हो तब किसी घोड़े की हड्डी प्राप्त करके ७ अंगुल लंबी कील बनायें तथा उसे घुड़शाला में गाड़ें तो वहां के सारे घोड़ नष्ट हो जाते हैं।

ऊंट की कील

कभी भी किसी ऊंट की हड्डी लेकर किसी भी अस्तबल में चारों कोने में गाड़ दें तो वहां के सारे पशु स्तम्भित हो जाते हैं।

मनुष्य की कील

रविवार के दिन जब पुष्प नक्षत्र हो तब किसी श्मशान से मनुष्य की हड्डी लाकर जिस द्वार पर गाड़ दिया जाएगा उस द्वार के समस्त निवासी नष्ट हो जाएंगे।

क्षीरी की कील

जब भरणी नक्षत्र हो तब क्षीरी नामक वृक्ष की लकड़ी लेकर पांच अंगुल लम्बी कील बना कर नाव में गाड़ दें या डाल दें। इसके प्रभाव से नाव जल में नहीं चलेगी।

उल्लू की कील

जब भरणी नक्षत्र हो तब उल्लू की हड्डी लेकर जिस व्यक्ति के द्वार पर गाड़ देंगे। उसी का उच्चाटन हो जायगा।

लोहे की कील

एक कौवे को मार करके उसका पित्त निकालें और एक लोहे की कील लेकर इस पित्त में घुसा दें। लगभग पाँच सूत तक की कील इस पित्त में लिप्त हो जाए। अब इस कील को जिस द्वार पर गाड़ेंगे वह द्वार निवासी से विहीन रहेगा।

पीपल की कील

जब अश्विनी नक्षत्र हो तव पीपल की जड़ लेकर लगभग दस अंगुल लंबी एक कील बना कर जिसके द्वार पर गाड़ देंगे वह अचानक लंबी यात्रा पर चल देगा।

वट की कील

यदि कोई स्त्री वट वृक्ष की जड़ को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के संयोग में प्राप्त करके अपनी भुजा पर धारण करती है तो उसे अवश्य ही गर्भ स्थापन होता है। इस प्रयोग का लाभ वन्ध्या स्त्री भी करके मातृत्व सुख प्राप्त कर सकती है।

चिरचिटे की कील

यदि वच्चे को जन्म देने म स्त्री को अत्यन्त कष्ट हो रहा हो तो चिरचिटे की जड़ लेकर चार अंगुल लंबी कील वना करके स्त्री की योनि में रख दें। इसके प्रभाव से वच्चा विना कष्ट दिए ही सहजता से पैदा हो जाता है।

आक की कील

कृतिका नक्षत्र में आक वृक्ष की जड़ लेकर सोलह अंगुल लम्बी कील बनावें और मदिरालय में गाड़ दें। इसके प्रभाव से वहां की सारी मदिरा अपना मद त्याग कर पानी की भांति हो जाती है।

औपरा स्पष्टीकरण

आपने प्रायः सुना होगा कि अमुक व्यक्ति को औपरे की शिकायत हो गई है। अमुक व्यक्ति को भूत लग गया हैं। अमुक व्यक्ति को चुड़ैल या कुछ और लग गया है। उपाय कराने के लिए जब ओझा के पास जाते हैं तो वह कुछ तांत्रिक उपाय करके रोग ठीक करता है और जिस भांति एक डाक्टर रोग का स्पष्टीकरण करता है उसी भांति वह ओझा भी औपरे का स्पष्टीकरण करते हुए बताता है कि अमुक व्यक्ति को अमुक औपरा था।

यह औपरा एक साधारण व्यक्ति के सामने प्रश्न चिह्न वना रहता है और जो कुछ भी ओझा समझा देता है वही सत्य मान कर भाग्य की विडम्बना मान लेते हैं।

वास्तव में यह एक गम्भीर विषय है और यह भी सत्य है कि सभी को सब भांति के औपरे की शिकायत नहीं होती। अनेक बार वास्तव में ही औपरे की शिकायत नहीं होती बल्कि रोग होता है और इस रोग पर भी आयुर्वेद तथा होम्योपेथिक ओझा से भी बाजी मार जाता है। होम्योपेथिक में तो इस विषय की विविधता को खुल कर स्वीकार किया गया है। यहां पर मैं चिकित्सा का प्रस्तुतीकरण नहीं करूंगा क्योंकि प्रस्तुत पुस्तक का विषय तंत्र प्रयोग है औषधि प्रयोग नहीं। इस विषय से संबन्धित औषधियों का फिर कभी अनुभव प्रस्तुत करूंगा। इस समय औपरे को समझने का प्रयास करें कि औपरा क्या और कैसा होता है।

कभी भी किसी देह पर अनजानी शक्तियों के प्रभाव का अधिकार हो जाने को औपरा कहते हैं। जब कभी भी औपरा के

विषय में कहा-सुना जाता है तो कारण भूत प्रेतादि ही माने जाते हैं।

यहाँ पर मैं औपरा स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसे समझकर कोई भी व्यक्ति औपरी पीड़ा से पीड़ित को देख करके समझ सकेगा कि उसे कौन-सा औपरा हुआ है ?

ओपरे कई भाँति के होते हैं जिन्हें कि—गंधर्व, यक्ष, पितर, भूत, देवता, नाग, देव, शत्रु, राक्षस, पिशाच, प्रेत, राक्षस, क्षेत्र-पाल, शाकिनी, डाकिनि, काकण, कामण, यति आदि कहते हैं। यह भिन्न-भिन्न भाँति से लोगों को भिन्न-भिन्न समय पर परेशान करते हैं।

अब मैं इनकी पहचान का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे पढ़ करके कोई भी कभी भी औपरे की पहचान कर सकता है।

भूत लगना

जब किसी को औपरे की शिकायत हो तो वह व्यक्ति साधारण लोगों जैसी बातें नहीं करता। उसकी बातों से लगता है कि वह बहुत बड़ा ज्ञानी पुरुष है और उसमें गजब की शक्ति आ जाती है। यदि वह गुस्से में आए तो आठ-दस व्यक्तियों पर तो भारी पड़ता ही है। इसके अलावा जग प्रसिद्ध भूतों के लक्षण भी इसमें आ जाते हैं।

देवता लगना

जब किसी की देह पर देवता आ जाता है तो वह रोगी सदा पवित्र रहता है, नहाता-धोता है तथा मैथुन नहीं करता। यह भोजन भी नहीं करता या कम करता है। इसे नींद भी नहीं आती। बातें करने पर यदि प्रसन्न हो तो वरदान देता है। सदा धूप आदि जलाये रखता है तथा पुष्प मिले तो प्रसन्न रहता है।

यह संस्कृत का उच्चारण करता तथा इसकी दृष्टि सदा स्थिर रहती है।

देव शत्रु लगना

जब किसी व्यक्ति की देह पर देवताओं का शत्रु आ जाता है तब उस रोगी को पसीना अत्यधिक आता है। उसे भय नहीं लगता। इसे कितना भी खिला दो फिर भी भूखा रहता है अर्थात् सदा खाने को चाहिए। यह रोगी शास्त्रों में, गुरु में, धर्म में, परमात्मा में दोष निकलता रहता है। यह रोगी क्रूर कार्यों करके अत्यधिक प्रसन्न होता है।

गंधर्व लगना

जब किसी व्यक्ति की देह पर गंधर्व आ जाता है तो वह व्यक्ति सदा प्रसन्द रहता है। हँसी मजाक की बात करता है। यह फूलों सी भरी क्यारियों को देख हर्षित होता है। प्रायः वन में भाग जाता है। सुगन्धित वस्तुएँ खाना तथा पहनना चाहता है। जब देखो तब मुस्कराता रहता है। बहुत हल्के स्वर में वार्ता करता है।

यक्ष लगना

जब किसी व्यक्ति की देह पर यक्ष लग जाता है तो वह व्यक्ति लाल वस्त्रों में रुचि लेने लगता है। धीमे-धीमे स्वर उच्चारित करता है। व्यक्ति की देह भी पतली हो जाती है। जब वह चलता है तो तीव्र चलता है। इसके नेत्र का रंग तांबे के रंग की भाँति हो जाता है। ज्यादातर यह नेत्रों से इशारा करता है।

पितर लगना

पितर तो अपने ही घर के बड़े बूढ़े होते हैं। इन्हीं को शान्ति

के लिए ही श्राद्ध किए जाते हैं। इतना करने पर भी व्यक्ति विशेष के शरीर पर आते हैं। जब किसी की देह पर पितर आते हैं तो वह व्यक्ति शान्त स्वभाव वाला हो जाता है। जब भी वस्त्र पहनेगा तो पहले बायाँ हिस्सा वस्त्र में प्रवेश करेगा। यह व्यक्ति पिंड दान करता है तथा मिठाई, तिल, गुड़ तथा गोश्त आदि खाता है। सदा ही खीर के आदेश देता रहता है और खीर को अत्यधिक प्रसन्न होकर खाता है।

नाग लगना

जिस भाँति मनुष्य की आत्मा होती है और देह की समाप्ति पर भूतादि का रूप ग्रहण करती है उसी भांति नाग की भी आत्मा होती है जो कि देह की समाप्ति पर भूतादि की ही भाँति कार्य करती है। जब किसी नाग का भूत किसी व्यक्ति को लग जाता है तो व्यक्ति पृथ्वी पर छाती के बल लेटा रहता है और उसकी सभी हरकतें नाग की भाँति होती हैं। यह क्रोधित होकर गर्म-गर्म स्वाँस छोड़ता है। दूध पीना चाहता है। प्रायः जीभ के द्वारा होंठों को चाटता रहता है।

राक्षस लगना

जब किसी व्यक्ति को राक्षस लगता है तब वह व्यक्ति मदिरा पीना चाहता है, खून पीना चाहता है, गोश्त खाना चाहता है। अत्यधिक क्रोधी हो जाता है। जंजीरों में बांधने पर जंजीरें भी तोड़ डालता है। बहुत कठोर हो जाता है। यह निर्लज्ज हो जाता है। वस्त्र फाड़ कर फेंक देता है। नेत्र लाल हो जाते हैं।

पिशाच लगना

जब किसी व्यक्ति को पिशाच लग जाता है तो वह नग्न होता रहता है। कमजोर हो जाता है। कटु शब्दों का प्रयोग

करता है। देह से अत्यधिक दुर्गन्ध आती है। सदा गंदा तथा अपवित्र रहता है। स्वभाव में बहुत चंचलता आ जाती है। एकान्त चाहता है। वन में भाग जाता है। घूमता फिरता है। कभी-कभी रोने भी लगता है। इसे बहुत भूख लगती है। कभी भी खाने से मना नहीं करता।

सती लगना

जब किसी स्त्री के शरीर को सती लगती है तब वह स्त्री अधिक वार्ता नहीं करती तथा सदा श्रृंगार किए रहती है। मन स्थिर नहीं रहता। गर्भपात होता है अर्थात् सन्तान उत्पत्ति में बाधक होती है। जब भी बातें करेंगे तो सती प्रथा के पक्ष की बातों से हर्षित होती है। प्रायः शब्द उच्चारण नहीं करती परन्तु यदि कभी बोलती भी है तो आशीर्वाद तथा वरदान देती है। सदा नहा-धोकर पवित्र रहती है। धूप दीया करती है।

कामण लगना

जब किसी को कामण लगती है तो उस स्त्री का कन्धा, माथा तथा सिर भारी हो जाता है। मन स्थिर नहीं रहता। देह दुर्बल हो जाती है। गाल धंस जाते हैं। स्तन और नितम्ब भी धंस जाते हैं। नाक, हाथ तथा नेत्रों में जलन रहती है। तेज तत्व समाप्त हो जाता है।

शाकिनी लगना

ऊपरे की श्रेणी में शाकिनी तथा डाकिनी भी आती है। जब यह किसी स्त्री की देह को लगती है तो उस स्त्री की सारी देह में दर्द रहता है। नेत्रों में प्रबल पीड़ा रहती है तथा स्त्री बेहोश भी हो जाया करती है। देह पीपल के पत्ते की भाँति कांपती रहती है। रोगिणी चिल्लाती तथा रोती है। खाने में मन नहीं लगता।

क्षेत्रपाल लगना

जब किसी व्यक्ति के देह को क्षेत्रपाल लगता है तो वह व्यक्ति राख का तिलक करता है। श्मशान की राख से हर्षित होता है। बड़े बुरे डरावने तथा अशोभनीय स्वप्न आते हैं। सदा ही पेट में दर्द होता है तथा प्रत्येक जोड़ दर्द करता है। मन एकाग्र नहीं हो पाता।

ब्रह्म राक्षस

जब किसी व्यक्ति की देह को ब्रह्म राक्षस लगता है तो वह व्यक्ति पीड़ा से निढ़ाल रहता है। समझता है कि अब मैं मर जाऊँगा परन्तु मर भी नहीं पाता। यह व्यक्ति सभी तीर्थों तथा पवित्र कार्यों को करने वाले लोगों के विरोध में बोलता है। यह स्वयं को सबसे उच्च मानने लगता है।

प्रेत लगना

कभी-कभी कुछ लोग बहुत बुरी तरह अकाल मृत्यु से मरते हैं। पर जब मर कर भूत प्रेतादि बनते हैं और किसी व्यक्ति को लगते हैं तो वह व्यक्ति चीखता-चिल्लाता है, रोता है, भागता है। इसकी देह बहुत काँपती है। खाता पीता कुछ भी नहीं। साँस बहुत तीव्र स्वर करते हुए लेता है। किसी का कहा नही मानता। कठोर वचनों का उच्चारण करता है।

चुड़ैल लगना

जब किसी को चुड़ैल लग जाती है तो उसकी देह पुष्ट हो जाती है। मैथुन करना चाहती है। गोश्त आदि खाना चाहती है। गर्भ गिरा देती है। सदा मुस्कराती रहती है।

इस भांति अनेकों विवरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। क्योंकि

औपरे के कारण अनगिनत होते हैं तथा इसकी पहचान भी अपने कारण के अनुसार ही विभिन्न होती है।

उपरोक्त विवरण में समस्त औपरे की देह पर की शिकायत बताई गई है। परन्तु कभी-कभी यह सभी औपरे व्यक्ति के सामने स्वयं आ करके मनुष्य की भांति वार्ता करते हैं। यह लोग अपनी इच्छानुसार देह दिखाते हैं। प्रायः स्त्री औपरे, पुरुषों के समक्ष आकर अत्यधिक रूप दिखा करके भ्रम में डालते हैं और मैथुन कर-करके परिवार बना लेते हैं। इसी भांति पुरुष औपरे भी इच्छानुसार लुभावनी देह बना कर स्त्रियों के साथ विषय भोग करके परिवार बना लेते हैं। यह सारी स्थितियाँ बड़ी ही विकट होती हैं। कभी-कभी यह औपरे देह के ऊपर आकर देवी-देवता का परिचय देते हैं। कभी-कभी पूजन कार्य में चढ़ाई गई सामग्री से प्रभावित होकर आ जाते हैं और साधक के विपरीत लिंगी वाला रूप धर करके साधक को वशीभूत कर लेते हैं तथा अपनी ही पूजा कराते रहते हैं। ▣

तेज बल

यह एक वृक्ष होता है तथा इसे बद्री केदार के वनों में अधिकता से प्राप्त किया जाता है। इसकी टहनी पर सिबल वृक्ष की भांति घनघोर कांटे होते हैं। इसकी डण्डी को प्रायः हाथ में लेकर कुछ योगीजन घूमते हैं। इसके कांटे पीस कर खाने से पेट का दर्द समाप्त हो जाता है। ▣

छुहारा

छुहारे के अन्दर एक गुठली होती है। कभी-कभी यह गुठली योनि के आकार की या फिर दोहरी जुड़ी हुई होती है।

यह अकस्मात् ही प्राप्त होती है। इसकी प्राप्ति छुहारे से ही होती है। यदि कभी छुहारा खाते हुए आपको इस भांति की गुठली मिल जाए तो उसे व्यर्थ जानकर फेंक न दें। बल्कि संग्रह कर लें।

यदि आपको जुड़वां गुठली मिले तो उसे जल से धो करके धूप दीप करें और ताबीज में भर करके धारण कर लें। इसके प्रभाव से आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत हो जाएगा।

यदि आपको योनि रूपी गुठली मिले तो उसे लाल वस्त्र लपेट कर पूजन स्थल पर रखें। इसके प्रभाव से ईष्ट सिद्धि शीघ्र मिलती है।

□

एकाक्षी नारियल

आपने जब-जब पानी वाला नारियल लेकर छीला होगा तब आपने उसमें दो या तीन काले रंग के गोल-गोल दाग-से देखें होंगे। यदि कभी एक दाग वाला नारियल मिले तो उसे फोड़ें नहीं बल्कि उसे लक्ष्मी मान कर उसकी पूजा करें तथा घर में या खजाने में स्थापित कर दें। इसके प्रभाव से दिन प्रतिदिन धन की बढ़ोत्तरी होने लगती है।

□

महाशंख

जो साधक महाशंख की माला से जप करता है वह निःसन्देह अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त करता है। यह माला बनानी तथा प्राप्त करनी तो सरल है क्योंकि इसमें धन का कोई व्यय नहीं होता परन्तु खतरनाक अवश्य है। धन के विषय में जितनी सरल है उतनी ही स्वर्ग से दुर्लभ है। क्योंकि स्वर्ग तो आपको प्राप्त हो जाएगा परन्तु इस माला की प्राप्ति किसी

व्यवसायिक व्यक्ति से नहीं होती। इसे प्राप्त करने के लिए श्मशान में घूमना पड़ता है। यह माला भाग्यवश ही गुरु कृपा से प्राप्त होती है या व्यक्ति बना पाता है। इस माला के द्वारा सही मन्त्रों का जप करना चाहिए। मन्त्र के समस्त दोषों को यह माला समाप्त कर देती है। मन्त्र किसी भांति के दोष से युक्त हो सकता है परन्तु यह माला कभी भी दोषी नहीं होती। इसी कारण 'महाशंखं सर्वत्रं तेषु योजितम्' अर्थात् महाशंख ही सब प्रकार के मन्त्रों से लाभ प्राप्त करने के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं।

पूर्वजन्म के शुभ तथा सफल कर्मों के प्रयास से यदि कभी किसी को महाशंख की माला प्राप्त हो जाती है तो वह व्यक्ति तो क्या उसका सारा परिवार ही समस्त साधनाओं का लाभ प्राप्त कर लेता है।

महाशंख है क्या ?

महाशंख के विषय में समस्त प्रभावशाली तथ्य केवल कुछ शाक्त ही जानते हैं। इसके अलावा सभी लोग तंत्र में शंख का प्रयोग इसी महाशंख के कारण करते हैं। लेखक लोग शंख को ही तान्त्रिक सामग्री मान करके ग्रन्थ पूर्ण कर देते हैं। मैं आपसे यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि शंख और महाशंख क्या है ? तथा इनके तन्त्र प्रयोग क्या हैं ?

शंख को बजाना शुभ होता है। शंख के द्वारा अर्घ्य दिया जाता है। शंख के द्वारा कुछ सेवन किया जाता है। देव स्नान भी शंख के द्वारा ही कराते हैं। इसके अलावा तंत्र में शंख के कोई प्रयोग नहीं होते यदि कोई करता है तो उसे क्या कहा जाए ? एक बार मैंने एक उपासक को शंख में घी भर कर उसी

पें रुई की बाती डाल करके दीपक की भाँति शंख का प्रयोग करते देखा था। अब उसे कहा क्या जाए ? शंख शांति, सौम्यता शुभता का प्रतीक होता है। शंख में दीया जलाना मेरे लिए चर्चा का विषय नहीं हैं।

एक और शंख होना है 'दक्षिणावर्ती शंख'। इस शंख का प्रयोग लक्ष्मी उपासना में किया जाता है। यह शंख धन का लाभ कराता है।

प्रस्तुत विषय शंख पर वार्ता करने के लिए नहीं बल्कि महा शंख की वार्ता करने के लिए है।

वास्तव में महाशंख और शंख में बहुत भेद होता है।

व्यक्ति के प्राणान्त हो जाने पर उसी शव से यह महाशख प्राप्त होता है और शंख ? यह तो सवविदित है। अतः शख तथा महाशंख में इस भेद को सदा याद रखना चाहिए।

स्त्री और शूद्र से ही चण्डाल की उत्पत्ति होती है यथा 'तज्जायश्चेव चाण्डाल सर्वं मंत्र विर्वाजितः' इसी कारण यह लोग मन्त्रों से हीन होते हैं। 'मंत्रहीनेतुस्थ्यादिसर्ववर्ण विभूषिताम्' जो लोग मन्त्रों से हीन होते हैं उन्हीं की अस्थियों में सभी वर्ण रहते हैं

हिन्दी की शब्द माला को ही वर्ण या वर्णमाला कहते हैं। इन्हीं वर्णों पर 'अं' की मात्रा लगने से यह वर्ण बीज वर्ण बन जाते हैं। 'अ' से लेकर 'क्ष' तक के सभी वर्ण अस्थियों के मध्य सदा विद्यमान रहते हैं। यहाँ पर एक पुरुषाकार आकृति दी गई है और उस पर सभी वर्ण स्पष्ट किए गए हैं। इन्हीं स्थानों की अस्थि लेकर माला बनाने पर महाशंख की माला कहलाती है।
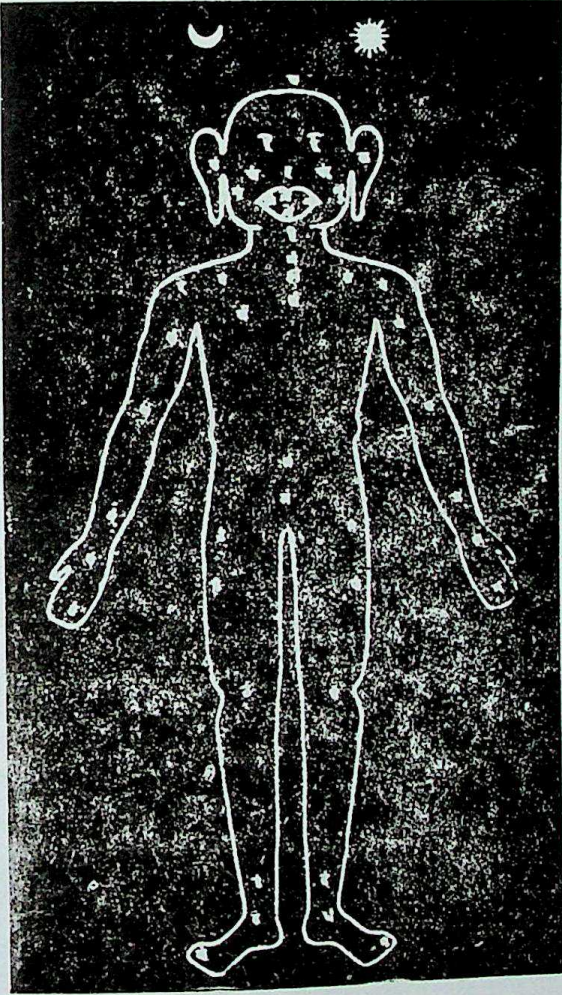
इस चित्र में वह स्थान दर्शाये गये है जिन स्थानों की अस्थियां महाशंख की माला बनाने के हेतु ग्रहण करते हैं।

इस माला के द्वारा जप करने से समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होतो हैं। उपरोक्त स्थानों की अस्थियां लेकर स्थानानुसार ही माला में पिरोयें। इस माला को सर्प की भाँति बनायें अर्थात् आगे से मोटी होते-होते जाकर पतली हो जाए। स्पष्टत: यह समझ लें कि माला का मूल मोटा और फिर क्रमश: पतली होती चली जाए। माला, बनाते समय पहले मोटी अस्थि डालें फिर उससे पतली, फिर और उससे पतली अस्थि पिरोते जाएं। मुख्यत: यही स्मरण रखना है कि पहले मोटी तरफ से माला बना करके क्रमानुसार छोटा और छोटा करते चला जाए। इस माला को बनाते समय चित्रानुसार पहले 'अ' स्थान की अस्थि ली जाएगी फिर 'आ' स्थान की और इसी भांति क्रमशः वर्णानुसार अस्थियां पिरोई जायेंगी। जब यह माला बन जाए तो प्रणव की गांठ लगा दें। इसके ऊपर एक लम्बी अस्थि डाल कर पुन: ब्रह्मगांठ लगायें। इसे बना करके फिर प्राण प्रतिष्ठा करें। प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र मेरी पुस्तक 'मन्त्र रहस्म' में प्रस्तुत कर दिया गया है।

इसके बाद इस माला को गुप्त करलें। किसी को भी नहीं दिखायें। जब आप इस माला पर जप करें तो मोटी तरफ से शुभारम्भ करें और पतली तरफ समापन करें। पुनः मोटी तरफ से प्रारम्भ करें। इस भांति करने से निश्चित ही सिद्धि प्राप्त होती है।

आप सब पाठकों के स्नेह से वशीभूत होकर महाशंख की माला का रहस्य प्रस्तुत किया है। यह माला प्रारम्भ से ही गोपनीय थी, गोपनीय है और गोपनीय रहेगी।

महाशंख की माला बनाने के लिए स्त्री, ब्राह्मण तथा दीक्षित व्यक्ति के शव की अस्थियां न ग्रहण करें। शव साधन करने वाले भी स्त्री का शरीर लेकर शव साधन न करें। □

विवाहितों के लिए लाभदायक

कश्मीर में एक विद्वान हुए थे जिन्हें कि कोका पण्डित कहा जाता था। उन्होंने कोक शास्त्र लिखी। महर्षि वात्सायन ने कामसूत्र लिखी। इसी भांति अनेकों लोगो ने काम पर शोध किया। इसी क्रिया के लिए लोग वशीकरण प्रयोग करते हैं। मैं यहां पर स्त्री के कुछ रहस्य बता रहा हूँ जिनको प्रयोग करके प्रत्येक पुरुष अपनी पत्नी को सदा सर्वदा के लिए वशीभूत कर सकता है।

प्रत्येक शरीर में किसी न किसी सत्व की बहुलता पाई जाती है। यह सत्व अनेकों होते हैं और इनके प्रभाव भी बड़े ही विशेष होते हैं। आप अपनी सहयोगिनी को समझे।

देव सत्व

देव सत्व वाली स्त्री गौर वर्णीय, चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा रूपसी होती है। यह शायद ही कभी क्रोध करती हो। इसका मन देवताओं की भांति होता है। इसी कारण इसे देव सत्व वाली स्त्री कहा गया है। यदि आपके साथ देव सत्व वाली स्त्री का विवाह हो जाए तो मैथुन करते समय उसका सिर पूर्व दिशा को ओर अवश्य कर दें। इसके अलावा मैथुन से पूर्व पीपली, मुलेहठी, कपूर, सोंठ, पाटला का अर्क एकत्र करके लेप बनाए तथा अपनी पुरुषेन्द्रीय पर लेप लगा लें, ऐसा करने से आपकी स्त्री आजीवन आपकी स्नेह भाजन होगी तथा सदा सर्वदा आपके वशीभूत रहेगी।

मुनि सत्व

मुनि सत्व वाली स्त्री का रूप कैसा भी हो सकता है। इसकी आँखों में तथा हृदय में ममता हिलोरें भरती है। यह

स्त्री मां की भांति सभी को प्यार करती तथा सभी की रक्षा करती है। यदि ऐसी स्त्री का आपसे विवाह हो जाए तो उसका सिर मैथुन करते समय उत्तर की तरफ अवश्य कर दें। यदि हो सके तो बैंगन का रस निकाल करके उसमें नमक मिलाएँ और अपनी पुरुषेन्द्रीय की जड़ में दो अंगुल तक लेप करें। जब यह सूख जाए तब अपनी सहयोगिनी से विषयानन्द हों। ऐसा करने से सदा सर्वदा आप अपनी पत्नी के लिए एक विशेष व्यक्ति बने रहेंगे और स्वप्न में भी यह आप के सिवा किसी से भी सम्भोग की कामना न करेगी।

राक्षस् सत्व

यह स्त्री ययंकर स्वरूप से मुस्कराती है और इसके वचन कठोर होते हैं। इसके सिर के बाल ऊपर को उठे हुए-से होते हैं। इसे मछली का माँस तथा मदिरा अत्यधिक प्रिय लगती है। इसके वालों में लाल वर्ण की आभा पायी जाती है। यदि ऐसी स्त्री से आपका विवाह हो जाए तो विषयानन्द होते समय इसका सिर नैऋत्य दिशा में अवश्य कर दें। मैथुन करते समय सूअर की चर्बी में शहद मिला करके अपनी इन्द्री पर लेप अवश्य कर ले। इन उपायों के फलस्वरूप वह स्त्री आपके प्रभाव में रहेगी।

भूत सत्व

इस स्त्री का पेट बडा होता है तथा जांघ छोटी-छोटी होती हैं। यह स्त्री लड्डू तथा हलुए आदि अत्यधिक प्रसन्न होकर खाती है। यदि इस भांति की स्त्री से आपका विवाह हो जाए तो जब भी विषय भोग करें तो इसका सिर ईशान दिशा की तरफ अवश्य कर दिया करें। सफेद सुर्मा, सेंधा पीस करके शहद में मिला करके अपनी पुरुषेन्द्री पर लेप अवश्य कर लिया करें।

इसके प्रभाव के कारण होने वाले लाभ से आप स्वतः ही चमत्कृत होंगे। यह स्त्री कभी कल्पना में भी आपके अलावा किसी और के विचार से मदन रस भी नहीं छोड़ेगी।

यक्ष सत्व

यह स्त्री श्याम वर्ण की होती है तथा इसके अंग कोमल होते हैं। यह सदा फूलों तथा खुश्बुओं को चाहती है। इसका स्वभाव निर्लज्जता वाला होता है। यदि ऐसी स्त्री से आपका विवाह हो जाए तो मैथुन करते समय इसका सिर नैऋत्य दिशा की तरफ अवश्य कर दें। मैथुन से पहले केशर, कपूर, पीपल, कूठ गोरोचन को पीस करके शहद में मिला करके स्त्री के गुह्य प्रदेश में लेप कर दें। ऐसा करने से यह स्त्री सदा हो आपके गुणगान करती रहेगी।

नाग सत्व

इस स्त्री को गुड़, चावल की पिट्ठी, नारियल तथा धवा वृक्ष का गोंद अत्यधिक प्रिय होते हैं। यदि इस भाँति की स्त्री का पति बनने का सौभाग्य आपको प्राप्त हो तो उसे मैथुन करने के लिए सुरा पिलायें तथा तथा उसका हिर वायव्य दिशा की तरफ अवश्यं कर दें। कनेर वृक्ष का दूध, केतकी का पांचांच केशर तणा कपूर को शहद में मिला करके अपने गुप्त स्थान पर अवश्य लेप करलें। इस प्रयोग के लाभ स्वरूप वह स्त्री आपको सदा सहयोग करेगो। अपके वशीभूत रहेगी। □

स्त्री वशीकरण

यदि किसी स्त्री को वशीभूत करना हो उसके बायें पांव के नीचे की धूल ले लें। यह कार्य शनिवार को करें। उस धूल की पुतली बनावें और इस पुतली के सिर में उसी स्त्री के बाल लगा

दें। इसके बाद इस पुतली को नीले वस्त्र पहना दें। इस पुतली पर स्त्री के समस्त अंग बनाने अनिवार्य है। पुतली बना लेने के पश्चात् पुतली की योनि पर अपना वीर्य त्याग करें। इसके बाद इस पुतली को धूप दीप करके उस स्त्री के द्वार पर या उसके आने जाने वाले डगर में गाड़ दें। जब वह स्त्री उसे लांघेगी तब ही वह आपकी तरफ आकर्षित होगी और समय निकाल कर आपको अवश्य प्राप्त होगी। □

ओपरे का उतार

यदि किसी व्यक्ति को ओपरे की शिकायत हो तो यह भी करके देखें। कोयले के सात टुकड़े, एक अण्डा, थोड़ा सा चावल, थोड़ा सा हलुवा, बरगद की तथा पीपल की टहनी ले लें।

एक मिट्टी का सकोरा लें उसमें हलवा डाल दें। इसके ऊपर कोयला रख दें, कोयले के ऊपर कच्चा चावल डाल दें। इस बर्तन को रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर उतार लें। इसके बाद इसमें बरगद पीपल की टहनियां रख दें। इसे उठा करके किसी चौराहे पर रख दें। वह अण्डा उस सकोरे पर मार कर फोड़ दें और बिना पीछे मुड़े वापस घर आ जाएं।

दूसरा प्रयोग—

एक नारियल लें। और उसे रोगी के ऊपर सात बार घुमा करके रोगी के सामने ही फोड़ दें (फूटे हुए नारियल की गिरी को किसी चौराहे पर डाल दें।)

तीसरा प्रयोग—

एक नारियल का खोपा लें। उसमें सरसों का तेल भर, थोड़ा सा सिन्दूर डालें, काले उड़द डालें। एक लौंग रोगी के मुख में रखा दें। वह खोपा रोगी के ऊपर से इक्कीस बार घुमा

करके उतारें। उतारा करके रोगी के समस्त वस्त्र उतरवा द और उसके मुख वाला लौंग खोपे में ही थुकवा दें और स्वयं की रक्षा करते हुए किसी भी चौराहे पर रख करके सावधानी से वापस आ जाएं।

चौथा प्रयोग—

एक नींबू लेकर रोगी के ऊपर सात बार घुमा करके उतारें और रोगी के सामने रख दें। अब एक चाकू लेकर सिर से पांव तक धीरे-धीरे स्पर्श करते हुए लायें तथा नींबू तक ले जाएं। अब आप नींबू को काट दें। जब इसे काट दें तो ईशान दिशा की तरफ फेंक दें।

पाँचवाँ प्रयोग—

एक ही रस्सी से बंधे हुए दो गधे देखें। जब यह मिल जाएं तो उसकी रस्सी खोल लायें और रोगी के गले में पहना दें।

छठा प्रयोग—

एक अण्डा लें और रोगी के ऊपरसे ग्यारह बार घुमा करके उतारें। इसके बाद इस अण्डे पर काली स्याही से मकड़ी का जाल बना दें और किसी नदी में डाल दें। □

चोला (हनुमान)

किसी भी संकट की निवृत्ति के लिए हनुमान जी को चोला चढ़ायें। सिन्दूर में चमेली का तेल मिला करके लेप सा बनायें तथा किसी मंगलवार या शनिवार के दिन किसी मन्दिर में जाकर मूर्ति के पूर्ण शरीर पर वह लेप करके हनुमत बीसा पढ़ें। पूर्ण विधि सहित विस्तृत विवरण परिशिष्ट खण्ड में देखें।

इस क्रिया के फलस्वरुप कई बार कुछ ऐसी स्थितियाँ प्रस्तुत होती हैं कि आपको चौंकना नहीं चाहिए क्योंकि ऐसे

समय किसी भी रूप में कोई शक्ति उपस्थित हो जाती है। उसे दुत्कारें नहीं बल्कि उससे अपने संकटे के निवारण की प्रार्थना करें। □

रहस्यमयी प्रयोग

सिन्दूर लगी हनुमान जी की मूर्ति के माथे का सिंदूर लेकर सीता जी के पांव में लगा दें और जो चाहिए वही निवेदन करें परन्तु यह निवेदन एक ही साँस में होना चाहिए। इस प्रयोग के प्रभाव से आप अवश्य ही प्रसन्न होंगे। □

पितृ दर्शन

प्रायः लोग विश्वास नहीं करते कि पितृ भी कुछ होते हैं। जो लोग मानते हैं वही श्राद्ध करते हैं। यह श्राद्ध केवल अपने पिता तथा माता का ही करते हैं जबकि घर के सभी बड़े बूढ़े मृत्यु के बाद पितृ कहलाते हैं। व्यक्ति के उत्थान के लिए इनका सहयोग होना बहुत आवश्यक होता है। यहां पर उनके लिए एक प्रयोग बताया जा रहा है जो कि पितृ प्रथा को नकारते हैं।

रविवार का दिन हो तो एक गधा खोजें। जब यह मिल जाए तो कोई बर्तन लेकर उसके पेशाब करने का इन्तजार करें। गधा जब पेशाब करे तो सावधानी से उस पेशाब को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही बर्तन में ले लें और घर आ जायें। घर आकर इस मूत्र को गूगल की धूनि दें। जब रात्रि हो तो इस मूत्र को नेत्रों में लगा लें और वातावरण में घूमते-फिरते पितृ देख लें। चाहें तो उनसे बात करें परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह आपकी बात का उत्तर दें। □

शादी के हेतु उपाय

यदि कन्या की शादी का बार-बार प्रयास करने पर भी काम न बने तो जिस दिन उसे दिखाने के लिए ले जाएँ तो उसकी विवाहित सहेली से एक चूड़ी मांग कर पहना दें। इस कार्य में सावधानी यही करनी है कि यह चूड़ी वापिस न करें। यदि इस चूड़ी को एक दिन पहले प्राप्त कर लिया जाए तो एक और प्रयोग कर लेना चाहिए। रात्रि में एकान्त होने पर एक पटरे पर लाल वस्त्र फैला कर वह चूड़ी ऊसके उपर रख दें। इसके बाद सारे वस्त्र उतार कर इस चुड़ी की पंचोपचार विधि से पूजा करें। इस पूजन के बाद चूड़ी पहन कर सारे वस्त्र पुनः पहन लें। अगले दिन दिखाने के लिए जाते समय घर से निकल कर पुनः वापिस न आयें तथा मुड़ कर भी न देखें। □

काजल द्वारा वशीकरण

किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिए अनेकों प्रयोग किए जाते हैं, जिनमें से तन्त्र खिलाना, तन्त्र दबाना, तन्त्र लगाना या तन्त्र दिखाना होता है। प्रस्तुत प्रयोग तन्त्र दिखाना है, क्योंकि बताई गई विधि के अनुसार काजल बना करके अपने नेत्रों में लगाया जाएगा और अभिलाषित व्यक्ति को सम्बोधित करके नेत्र से नेत्र मिलाया जाएगा। इस भाँति करने से अभिलाषित व्यक्ति मेहरबान हो जाता है।

काजल द्वारा वशीकरण करने के लिए एक काली बिल्ली लीजिए और उसे दो छटांक शुद्ध देशी घी खिला दीजिए। इसके बाद इस बिल्ली को अपने सामने रखें, कहीं भी न जाने दें, चाहें तो उसे रस्सी से बांध लें। आप जानते हैं कि बिल्ली दूध की चहेती होती है, इस कारण वह घी को खाएगी नहीं उसे किसी

शीशी के द्वारा कण्ठ से नीचे घी उतार दें। चूँकि यह घी नहीं खाती अतः कुछ समय बाद बिल्ली इस घी को उगल देगी। इसी उगले हुए घी को सावधानी से संग्रह करके रख लें और बिल्ली के प्रति जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही करें। घी प्राप्त कर लेने के बाद इस प्रयोग में बिल्ली की आवश्यकता नहीं है। यदि आप बिल्ली की आँवर प्राप्त करना चाहें तो उसे पाल लें अन्यथा छोड़ सकते हैं।

रविवार की रात्रि किसी एकान्त स्थान पर बैठ करके इस घी का दीपक जलाएँ। इस दीपक में बत्ती के हेतु लाल धागा प्रयोग करें। जब दीपक बन जाए तो इसे जला दें। इस दीपक में लौ के ऊपर एक मिट्टी की प्याली उलट कर रखें जिसमें कि काजल तैयार होगा।

दीपक की बाती कुछ अधिक बाहर रखें, जिससे कि काजल उड़े। अब आप देखेंगे कि मिट्टी के प्याली के भीतर तो काजल एकत्र हो ही रहा है, इसके साथ ही कुछ काजल उड़ करके कुछ प्याली के ऊपर बैठ रहा है। इस क्रिया को दीपक के बन्द होने तक चलने दें। जब दीपक स्वतः ही बन्द हो जाएं तब प्याली के ठण्डा होने पर प्याली के ऊपर उड़ करके पड़ने वाला काजल हल्के हाथ से उतार लें। यहाँ पर स्मरण रखें कि प्याली के भीतर वाला काजल ग्राह्य नहीं है।

अब आपके पास वशीकरण करने हेतु काजल एकत्र हो गया है और जब भी आपको आवश्यकता हो तो इस काजल को नेत्रों में लगाकर अभिलाषित पुरुष या स्त्री के पास जाकर उसे सम्बोधित करें। सम्बोधन के कारण वह आपकी तरफ देखेगा, उसी क्षण उसके नेत्र आपके नेत्रों से मिलेंगे और यही कुछ क्षण उसे सदा के लिए आपका बना देंगे। □

वशीकरण का गोपनीय प्रयोग

यह प्रयोग अनादिकाल से गुप्त रहा है जिसे कि आप सब पाठकों के स्नेह के वशीभूत होकर लिख रहा हूँ। यह प्रयोग खतरनाक है, अतः खिलवाड़ न करें।

इस प्रयोग को करने से पहले किसी शुभ अवसर पर निम्नलिखित मन्त्र को सिद्ध कर लें। यह मन्त्र १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती सूची चाण्डालिनि नमः स्वाहा।"

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए कहने का अभिप्राय केवल यही है कि उपरोक्त मन्त्र आपको भलीभांति कण्ठाग्र हो जाए। यदि आप इसे सहजता से ही याद कर लेते हैं तो सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह मन्त्र सदा सर्वदा से सिद्ध मन्त्र है।

अब आप मधुमक्खी के छत्ते से मोम प्राप्त करें। यह मोम देशी मोम के नाम से पंसारी से भी प्राप्त की जा सकती है। मोम प्राप्त करके आधी रात के समय जब सभी सो गए हों तब इस मोम की एक प्रतिमा बनावें जो कि आपके द्वारा अभिलाषित व्यक्ति की हो। इस प्रतिमा में उस व्यक्ति के सम्पूर्ण अंग भलीभांति बनावें। यदि किसी स्त्री की प्रतिमा है तो उसके स्तन तथा योनि भी बनानी होगी।

अभिलाषित व्यक्ति की मूर्ति बनाते समय उपरोक्त मन्त्र का निरन्तर जाप करते रहें और जब मूर्ति बन जाए तो इसमें प्राण प्रतिष्ठा कर दें।

अभिलाषित व्यक्ति की मूर्ति बनाते समय उपरोक्त मन्त्र का निरन्तर जाप करते रहें और जब मूर्ति बन जाए तो इसमें प्राण प्रतिष्ठा कर दें।

आपने जब भी वशीकरण करना हो तब उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए, मूर्ति के हृदय को अंगारों से आँच पहुँचाएं। इस क्रिया को रात्रि दस बजे से दो बजे तक करें तो अभिलाषित व्यक्ति वशीभूत होकर शीघ्र ही प्रस्तुत हो जाता है। □

शत्रु अंधा हो

यहाँ पर प्रस्तुत किए गए समस्त प्रयोग अत्यन्त खतरनाक तथा शीघ्र प्रभावी हैं। कृपया इन्हें याद तो रखें परन्तु प्रयोग कभी न करें। मैंने केवल तन्त्र की शक्ति बताने के लिए ही इस पुस्तक में अनेकों प्रयोग बताए हैं जिससे कि आप अपने भारत की प्राचीन तथा महान विद्या पर गर्व कर सकें। आज जबकि हथियारों की होड़ चरम सीमा को पार कर रही है तब प्रत्येक भारतीय को बताना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि भारत में कुछ ऐसा भी है, जो कि हथियारों को भी व्यर्थ कर सकता है।

अब मैं शत्रु को अन्धा करने की विधि बता रहा हूँ। इस कार्य के लिए अमलतास वृक्ष की जड़ लेकर उसे एक प्रतिमा का रूप दें। यह रूप आपके शत्रु का होगा। इस प्रतिमा पर सभी अंग उभरे हुए हों और नेत्र तो विशेष हो उभारें क्योंकि यही स्थान आपके प्रयोग के लिए हैं।

जब यह प्रतिमा बन चुके तो कृष्ण पक्ष के चौदसी वाले दिन जो कपिला गाय हथियार से मारी गई हो उसका पित्त ले आएं। इस पित्त को उस मूर्ति की आंखों में अन्जन की भाँति लगाएं या दोनों नेत्रों में यह पित्त भर दें। इस क्रिया के प्रभाव से शत्रु अंधा हो जाएगा और आप जानते ही हैं कि तंत्र के प्रयोग के कारण हो रही किया किसी दवा से ठीक नहीं होती। □

वशीकरण प्रयोग

किसी भी रविवार या सोमवार को इस प्रयोग के लिए आवश्यक क्रिया करनी होगी। आप शुद्ध होकर मोहिनी देवी की पूजा करके निकलें, खुले में आकर आप आकाश की तरफ देखें। जब आप को कोई चील उड़ती हुई मिले तो तीव्रता से देखें कि उसकी परछाई कहाँ पर पड़ रही है। जैसे ही आपको उड़ती हुई चील की परछाईं दिखाई पड़े तो उस परछाईं के ऊपर की मिट्टी उठा लें और वापस आ जाएँ।

जव आपने किसीको वशीभूत करना हो तब यह मिट्टी उसके सिर के ऊपर छिड़क दें। यह क्रिया करते ही वह व्यक्ति आपके वशीकरण के प्रभाव में आ जाएगा। □

आसन स्तम्भन

आसन का अर्थ पूजा हेतु बिछाये गए आसन से लगाया जाता है और यह उचित भी है।

प्रस्तुत प्रयोग में कहीं पर बैठे हुए व्यक्ति से अभिप्राय है कि वह कहीं भी, कैसे भी बैठा हुआ है। आपके प्रयोग करने से वह जहाँ पर और जैसे भी बैठा है वैसा ही बैठा रह जायेगा, जब तक कि आप उसे बैठाए रखना चाहें। इसे आसन स्तम्भन कहते हैं।

इस प्रयोग के लिए कुत्ते तथा कुतिया के बाल लें। यह बाल तब लेंगे जव कुत्ता और कुतिया विषय भोग के बाद जुड़े रह जाएं। इसके बाद नदी के दोनों किनारे की मिट्टी उठा लाएं। संग्रह की गई मिट्टी को एकत्र करके एक गोली बना लें और अंकोल का तेल प्राप्त कर लें। अब आप आसन स्तम्भन के हेतु प्रयोग कर सकते हैं।

आपने जिसका भी आसन स्तम्भन करना हो, उसका नाम लेकर उस गोली को अंकोल के तेल में डाल दें। ऐसा करते ही वह व्यक्ति जहाँ पर है, जिस भांति है, उसी भांति रह जाएगा। जब आप तेल से गोली निकालेंगे तभी वह व्यक्ति कुछ कर पायेगा।

आसन स्तम्भन के इस प्रयोग से आप किसी को भी, कभी भी स्तम्भित कर सकते हैं। □

बिच्छू

यह एक ऐसा जीव है जिसे प्रत्येक व्यक्ति भली भांति जानता है अतः परिचय न दे करके इसके कुछ प्रयोग बता रहा है जो कि विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

बिच्छू का डंक—

जब कभी बिच्छू डंक मारे तो कुछ मक्खियाँ पकड़ कर मार दें। और डंक वाले स्थान पर बाँध दे। इससे पीड़ा शान्त हो जाएगी।

बिच्छू उच्चाटन—

जब घर में बिच्छू निकलने लगे हों या आने लगे हों और कोई उपाय न चलता हो तो एक बिच्छू पकड़ कर घर में जला दें। इसके बाद कभी भी घर में बिच्छू न आएंगे और न ही निकलेंगे।

पथरी रोग

यह एक कठिन रोग है और आपरेशन करने के बाद भी पुनः पथरी बन जाया करती है। इसके कारण बहुत दर्द होता है। यदि एक बिच्छू पकड़ कर उसकी भस्म बना कर खाई जाए तो पथरी रोग समूल नष्ट हो जाता है।

विशेष वशीकरण

प्रस्तुत प्रयोग अत्यधिक सरल तथा शीघ्र प्रभावी है। इस विशेष वशीकरण के प्रभाव से जीव तो क्या, वृक्ष के फूल फलादि भी बुलाने से आ जाते।

किसी शुभ अवसर पर एक लोहे का छल्ला बनवा लें जो कि आपकी अंगुली में आ सके। इसके बाद उस समय का इन्त-जार करें जब पुष्य नक्षत्र हो, कृष्ण पक्ष हो तथा चौदस हो। जब आपको यह संयोग प्राप्त हो, तब आपको एक ऐसी कुतिया ढूंढ़नी होगी जो कि कामुक होकर किसी कुत्ते की खोज में हो या कुत्तों ने कुत्ती को गर्मा दिया हो। जब आपको ऐसी कुतिया मिल जाए तब उस छल्ले को कुतिया की योनि में डाल दें और उसका ध्यान रखें। जब वह छल्ला उसकी योनि से निकल जाए तो उसे उठा लें। इस छल्ले के द्वारा आप किसी को भी, कभी भी बुला सकते हैं। वह अवश्य आएगा। इस विषय में स्मरण यही रखना है कि जिसे बुलाया जा रहा है, वह आपसे अधिक दूर न हो। □

चोरी पकड़ें

प्रायः चोरी होती ही रहती है और चोरी करने वाला व्यक्ति भी आस पास का ही होता है। यह भी देखने में आया है कि प्रायः लोग जानते हैं कि अमुक ने चोरी की है परन्तु प्रमाण के अभाव में कुछ भी नहीं कर पाते। प्रस्तुत प्रयोग इसी समस्या के समाधान हेतु है।

एक मेंढक पकड़ कर काटें और उसका गोश्त निकाल कर आटे में मिला करके आटा गूंथ लें। इस आटे की रोटी पका लें और जिस व्यक्ति के ऊपर सन्देह हो कि इसने चोरी की है या

करेवाई है तो वह रोटी उसे खिला दें। इस रोटी को खाते ही वह चोरी का सारा रहस्य स्वयं ही बता देगा। □

उच्चाटन प्रयोग

शिवजी के कण्ठ में लिपटे सर्प की जाति का सर्प और उसके बच्चे लेकर मार दें। इसके वाद इन्हें किसी सर्प के ही बिल में गाड़ दें। एक महीने तक दबा रहने के पश्चात् निकालें और सावधानी से रख लें।

जिस व्यक्ति को उच्चाटन करना अभिप्रेत हो तो इसमें से कुछ शत्रु के उस रास्ते या द्वार में गाड़ दें; जहाँ से उक्त व्यक्ति का आवागमन अधिक रहता हो। वाकी बची हुई सामग्री को अग्नि की दिशा की तरफ यह कहते हुए फेंक दें, "इस स्थान पर रहने वाले समस्त आत्माओं जाओ और तुम सभी लोग यह बलि ग्रहण करो। यह बलि केवल तीन दिन के लिए ही है।"

इसके साथ ही यह मन्त्र भी पढ़ें—

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते ड़ामेश्वर मूर्त्तये 'अमुक' उच्चाटयोच्चाटय स्वाहा।

इस प्रयोग के प्रभाव से एक ही हफ्ते में उपरोक्त व्यक्ति अन्यत्र चला जाता है। □

पाताल तुम्बी

यह एक बनस्पति है, जिसे कि नागतुम्बी भी कहते हैं। यह प्रायः मैदानों में तथा खेतों में स्वतः ही उग जाती है। इसके ऊपर बहुत बारीक कांटे होते हैं, जिसका कि रंग भी पीला होता है। यह कांटे बिच्छू के डंक के समान ही होते हैं। यह प्रायः

सांप के बिलों के पास अधिक मिलती है। यह लता जाति की है तथा उसके ऊपर तुम्बी के समान फल लगते हैं।

यह एक चमत्कारिक दिव्य औषधि है। □

विद्वेषण

अब आपको कुछ लोगों का परस्पर झगड़ा करा देने का प्रयोग बता रहा हूं।

एक ऐसी स्त्री का चुनाव करें जो कि विधवा हो तथा दुर्भाग्य-शाली भी हो। जब ऐसी स्त्री मिल जाए तो उसे कुछ पैसों का लोभ देकर यह कार्य करवा लें।

जब उसे मासिक स्राव प्रारम्भ हो तब सरसों के दाने लेकर वह अपनी योनि में रख ले और जब तक मासिक होता रहे, यह दाने भग में ही रहें। प्राय: मासिक तीन से सात दिन तक रहा करता है।

मासिक समाप्त होते ही उसके नहाने के पहले ही वह सरसों के दाने प्राप्त कर लें। इसके बाद जहां झगड़ा कराने की इच्छा हो, वहां पर यह दाने फेंक दें और प्रभाव को स्वयं देखें। □

पूर्व जन्म देखें

प्रस्तुत प्रयोग करने से पूर्व जन्म दिखाई देता है। जबकि इसके दिखाई देने से कोई लाभ विशेष नहीं होता। यदि कोई अपना पूर्व जन्म देखना चाहे तो अंकोल वृक्ष के बीजों का तेल निकलवा कर उसका दीपक जलाए और कांसे के पात्र में काजल उतारे। इस काजल को गाय के शुद्ध घी में मथ करके नेत्रों में लगा करके शीशे में देखे। ऐसा करने से शीशे में आपको अपना पूर्व जन्म दिखाई पड़ेगा। □

धन का लाभ

यदि आप अकस्मात् धन लाभ करना चाहते हैं तो बराबर के सात पत्थर ले लें और साथ ही सात छोटे कंकर ले लें। इन्हें हरे वस्त्र में बांध करके कमर में धारण करें और महालक्ष्मीमंत्र का जप करें।

इसके बाद भटकटैया बूटी को उखाड़ करके, आधी बूटी का रस निकाल पांव के तलवे में लगा लें और शेष बूटी मुट्ठो में दबा कर बन्द कर लें। अब आप धन प्राप्ति हेतु साधन करें। निश्चय ही आपको धन लाभ होगा। □

मारण प्रयोग

एक गोह को पकड़ कर लाएं और लाल तथा सफेद सरसों के साथ, जहाँ पर ऊंट बाँधते हैं; वहाँ पर गढ़ा खोद करके दबा दें। इसे पैंतालिस दिन तक दबा रहने दें।

अब आपने जिसे मारना हो, उससे मिलकर दिखावटी प्रेम व्यवहार करें। पैंतालिस दिन पूरे हो जाने पर उससे गढ़ा खुदवाएं। गढ़ा खोदने पर जैसे ही गोह निकलेगी या दिखाई देगी वैसे ही वह व्यक्ति जो कि खुदाई कर रहा था, मर जाएगा। □

पुतली द्वारा मारण

(१) किसी अशुभ योग के अवसर पर मोम की एक प्रतिमा बनाएं। यह कार्य करते समय मन्त्र पढ़ते रहें : जब प्रतिमा बन चुके तो उसमें उस व्यक्ति की प्राण प्रतिष्ठा करें जिसे कि मारना है। अब मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पिन (जो कि कागज पर लगाई जाती है) उस प्रतिमा को गाड़ते रहें। यह

क्रिया तब तक करते रहें जब तक कि पुतली पर पिन गाड़ने की जगह बची रहे। आप जब-जब पिन गाड़ेंगे आप का शत्रु पीड़ा से तड़पेगा। और पूरी पुतली पिनों से आच्छादित होने पर कुछ ही दिनों में आपका शत्रु मर जाएगा।

(२) नीम के वृक्ष की जड़ लेकर उसके ऊपर एक प्रतिमा खुदवायें और फिर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा कर दें। अब मारण मंत्र से अभिमन्त्रित करके लोहे की कील ऊपर से ठोकें। यह कील जहाँ-जहाँ पर ठुकेगी वहीं-वहीं अंग संज्ञाहीन होता जायेगा और जब हृदय में कील गाड़ी जाएगी तो उक्त व्यक्ति का प्राणांत हो जाएगा। □

विष्ठा द्वारा मारण

मंगलवार के दिन भरणी नक्षत्र का संयोग हो तो जो व्यक्ति मरे उसकी राख ले आएं। अब शत्रु की विष्ठा (पाखाना) प्राप्त करें और उसमें वह राख मिला दे। अब दो मिट्टी के बर्तन लेकर उनमें यह सामग्री भर दें और बर्तनों को परस्पर जोड़कर उसी मुर्दे के बालों से लपेट कर बांध दें। यह सब करने के बाद इस बर्तन को किसी उजड़े या वीरान कमरे में रख दें। वहीं पर बैठ कर निम्नलिखित मंत्र की एक माला फेरें।

मन्त्र—"ॐ नमो डामरेश्वराय 'अमुक' मारय मारय स्वाहा।"

इसके बाद आप अपने घर जा सकते हैं। आपके द्वारा किये गए प्रयोग फलस्वरूप जैसे-जैसे बर्तन में विष्ठा सूखेगी, ठीक वैसे ही शत्रु की देह निस्तेज होती जाएगी और जब सारी विष्ठा सूख जावेगी तो शत्रु भी सूखकर समाप्त हो जायेगा। ऐसे प्रयोग के कारण मरे हुए व्यक्ति का यदि शीघ्र दाह संस्कार न किया जाये

तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं क्योंकि विष्ठा के सूखते ही उसमें कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। □

चित्र रोदन

एक दीवार के ऊपर किसी पुतली का चित्र बनाएँ और इस पुतली को यदि रुलाना हो तो स्त्री के जरायु की धूप इस पुतली को दें। ऐसा करने से वह बनाई गई पुतली रोने लगेगी।

अब यदि आप उसका रोदन बन्द करना चाहें तो उसे गूगल की धूप कर दें।

इस बनाई गई पुतली को यदि गायब करना हो तो इसे बिल्ली तथा स्त्री की जरायु की धूप करें। ऐसी धूप करते ही पुतली का यह चित्र अदृश्य हो जाएगा। जब आप इसी स्थान पर गूगल का धूप करेंगे तो पुनः यह चित्र दर्शित होगा। □

मोहन प्रयोग

यदि कबूतर के हृदय को तावीज में भर करके कण्ठ में धारण कर लिया जाए तो हर व्यक्ति प्रेम करने लगता है। □

देवी की कृपा

रात्रि में केशों को स्वतन्त्र करके, सम्पूर्ण वस्त्र का त्याग कर दें और पहने गए गंडे तावीज और माला आदि भी उतार कर रख दें और पाठ करें। इस पाठ को करने से देवी प्रसन्न होकर पुत्र मान कर कृपा करती है। इसके पाठ करने से सभी विघ्न इस भांति नष्ट हो जाते हैं जसे कि आग में पतंगे जलकर नष्ट हो जाते हैं।

यह पाठ इसी पुस्तक के परिशिष्ट खंड में दिया गया है। □

स्त्री पुरुष के हेतु

प्राय: पुरुषों का वीर्य क्षीण हो जाया करता है और शीघ्र पतन अर्थात् जल्दी ही वीर्य का स्खलन हो जाना नामक रोग हो जाते हैं। कभी पुरुषेन्द्रिय पतली भी होती है। इसी भाँति स्त्री के भग ढीली हो जाने से स्त्री पुरुष को सम्भोग में आनन्द नहीं प्राप्त हो पाता।

यहां पर आप दोनों के सुख हेतु एक प्रयोग बता रहा हूँ। इसे प्रयोग में लायें और प्रभु को धन्यवाद करें।

एक कीकर वृक्ष होता है जिसे की बबूल भी कहते हैं। आप इससे भली-भाँति परिचित हैं अतः इसका परिचय न बता कर प्रयोग बता रहा हूँ। इस वृक्ष की चिकनी बक्कल तोड़ लाएँ। कुछ नीबू लेकर उसका रस निकाल लें। इस रस में बबूल की बक्कल को डुबो दें। एक दिन डूबा रहने के बाद इसी में एक शुद्ध तथा स्वच्छ वस्त्र डाल दें। जब यह वस्त्र उस रस से भींग जाए तो निकाल लें। इस वस्त्र का रंग धुआं सा होगा।

(१) इस गीले वस्त्र को एक गिलास दूध में डाल कर घो डालें और उसी में इसे निचोड़ दें। अब आप यह दूध पी जाएँ, इस प्रयोग को कुछ दिन करने से वीर्य गाढ़ा हो जायेगा। संभोग में शीघ्र स्खलन होना रुक जाएगा और देह भी पुष्ट हो जाएगी।

(२) इस गीले वस्त्र को यदि स्त्री अपने भग में रखेगी तो कुछ ही दिन में भग संकुचित हो जाएगी और सम्भोग में परम आनन्द की प्राप्ति होने लगेगी।

(३) इसी गीले वस्त्र को यदि पुरुष अपने इन्द्री पर लपेटा करे तो कुछ ही दिनों में उसकी इन्द्री सीधी तथा मोटी हो जाएगी।

अदृश्य कैसे हों

प्राय: प्रारम्भ से ही मनुष्य अदृश्य होने की कल्पना करता रहा है। इस विषय में अनेकों प्रयोग किए जाते हैं, जिनमें से कुछ बता चुका हूँ। अब एक और प्रयोग बता रहा हूँ, जिसके करने से व्यक्ति अदृश्य हो सकता है।

पुष्य नक्षत्र आने से तीन रात्रि पहले से उपवास का शुभारम्भ करें। यह उपवास रात्रि में चलता रहेगा। जब पुष्य नक्षत्र हो तब लोहे की एक सलाई और एक सुरमेदानी बनाये। अब किसी ऐसे जानवर की खोपड़ी लें जो रात्रिचर हो। इसकी खोपड़ी में अंजन भर करके किसी मरी हुई स्त्री की योनि में प्रविष्ट करके उस मरी हुई स्त्री को जला दें। जब वह जल चुके तब उसकी योनि से वह खोपड़ी निकालकर अंजन निकालें और लोहे की सुरमेदानी में भर लें। यह सब क्रियायें पुष्पकाल में ही प्रारम्भ करके समाप्त करनी है।

अब आप जब भी अदृश्य होना चाहें या किसी को अदृश्य करना चाहें तब इस सुरमेदानी से लोहे की सलाई के द्वारा अंजन लेकर नेत्र में लगाएँ। इसके प्रभाव से व्यक्ति शीघ्र ही अदृश्य हो जाता है।

अग्निदेव का दर्शन

यदि आप अग्नि देव के दर्शन करना चाहें तो पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से यह प्रयोग करें।

भटकटैया नामक बूटी, पलाश (ढाक) की लकड़ी और अरंड की लकड़ी से हवन हेतु प्रबन्ध करें। इन सब लकड़ियों में अंकोल के बीजों का तेल लगा दें। अब पारे तथा गंधक को खरल में घोंट करके कजली बना लें। इस कजली को गरम घी में मिला कर उन लकड़ियों पर हवन करें। ऐसा करने से आग के जलते ही अग्निदेव प्रकट हो जाते हैं।

निवेदन

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र–तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि–लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु–पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अतः पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषय वस्तु की जानकारी नहीं होती। अतः तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है। उसके लिए प्रकाश व मुद्रक की मजबूरी है। अतः इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

प्रकाशक–लेखक–मुद्रक

शकुन अपशकुन विचार

लेखक : श्री यशपाल जी

शकुन विषय पर पहली बार एक प्रमाणिक पुस्तक प्रस्तुत की गई है। इसमें कहे गए शकुन तथा अपशकुन अपने पूर्ण प्रभाव रखते हैं। अतः इन्हें अपने जीवन में उतार कर जीवन में किए जाने वाले सभी कामों को सफल बनाएँ। अत्यन्त हर्ष की बात तो यह है कि अशुभता निवारण उपाय भी प्रस्तुत किए गए हैं। योगीराज यशपाल जी की सशक्त लेखनी तथा अनुभवों का प्रस्तुतिकरण है।

नाक से लिए जाने वाले श्वास पर आधारित नई पुस्तक—

स्वरोदय विज्ञान

लेखक : श्री यशपाल जी

यह पुस्तक यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र से बहुत दूर है। इस पर भी तन्त्र जैसे चमत्कार इसमें भरे हुए हैं। इसमें जीव के श्वासों का वैज्ञानीकरण किया गया है। विद्वान लेखक यशपाल जी का कहना है कि यदि कोई चाहे तो अपनी नासिकाओं से चलने वाले साँस के द्वारा मनचाहा लाभ उठा सकता है।

प्रत्येक जीव के द्वारा ली जाने वाली साँसों की दुनिया में भाग्य को जैसा चाहें वैसा बनाने के लिए लेखक की कड़ी मेहनत तथा अनुभव का परिणाम है। आप पुस्तक प्रेमी हों या न हों परन्तु इसे अवश्य पढ़ें। लेखक का वचन है कि कहे गए तरीकों के अनुसार करने से पाठक अवश्यमेव लाभ उठाएगा। जो व्यक्ति मन्त्रों के झमेले में नहीं पड़ना चाहते वह इस पुस्तक को मँगाकर लाभ उठायें।

रणधीर बुक सेल्स, हरिद्वार

मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

2.हर घर में संग्रह करने योग्य ज्ञान ग्रन्थ
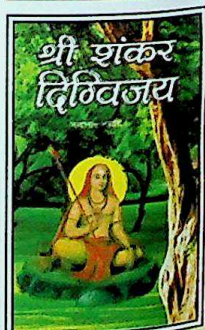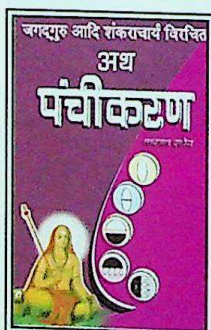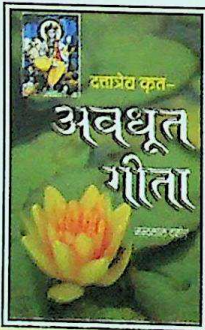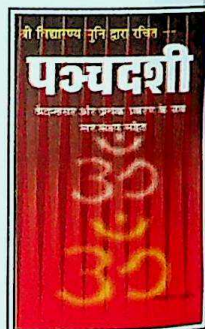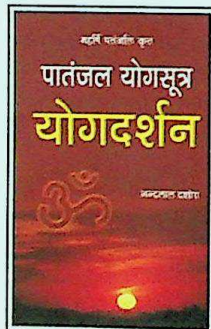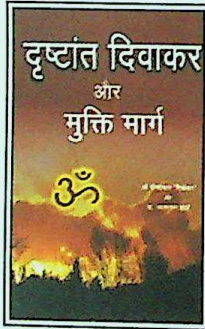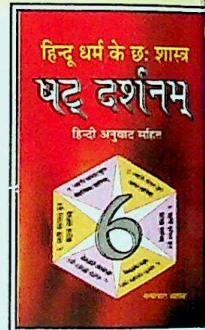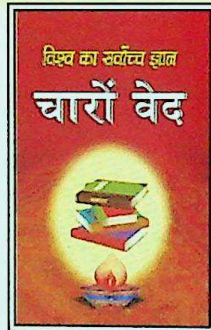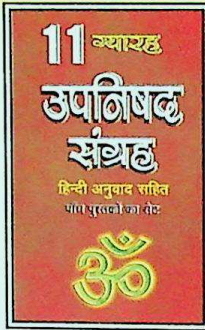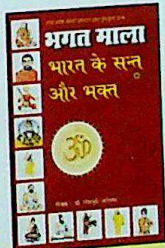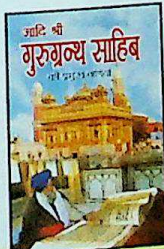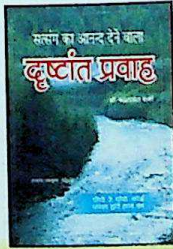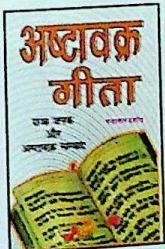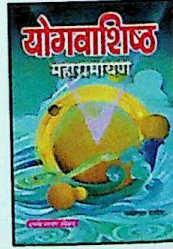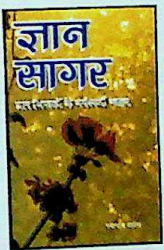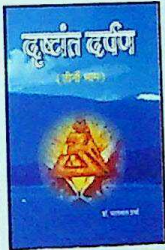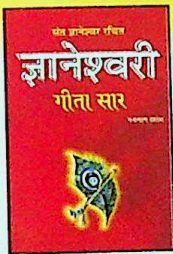
3.आत्मिक सुख देने वाली अनमोल पुस्तकें

5.प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ

6. महत्वपूर्ण, उपयोगी, संग्रहणीय पुस्तकें
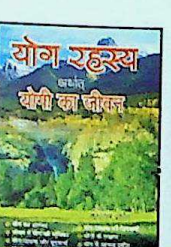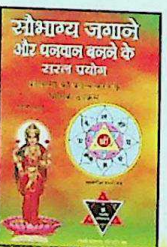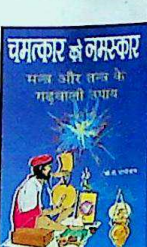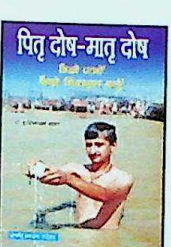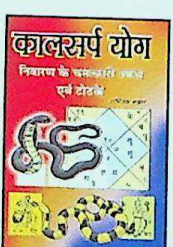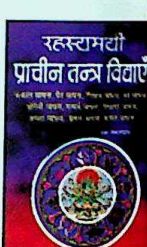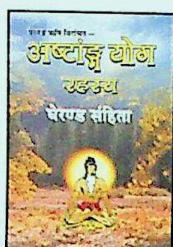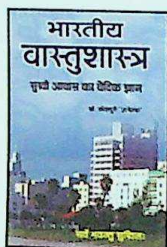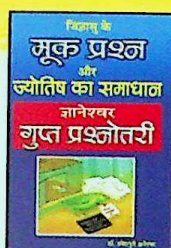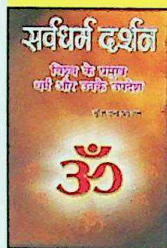
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

८.विभिन्न विषयों की अन्य पुस्तकें
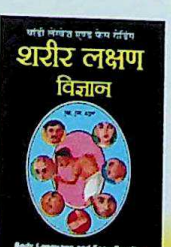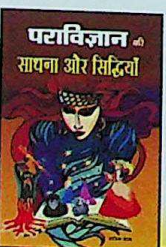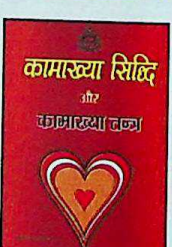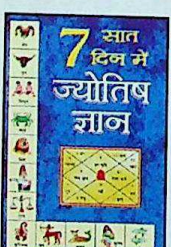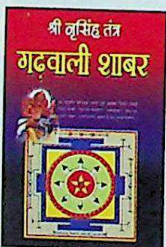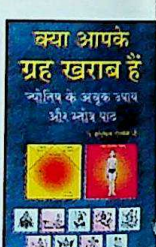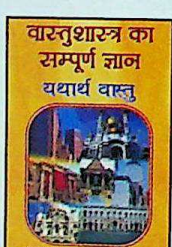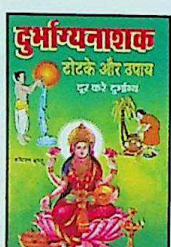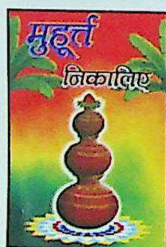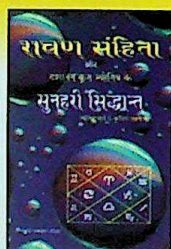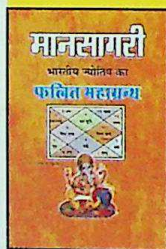
वेद, पुराण, ग्रन्थ, पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड की पुस्तकों का मूल्य सूची पत्र मँगवाने के लिये सम्पर्क करें–

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार
PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

Designed by:- Madhur Graphics, Delhi